संवाद संग्रह



[बालकबालिकाओंके खेलने और स्त्रीपुरुषों
एवं बालकबालिकाओंके हृदयोंमें
आत्माभिमानकी भावना जागृत
करनेवाला एक उत्तम
संग्रह]

लेखक
कृष्णलाल वर्मा

प्रकाशक
ग्रंथभंडार, लेडीहार्डिंज रोड,
माटुंगा-बंबई

सन १९२८

मूल्य एक रुपया

प्रकाशक—
कृष्णलालजी वर्मा,
ग्रंथभंडार, लेडीहार्डिंज
रोड, माटुंगा-बंबई

मुद्रक—
भास्कर महादेव सिद्धये, मुंबईवैभव
प्रेस, सर्व्हेंट्स् ऑफ इंडिया सोसायटीज्
होम, सँढर्स्टरोड, गिरगाव-मुंबई

समर्पण

—o—

जिनने इन संवादोंको सफलतापूर्वक खेलकर दर्शकोंको हँसाया,
रुलाया, आनन्दमें विभोर किया और उनके हृदयोंमें
स्वाभिमानकी भावना जागृतकर वीरताकी
बिजली दौड़ाई उनके और भविष्यमें
भी ऐसा ही करेंगे उनके—
उन सभी बालक
बालिकाओंके—
करकमलोंमें
यह सादर
आग्रह
और प्रेम के साथ समर्पित है।

उपहार पृष्ठ

ओरसे

भेट

विषय सूची

निवेदन।

विद्यार्थियोंके खेलने लायक संवाद हिन्दीमें बहुतही कम हैं। कन्याओंके खेलने लायक उत्तम संवादोंका तो—जहाँ तक मैं जानता हूँ—एक तरहसे अभाव ही है।

इस अभावकी पूर्तिके लिए ही मैंने ये संवाद, लिखे हैं। सात संवाद इनमें संग्रहीत हैं। प्राय सभी संवाद बम्बई म्यु० स्कूलोंके विद्यार्थियोंने खेल हैं। और उन्हें अच्छी सफलता मिली है।

'आनको रक्खा जान गँवाकर' इस पद्यांशकी भावनाको दृष्टिमें रखकर ये संवाद तैयार किये गये हैं। मेरा खयाल है कि, बालकोंके कोमल हृदयोंमें इन भावनाओंको अंकित करना बहुत जरूरी है। स्वात्माभिमानके भावोंका जितना अधिक प्रचार देशमें होगा और बालकबालिकाएँ जितनी अधिकतासे इन भावोंको व्यवहारमें लायेंगे उतनाही अधिक देशका कल्याण होगा।

इन संवादोंको सफलता पूर्वक खेलनेकी तैयारी करनेकी व्यवस्था करदेनेवाले म्युनिसिपल गुजराती स्कूलोंके सुपेरिण्टेण्डेण्ट साहिब श्रीयुत हिम्मतलाल गणेशजी अजारिया एम ए एल एल बी, व लेडी सुपेरिण्टेण्डेण्ट साहिबा श्रीमती शीरीनबाई डालास एम ए और म्यु० मराठी स्कू० सुपेरिण्टेण्डेण्ट साहिब श्रीयुत कृष्णराव बाबूराव पाडगाँवकर बी ए तथा लेडी सुपेरिण्टेण्डेण्ट साहिबा श्रीमती शान्ताबाई काशालकर एम ए का मैं हृदयसे आभार मानता हूँ। अगर इनकी कृपा न होती तो इन संवादोंकी तैयारी असंभवसी ही थी। साथ ही नीचे लिखे सज्जनों व सन्नारियोंका उपकार माने विना भी नहीं रह सकता कि जिन्होंने परिश्रम करके संवादों और गायनोंको तैयार कराया।

(१) लेमिंग्टनरोड लडकोंकी शालाके हैड मास्टर श्रीयुत सीताराम भीकाजी पेंढुरकर, एवं घाणेकर (२) ठाकुरद्वार लडकोंकी शालाके हैडमास्टर श्रीयुत शङ्कर केशव आठवले (३) गिरगाँव मराठी लडकोंकी शालाके हैडमास्टर श्रीयुत केशव नारायण जोशी (४) भूलेश्वर गुजराती ए वी स्कूलके हैडमास्टर श्रीयुत मणिभाई प्रागजी देसाई (५) बुद्धिवर्द्धक गुजराती लडकोंकी शालाके हैडमास्टर

म्युनिसिपल मराठी और गुजराती स्कूलोंके सुपरिण्टेण्डेण्ट और लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट.



दाहिनी तरफसे–१ श्रीयुत हिम्मतलाल गणेशजी अंजारिया २ श्रीमती शीरीनबाई डालास ३ सौभाग्यवती शान्ताबाई वशालकर. ४ श्रीयुत कृष्णराव बापुराव पाडगांवकर.

श्रीयुत चतुलाल अर्जुनलाल पड्या (६) वालीबाई गुजराती कन्याशालाकी हैडमिस्ट्रेस सौभाग्यवती काशीबाई (७) कालबादेवी कन्याशालाकी हैडमिस्ट्रेस ग० स्व० श्रीमती गुलाबबाई (८) लेमिंग्टनरोड मराठी कन्याशालाकी हैडमिस्ट्रेस ग० स्व० श्रीमती शाताबाई (९) ठाकुरद्वार रोड मराठी कन्याशालाकी हैडमिस्ट्रेस सौभाग्यवती रुक्मणीबाई कावतकर एव गायन शिक्षक श्रीयुत चोघुले, गोखले, मुडले और पागनीस।

ऊपर लिखे हुए गायन शिक्षकोंके अलावा कुछ गायनोंके नोटेशन श्रीयुत एम ए दीवान और श्रीयुत कृष्णाजी महादेव गोखलेने भी किये हैं, इसलिए इनका भी उपकार मानता हूँ।

इनके अलावा उन सभी असिस्टेंट शिक्षकोंका भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सहायता दी है। उन बालकबालिकाओंको भी मैं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने ये सवाद और गायन तैयार करके हमारे परिश्रमको सफल बनाया।

जिसने इन सवादों और गायनोंको लिखने या सग्रह करनेमें सहायता दी, जिसने मुझे उत्साहित किया जिसकी प्रेरणा और आग्रहसे मेरी कलम चली, जिसके प्रेम और आश्वासनसे मेरा, विघ्नोंके कारण निराश बना हुआ, हृदय आशान्वित हुआ और जिसके मद हास्यने कठोर परिश्रम और विघ्नोंके कारण मुझाये हुए मनको प्रमुदित कर दिया, इतनाही नहीं जिसने सवादों और गायनोंकी साफ नकलें कीं और गायनोंको, स्वरलिपिके अनुसार बजाकर देख लिया, उस मेरे जीवनकी शक्ति अपनी अर्धाङ्गनाका उपकार मैं किन शब्दोंमें मानूँ?

इनके अलावा जिनके गायन मैंने लिये हैं उन गायन लेखकोंका और नाथूरामजी प्रेमीका—जिनके द्वारा प्रकाशित नाटकोंका मैंने उपयोग किया है—तथा अन्य उन सभी सज्जन व सन्नारियोंका मैं उपकार मानता हूँ जिनसे मुझे थोडीसी भी सहायता मिली है।

मारवाडी सम्मेलनका उपकार मानना तो मेरा सबसे पहला कर्तव्य है, क्योंकि आजतक हिन्दीके जितने जल्से—जिनमे इस सग्रहमें आये हुए प्राय सभी सवादोंका उपयोग हुआ–हुए हैं वे सभी सम्मेलनके उद्योग और द्रव्यसे हुए हैं और मैं आशा करता हू कि, सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार करनेके लिए इस तरहके उत्सव सदा जारी रक्खेगा।

मारवाडी सम्मेलनकी हिन्दी स्पर्द्धापरीक्षामें उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको इनाम देनेके लिए, जो उत्सव, मारवाडी सम्मेलन द्वारा सन १९२५, २६ और २७ में किये गये थे, उनमें ऊपर लिखे हुए स्कूलोंने इन सवादोंका प्रयोग किया था। इनके अलावा नीचे लिखें अवसरोंपर भी इनका उपयोग हुआ है।

१—गुजराती रिलीफ फडमें मदद करनेके लिए भागवाडी थियेटरमें न १, ४, ८, [११ का

२—अग्रसेन जयतीपर नरनारायणके मदिरमें न ८ का

३—म्युनिसिपल गुजराती टीचर्स कॉन्फरेंसमें न ८ का

४—भाँगवाडी थियेटरमें कानजी करमसी स्कूल और चिंचपोकली स्थानकवासी जैन स्कूलके वार्षिकोत्सवोपर न १४ का

५—माहीम गुजराती कन्याशालाके वार्षिकोत्सवपर न १२, न ८ का

६—कालकादेवी कन्याशालाके वार्षिकोत्सवोंपर न २, ३, ५, ९, १०, ११ का

७—महिला होस्टल नासिकके बिल्डिंग फडके 'फेन्सी फेअरमें' और ग र्व गुलाब बेनके मानके मेलावडेमें न २७ का

८—श्राविकाश्रमके वार्षिकोत्सवपर न १३ का

नोटेशनोंमें भूलोंकी बहुत सभावना है। क्योंकि मैं गायनका उस्ताद नहीं और दूसरोंसे लिखे हुए नोटेशनोंमें प्रूफ सुधारते भूलें रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिए क्षमाका प्रार्थी हूँ।

मुझे पूरी आशा है कि, उत्सव करनेवाले सज्जन इस सग्रहका उपयोग कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे। वे जिस सवादका उपयोग करें उसकी मुझे सूचना देनेकी अगर कृपा करेंगे तो उपकृत होऊँगा। आशा है, सज्जन ऐसा जरूर करेंगे।

निवेदक

कृष्णलाल वर्मा

संवाद-संग्रह

कृष्णकुमारी

प्रथम दृश्य

स्थान-रस्ता,-समय-सवेर

(दो सखियोंका प्रवेश)

१—(दूसरीको सिरसे पैरतक देखकर) वाह ! आज सज धजके किधर चली ? तुम्हें इस तरहसे सजी हुई तो कभी न देखी थी। हम दासी ! हमें इतना साज-सिंगार नहीं सोहता। क्या तू राजकन्या है ?

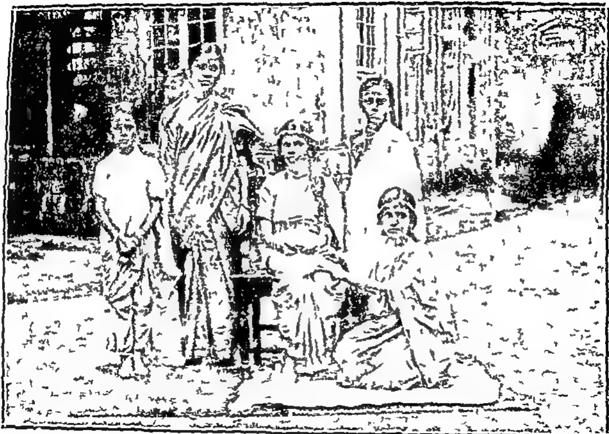
२—हुश ! क्यों नहीं सोहता ? हिंदुआसूरज, मेवाडके राणा भीमसिंहजीकी कन्या कृष्णकुमारीके पास उनके वैभवको सुशोभित कर सके ऐसी दासियाँ न चाहिए ?

१—हाँ, हाँ, चाहिए, जरूर चाहिए मगर—

२—मगर भी नहीं और तगर भी नहीं। मैं राजकन्याको छाजे, शोभे ऐसी उनकी मानीती दासी हूँ। इतना ही नहीं मैं उनकी सखी भी हूँ। समझी ?

१—वाह ! तू ही सखी है और मैं नहीं ?

२—(सिर हिलाती है) ऊँ ! हुं ! सखी तो मैं हूँ और तू



'कृष्णाकुमारीका' खेल करनेवाली लडकियाँ (पृ० १)

संवाद-संग्रह

कृष्णकुमारी

प्रथम दृश्य

स्थान—रस्ता,—समय—सवेरा

(दो सखियोंका प्रवेश)

१—(दूसरीको सिरसे पैरतक देखकर) वाह ! आज सज धजके किधर चली ? तुम्हें इस तरहसे सजी हुई तो कभी न देखी थी। हम दासी ! हमें इतना साज-सिंगार नहीं सोहता। क्या तू राजकन्या है ?

२—हुश ! क्यों नहीं सोहता ? हिंदुआसूरज, मेवाडके राणा भीमसिंहजीकी कन्या कृष्णकुमारीके पास उनके वैभवको सुशोभित कर सके ऐसी दासियाँ न चाहिए ?

१—हाँ, हाँ, चाहिए, जरूर चाहिए मगर—

२—मगर भी नहीं और तगर भी नहीं। मैं राजकन्याको छाजे, शोभे ऐसी उनकी मानीती दासी हूँ। इतना ही नहीं मैं उनकी सखी भी हूँ। समझी ?

१—वाह ! तू ही सखी है और मैं नहीं ?

२—(सिर हिलाती है) ऊँ ! हुं ! सखी तो मैं हूँ और तू

१—मैं कौन हूँ, बता देखूँ ?

२—बताऊँ ? बताऊँ ?

१—बता, बता ।

२—दा सी हा ! हा ! हा !

१—देख मुझे यह दिल्लगी अच्छी नहीं लगती ।

२—तो क्या अच्छा लगता है ? लड्डू, पुरी, हलुवा ?

१—हुश ! मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता ! क्या फिजूल बात है ! हट ! मुझसे न बोल ।

२—तुझे क्या अच्छा लगता है सो मैं जानती हूँ । तेरे मनकी बिलकुल छिपी बात बता सकती हूँ ! बताऊँ ? बताऊँ ?

१—बता, बता देखूँ ? आई है बडी जोषण कहीं की !

२—अगर बता दी तो क्या दोगी ?

१—बैठ बैठ बताई !

२—तुझे पसंद अच्छा क्या पसंद है ? (एक तरफ मुँह करके मीन-मेख, वृप, आदि गिनती है) एलो ! साफ दिख गया। तुझे पसंद है मेरा सा लू ! हूँ कि नहीं पक्की जोषण ? वाहरे मैं ! (आपही अपनी पीठ ठोकती है) । कैसी मनकीसी कही ? तबीअत खुश हो गई !

१—क्या खिल खिल दाँत निकालती है ? आज मेरी हँसी करती है; मगर कल तेरे लिए रोनेका वक्त आयगा !

२—आने दे ! आने दे ! (हँसकर मुँह फेर लेती है थोडी देर दोनों चुप रहती है फिर)

१—क्योरी ! यह सालू तो पुराना दिखता है (पास जाकर देखती है) यह तो राजकुमारीका सालू है । हाथ मारा न ?

२—वाह! हाथ क्यों मारती? रानी साहिबाने मुझे बख्शा है।

१—मैं समझी नहीं।

२—इसमें समझनेकी कौनसी बात है? राजकन्या कृष्ण-कुमारी और जयपुरके राजा जगत्सिंहका ब्याह होना नक्की हुआ है। उसीकी यह बख्शिश है। समझी?

१—क्या कहा? जयपुरके राजा और कृष्णकुमारीका ब्याह होना नक्की हुआ है?

२—हाँ, दर्बारने फर्माया था।

(नेपथ्यसे ढिंढोरा सुनाई देता है) सुनो! सुनो! राज-कुमारीका ब्याह आंबेरमें होगा यह बात सुनकर जोधपुरका राजा चिढ गया है और उसने सेंधियाको साथ लेकर मेवाड पर चढ़ाई कर दी है। गाँवोंको लूट रहा है और जला रहा है। इस-लिए सभी सावधान रहो! सावधान!

२—(घबराकर) लूट रहा है! हाय राम! अब मैं क्या करूँ—(अपना जेवर निकाल निकाल कर रूमालमें जमा करती है फिर) बहिन मुझे घर पहुँचा दे।

१—(जरा हँसकर) वाहरे कृष्णकुमारीकी सखी!

२—(हाथ जोड्कर रुदनके स्वरमें) तेरे हाथ जोडती हूँ तेरे पाओं पड़ती हूँ, हा हा खाती हूँ। मुझे घर पहुँचा दे।

१—पाओं पड! मेरे पैरोंकी धूल सिरपर चढा!

२—(पैरों पडती है और धूल सिर पर चढाती है) अब तो राजी? मुझे जल्दी घर पहुँचा दे।

(दोनों जाती है।)

दूसरा दृश्य

स्थान—उदयपुरके अन्त पुरका एक कमरा।

समय—दुपहर।

(कृष्णकुमारीकी काकी हाथमें छुरी लिए, कमरेमें फिरती हुई अपने आप)

काकी—हा! यह निठुर काम भी मेरे ही भाग्यमे लिखा था। जिस स्वर्ण-प्रतिमाको मैंने इन हाथोंमें पाला, पोसा, बड़ा किया, लाड लड़ाये उसीको इन्हीं हाथोंमें नष्ट करना पड़ेगा! हा विधिविडंवना! जिन ऑखोने उसके खेल कूदको देखा वे ही ऑखें उसके तडपनेको देखेगी; जिन्होने उसकी हॅसीका फव्वारा छूटते देखा, वे ही आज उसकी छातीसे रक्तका फव्वारा छूटते देखेंगी? क्या देख सकेंगी? स्थिर रह सकेगी? आह! कितना भयानक दृश्य होगा? ना, ना, ये ऑखें उस दृश्यको न देख सकेगी, यह हाथ उसकी छातीमें छुरी न भोंक सकेगा; यह हृदय स्थिर न रह सकेगा। उह! कितनी यन्त्रणा है? (एक दीवारके सहारे हाथ पर सिर रख, खडी हुई कुछ सोचती है। कुछ क्षणके बाद वहॉसे हटकर) यह काम करना ही होगा। भगवान! हृदयमे बल दो; कर्त्तव्यपालनकी शक्ति दो।

(प्रार्थना करती है।)

[राग मिश्र जोगिया]

व्याकुल मैं होगई कन्हैया ॥ ध्रु० ॥
कैसे करूँ मैं, सुध न रही सब तन मनकी अब, दीना होगई ॥व्या०॥
लाज रखो हरि भीर परी है, करुणा क्यों छुप गई ॥ व्या० ॥

(प्रार्थना करके खडी होती है । कृष्णकुमारी आती है और नमस्कार कर)

कृष्ण०—क्या काम है काकीजी ?

(काकीजी वीणाविनन्दित स्वर और अप्सराको लज्जित करनेवाला रूप देखती है । वह घबरा जाती है और उसका हृदय पुन दु खाक्रान्त हो जाता है । छुरी हाथसे गिर पडती है ।)

कृष्ण०—(छुरीको पडती देख चौककर पीछे हट जाती है और पूछती है) काकीजी ! घबराये क्यो ? क्या बात है ? यह छुरी कैसी है ?

काकीजी—(आक्रन्दन पूर्ण स्वरमें) बेटी ! यह बात न पूछो ! मै राक्षसी हूँ ! यह छुरी तुम्हारे ही कलेजेमें भोंकनेके लिए लाई थी ।

कृष्ण०—(विस्मयसे दोनों आँखे फाड, काकीजीके मुखपर स्थिर-कर बोली) मेरे ही कलेजेमें भोंकनेके लिए ! काकीजी ! मैने ऐसा क्या अपराध किया है ?

काकीजी—तू मेवाडकी काल हुई है । तेरे लिए सारा मेवाड़ नष्ट हो रहा है । तुझे लेनेके लिए आंबेरके राजा आये

है और सेंधियाको साथ लेकर जोधपुरके राजा भी आये हैं। दोनों मेवाड़को लूट रहे हैं। मेवाड़ इस समय दुर्बल है। वह कुछ नहीं कर सकता। महाराजको किसीने सुझा दिया है कि अगर तु दुनियासे उठ जायगी तो मेवाड़ बच जायगा।

कृष्ण०—(कुछ देर सोच, फिर मुस्कराकर) ब . स ! इसीके लिए आप दुखी हैं ? मैं एक स्त्री मात्र ! मेरे जानेसे यदि मेवाडकी रक्षा होती हैं तो काकीजी ! उठाइए छुरी और कीजिए मेरे कलेजेके पार।

काकीजी—(और दो कदम पीछे हटकर) ना बेटी ! ना ! मेवाड़ जाय ! राज जाय ! सब कुछ नष्ट हो जाय ! मुझसे यह कार्य न होगा।

कृष्णा—अच्छी बात है ! अगर आप यह काम नहीं कर सकती है तो मैं खुद करूँगी। अपने हाथों यह छुरी अपने कलेजेके पार करूँगी। मेवाडकी कन्या क्या मेवाडकी भलाईके समय पीछे हटेगी ? छिः ऐसा भी हो सकता है ?

(कृष्णकुमारी छुरी उठाकर अपने कलेजेमें मारनेको तैयार होती है। काकीजी दौड़कर उसके हाथसे छुरी छीन लेती है और कहती है)

काकीजी—नहीं बेटी ! नहीं ! मेरे सामने नहीं ! मेरी छुरीसे भी नहीं ! ठहरो ! मैं राणाजीके पास कहलाती हूँ। वे जैसा कहेंगे वैसा किया जायगा। (पट परिवर्तन)

तीसरा दृश्य

स्थान—अन्त पुरका दीवानखाना

समय—चार बजे

[राणा भीमसिंहजीके पास ये समाचार आते हैं। मत्री वगैरा मिलकर कृष्णकुमारीको जहर देना स्थिर करते है। यह बात रनवासमें पहुँचती है। रानी वगैरा सभी दुखी है। कृष्णकुमारीका प्रवेश। रानी दु खसे रोने लग रही है। दूसरी स्त्रियाँ भी आँसू बहाती हुई कृष्णाको घेरकर खड़ी हो जाती हैं।]

कृष्णकुमारी—छिः! छिः! तुम यह क्या कर रही हो? मेवाड़की भलाईके लिए उसकी एक कन्या मर रही है। यह देखकर तुम्हें रोना क्यों आता है? तुम्हें रोते देखकर मुझे लज्जा आ रही है। मेवाड़की पुत्रियॉ हँसते हँसते अग्निमें कूदी हैं। हाथोंमें तलवार नचाती हुई उल्लासके साथ युद्धमें गई हैं। तुम क्या उन्हीं राजपूतानियोंकी पुत्रियॉ नहीं हो? बाहिर-मेवाड़में—एक भी राजपूत न रहा, मगर घरमें—मेवाड़में क्या एक राजपूतानी भी न मिलेगी! मेवाड क्या एकदम ही निःक्षत्री हो गया है? छिः! रोते तुम्हें लाज नहीं आती? हँसते हुए मुझे आज्ञा दो। मेवाडकी कन्या—मेवाडकी भलाईके लिए हँसती हुई, चारो तरफ हँसी देखती हुई, अपना बलिदान दे।

सब (ऑसू पौछकर) सच है, कृष्णा! राजपूतानी देशरक्षाके लिए प्राण देती है। यह तो आनंदकी बात है। रोना भूल है।

कृष्णा—(माताके पास जाती है ।) उठो माँ ! सामने मै—तुम्हारी कृष्णा—खड़ी हूँ । एक वार मेरी तरफ देखो। मेरे जानेका समय हो गया है । फिर मुझे न देख सकोगी ।

(रानी और भी जोरसे रोती है और कृष्णाको अपनी छातीसे लगा लेती है । कृष्णा धीरे धीरे अपनी मातासे संतोष देती हुई कहती है ।

कृष्णा—माँ तुम वीरकन्या हो । तुम्हें क्या इस तरह रोना सोहता है ? हम राजपूत स्त्रियाँ । इस तरह मरनेके लिए ही तो जन्मती हैं । युद्धमें मरेंगी, जलकर मरेंगी, जहर पीकर मरेंगी, छुरीसे मरेंगी–किसी तरह मरेंहींगी । सुखके साथ बुढापेतक जीना किस राजपूतानीके भाग्यमे लिखा है ? आज यदि दुष्ट शत्रु हमारी लाज लूटने आते तो क्या हम जौहर न करतीं ? या यदि जगदम्बाकी आज्ञा होती तो रणसाजसे सजकर युद्धमें न जातीं ? आज यदि मै विवाहिता होती और मेरे स्वामी स्वर्गमें जाते तो क्या मैं चितारोहण न करती ? क्या उस समय हँसते मुख मुझे आशीर्वाद न देकर तुम रोने बैठती ? माँ ! मेवाड़ नष्ट हो रहा है । एक कन्याके प्राण देनेसे वह बच सकता है । प्राण देना हमारे लिए खेल है । देशके लिए प्राण देनेका खेल करनेहीमें राजपूतानीके जीवनकी सफलता है । उठो माँ ! मुझे शृंगार कराओ ! आशीर्वाद दो और हँसते हुए विदा करो । मै मेवाड़की रक्षाके लिए प्राण देकर देवताओंके देशमें जाऊँ ।

रानी—(आँसू पोंछकर) मैं क्या जानकर रोती हूँ बेटी ! मेवाड़ नष्ट हो रहा है; परन्तु एक भी वीरने

लिए तलवार न पकड़ी। एक भी वीरने इस आगको बुझानेके लिए अपना रक्त नहीं दिया, और तुझ फूलको उस आगमें बलि दे रहे हैं। आज अगर मैं देखती कि मेवाड़के वीर मेवाडकी रक्षाके लिए मत्त हो रहे हैं; पागलोंकी तरह लड़ाईकी आगमें कूदनेको दौड़े जा रहे हैं। 'हर हर महादेव' के जयनादसे आकाशको गुँजाते हुए शत्रुओंको मार रहे हैं, और खुद भी मर रहे हैं तो क्या मेरा जी इतना छोटा होता? (कुछ ठहर कर) अगर देखती कि वीरोंकी लाशोंका ढेर लग रहा है; राना, उनका बेटा और उनके भाई शत्रुओंकी असंख्य सेनामें कूद कर उसका ध्वंस करते हुए विलीन हो रहे है तो आज क्या मैं रोती? तुझे वीर वेषसे सजाकर युद्धमें अपने साथ ले जाती और रणभूमिमें मरते देख उल्लाससे कहती कि मेरी कोख उज्ज्वल हो गई। अगर जौहर करनेका अवसर आता तो कसूमल वस्त्र धारण करा जगदंबाके गीत गाती हुई तुझे लेकर धूधू कर जलती हुई अग्निमें हँसती हँसती कूद पडती। (एक निःश्वास छोडकर) मगर बेटी! आज ऐसा नहीं देखती। सभी कायर होकर घरमें बैठे है और अपने अधम जीवनकी रक्षा करनेके लिए मेरे इस फूलको नाश कर रहे है। कैसे धीरज धरूँ बेटी? कैसे धीरज धरूँ? (रो पडती है। कृष्णाके भी आँसू आजाते हैं)

कृष्णा—(आँसू पोंछकर) ऐसी बातें कहकर मुझे दुःखी न करो माँ! मेवाड़ गिर गया है। मालूम नहीं अब यह उठेगा या नहीं? यदि मेवाड़में आज वे पुरुष होते तो क्या

मेवाड़की ऐसी दशा होती ? जाने दो माँ ! इन बातोंको सोचनेसे लाभ ही क्या है ? मेवाड़ निपूता हो गया है तो क्या उसकी पुत्रियाँ क्या उसकी रक्षाका उपाय न करेंगी ? करेंगी, जरूर करेंगी ! हँसते हँसते विदा दो माता ! शायद मेरा बलिदान इस मरती हुई जातिमें जीवनका संचार करे। मेवाड़ी कायरता छोड़ फिर क्षत्रिय बनें और शानके साथ जान देकर आबरूकी रक्षा करें।

रानी—(कृष्णाके सिरपर हाथ फेरकर) तब जा बेटी ! माँ जगदंबा तेरा कल्याण करें ! हँसती हँसती देशके लिए प्राण देकर स्वर्गको जा ! तेरे बलिदानसे मेवाड़ीयोंकी कायरताका मैल धुल जाय और वे फिर अपने असली रूपमे—वीरताके रूपमे खड़े हों।

(कृष्णाको जहरका प्याला दिया जाता है। कृष्णा प्याला हाथमें लेकर, जहर पीनेके पहले ईश्वरसे प्रार्थना करती है—

[राग—मालकौंस]

कृष्णा माधो राम निरंजन
इतनी विनती मोरी, सुन लीजे तू ही
तू ही करेगो तेरो काम ॥

कृष्णा प्याला पीजाती है। उसे उल्टी हो जाती है। दूसरी बार फिर तेज जहर दिया जाता है। कृष्णा उसे पीती है। और तड़पकर प्राण दे देती है)

[नोट—यदि कृष्णाकुमारीका काम करनेवाली लड़की होशियार हो तोही उसे दर्शकोंके सामने जहरका प्याला देना चाहिये अन्यथा प्रार्थनाके बाद खेल समाप्त कर देना चाहिए।]

महारानी मीनलदेवीका न्याय



[यह रानी गुजरातके महाराज कर्णकी धर्मपत्नी और महाराज जयसिंहजीकी माता थीं। महाराज कर्णका देहावसान हुआ तब महाराज जयसिंहजीकी आयु तीन ही बरसकी थी। इस लिए महारानी स्वयं राजका कारबार देखती थीं। उसी समयमें उन्होंने पाटनमें एक तालाब बनवाया था, उस मौके पर जो घटना हुई थी उसीको लेकर यह संवाद लिखा गया है। तालाब और बुढ़ियाकी झोंपड़ी वहाँ अब तक मौजूद है।]

स्थान—महल

समय—तीन पहर दिन

(महारानी मीनलदेवी दर्बार लगाकर बैठी है। सेविकाएँ और दूसरी दर्बारी स्त्रियाँ यथास्थान बैठी या खड़ी हैं।)

मीनलदेवी—लीलावती! मैंने तालाब बँधानेका हुक्म दिया था उसके विषयमें क्या कार्रवाई हुई?

लीलावती—देवी! आपकी आज्ञाके अनुसार सब व्यवस्था हो गई है। नकशा तैयार है। देखिए (नकशा बताती है) इस नकशेमें यह जो झोंपडी दिखती है वह एक गरीब बाईकी है। झोंपडी देनेके लिए कामदारोंने उसे बहुत समझाया; परन्तु नहीं होती।

मञ्जुला—हमने भी उस बाईको बहुत समझाया। धन देना चाहा, उसने इन्कार किया। बड़ा पक्का मकान लेकर झोंपड़ी छोड़नेके लिए कहा उसने मुँह फेर लिया।

दमयती—महारानी साहिबा! अब तो आज्ञा दीजिए कि कामदार जबर्दस्ती उस बाईसे झोंपड़ी खाली करा लें। अगर प्रजाके लोग सरकारी और लोकहितके कामोंमें बाधा डालेंगे और उनकी बातोंका खयाल किया जायगा, तो कैसे राज चलेगा और कैसे प्रजाहितके काम होंगे?

महारानी—(कुछ सोचकर) अच्छा उस बाईको मेरे पास बुलाओ।

(सेविका बाहर जाकर हरकारेको कहती है। वह गरीब स्त्रीको बुलाता है। गरीब आकर यथोचित नमस्कार कर एक ओर खड़ी हो जाती है।)

महारानी—(गरीबसे) बाई मेरे कामदार कहते हैं कि तुम राजके काममें विघ्न डालती हो। क्या यह सच है?

गरीब—(हाथ जोड कर) महारानी साहिबा! मेरे जैसी एक गरीब स्त्री राजके कामोंमे क्या विघ्न डाल सकती है?

महारानी—यह ठीक है; परन्तु जब तुम ज्यादा मूल्य लेकर भी जगह नहीं देती; अच्छी जगह लेकर भी छोडती, इसका अर्थ क्या है? यही न कि तुम नेक काममें विघ्न डाल रही हो। क्या जबरदस्ती की जाय?

गरीब—महारानीजी ! आप जैसी न्यायी और प्रजाहित करनेवाली देवी कभी जोर-जुल्म न करेगी । यह मुझे विश्वास है । मैंने यह भी स्थिर कर रक्खा है कि जान दूँगी, मगर झोंपड़ी न दूँगी ।

महारानी—बाई ! तुमने तो मुझे बड़ी चिन्तामें डाल दी ! बताओ तुम ऐसी हठ क्यों कर रही हो ? तुम वृद्ध हो चली हो तुम्हारे पीछे कोई नहीं है । इस लिए आज नहीं तो कुछ दिन बाद यह जगह सरकारी ही होगी । ऐसी दशामें क्या यह उचित नहीं है, कि तुम खुद ही झोंपड़ी दे दो । जिससे यह तालाब एकसा सुंदर बन जाय ।

गरीब—महारानीजी ! आप कहती हैं सो सब ठीक है; परन्तु क्या मैं आपसे कुछ पूछूँ ?

महारानी—हाँ पूछो ।

गरीब—आपके एक पुत्र रत्न है । आपको किसी बातकी कमी नहीं है । तो भी आप यह तालाब क्यों बनवाती हैं ?

महारानी—इसलिए कि, प्रजाका हित हो और मेरा नाम हमेशा कायम रहे ।

गरीब—यदि आप मुझे अभय वचन दें तो मैं अपने मनकी बात कहूँ ।

महारानी—मीनलदेवी प्रजाको हमेशा ही निर्भय रखती है । तुम जो कुछ सत्य बात हो सो कहो ।

गरीब—आपकी प्रजाहितैषिताका मुझे विश्वास है। इसीलिए मैंने यह साहस किया है। सुनिए, जब आपने तालाब बँधवा कर नाम कायम करना स्थिर किया तभी मैंने स्थिर किया कि कोई ऐसा काम करूँ जिससे मेरा नाम भी अमर हो। नाम भलाईसे भी अमर होता है और बुराईसे भी। भलाई मैं नहीं कर सकती; परन्तु तालाबको शोभाहीन करनेकी बुराई कर सकती हूँ। इससे आपके साथ ही मेरा नाम भी अमर रहेगा।

महारानी—(कुछ देर सोचकर) लीलावती! कामदारको कहो कि वे इस नकशेके माफिक तालाब बनवा ले। दुनियामें राजा और रैयत सबको स्वतंत्रता होनी ही चाहिए। इस बाईने दृढ़तापूर्वक अपना इरादा बताकर मुझे धर्म सुझाया है। तालाबके साथही झोंपड़ीके कारण मेरी न्यायप्रियता अमर होगी।

गरीब—धन्य है! गुजरातकी महारानीको धन्य है! जिन्होंने प्रजाको अपनी सन्तानके समान समझा है, किसीके मनको दुखानेका काम कभी नहीं किया है और न्याय करते समय सदा ईश्वर और धर्मको सामने रक्खा है। ऐसी महारानीजीको हजारों धन्यवाद है। परमात्मा इनके राज्यको बढावे और इनकी आयु बडी करे। बोलो महारानी श्रीमीनलदेवीकी जय!

[नोट–फिर अगर रास (गरबा) करानेकी इच्छा हो तो रास कराना चाहिये। अन्यथा दर्बार समाप्त करा देना चाहिए।]

आत्मरक्षा

स्थान—एक किलेमें माताका मंदिर।

समय—प्रातःकाल।

(कुछ स्त्रियाँ माताकी पूजा करके प्रार्थना कर रही हैं। एक स्त्री बोलती है और दूसरी चुपचाप हाथ जोड़े खड़ी हैं।)

१ स्त्री—हे जगन्माता! जगतकी रक्षा करो! हे दुष्टदलनी! दुष्टोंका संहारकर देशको बचाओ। हे महिषासुर मर्दिनी! अधर्म असुरका मर्दन करो! हे शुंभनिशुंभ हननी! अत्याचारका हनन करो!

माता! हजारों माताएँ पुत्रहीन हुई! हजारों पिताओंका सहारा गया, हजारों बालक अनाथ बने, हजारों सतियोंके सिरताज मिट्टीमें मिल गये! असहायोंके दीन रुदनसे आकाशमंडल गूँज उठा! देशमें रक्तकी नदियां बह चलीं, तो भी जननी! क्या तुम्हारी आँख न खुली? क्या अब भी तुम्हारा क्रोध शान्त न हुआ? क्या अब भी तुम हमारी रक्षा न करोगी? क्या सतियोंका सत लुटेगा। (शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित राजकुमारी और उसकी सखियोंका प्रवेश।)

राजकुमारी—चुप! चुप! ऐसी बात न बोलो! सतियोंका सत दावानल है, जो उसमें पड़ेगा जलके राख हो जायगा। सतियोंका शील तेजोमय सूर्य है, जो उसकी तरफ देखेगा अंधा बन जायगा।

१ सखी—बेशक! किसकी ताकत है कि सतियोंका सत लूटनेको हाथ बढ़ावे! जिस महाबली रावणने कैलाशको उठा लिया था और इन्द्रादि देवोंसे सेवा कराई थी वही रावण–जब उसने सतीका सत लूटनेको हाथ बढाया–मिट्टीमें मिल गया।

२ स्त्री—यह पुरानोंकी बात है। अब न वे सतियाँ हैं न उनके रक्षक पुरुष। आज स्त्रियाँ निर्माल्य है, और पुरुष कायर। दोनोंका मौतके मुँहमे पड़े हुए शरीरपर मोह है। दोनोंको क्षणिक सुख प्यारा है। इनके लिए वे मान, इज्जत, सत, धर्म सब कुछ दे सकते है।

२ सखी—बहिन! पाँचों उँगलियाँ समान नहीं होतीं। आज भी ऐसी स्त्रियाँ है जो शीलरक्षाके लिए हँसते हँसते प्राण दे सकती हैं। आज भी ऐसे पुरुष हैं जो जान देकर मानकी रक्षा करते है।

३ सखी—बहिन! जान पड़ता है तुमने घृणित स्त्रीपुरुषोंको देखकर ऐसा विचार कर लिया है। जिनके आदर्श सीता और राम हों, जिनके आदर्श शैव्या और हरिश्चंद्र हों, जिनके आदर्श पद्मिनी और भीमसिंह हो वे स्त्रीपुरुष सत और धर्मके बदले क्या कभी सुख और प्राण खरीद सकते हैं?

सब—असंभव! सर्वथा असंभव!

(दूरसे एक स्त्रीकी आवाज आती है) भागो! भागो! प्राण लेकर भागो! दुश्मनोंकी फौज, टिड्डीदलकी तरह, सारे शहरमे फैल गई है। मुट्ठीभर वीर किलेकी रक्षा कर रहे हैं! किला

टूटनेहीवाला है ! [इस आवाजको सुनकर मन्दिरमेंसे सभी बाहर रस्तेपर आजाती हैं। और बोलनेवाली स्त्रीको भागते देखकर कुछ नागरिक स्त्रियाँ भी भागने लगती है। राजकुमारी अपनी सखियों सहित रस्ता रोककर खडी हो जाती है।]

राजकुमारी—मत भागो ! भागनेसे प्राण न बचेंगे। वे तो जावेंहीगे साथ ही शील भी न बचेगा। अतः आओ हम वीरोंको किलेकी रक्षा करनेमें मदद दें।

१ ना०—हम अबला क्या कर सकती है ? लाखो वीरोंके सामने हम किस खेतकी मूली हैं ?

२ स०—छिः ! किसने कहा, हम अबला है ? वीरोंकी माता और बहिनें क्या कभी अबला हो सकती हैं ?

१ स०—बहिनो ! घबराती क्यों हो ? वह देखो माँ दुर्गा त्रिशूल और खड्ग लिए हमारी रक्षाके लिए तैयार खडी है।

२ ना०—बेशक ! शीलके बलसे बलवान, माता अम्बाके आशीर्वादसे अभय हम लाखों ही नहीं करोडों शत्रुओंका नाश कर सकती हैं।

१ ना०—चलो ! तब लो तीर कमान हाथोंमें, चढ जाओ किलेकी दीवारोंपर, करो शत्रुओंपर बोछार, शत्रुदल ध्वस हो और वह समझे कि जय अधर्मकी नहीं धर्मकी होती है।

२ स०—और शत्रु यह भी जान ले कि, अपना धर्म, अपना शील, अपनी टेक, अपनी आबरू और अपनी स्वाधीनताके

लिए पुरुष ही नहीं स्त्रियॉ भी तलवार पकड सकती हैं और शत्रुओंकी अकल ठिकाने ला सकती है।

राजकु०—तो करो प्रस्थान [तलवार खींच लेती है और दौडती हुई] बोलो सिंहवाहिनीकी जय! बोलो असुरसंहारिणीकी जय! [दूसरी सखियाँ भी कमानमें तीर चढाकर राजकुमारीके साथ चलती हैं। नागरिक स्त्रियॉ भी उनके पीछे पीछे जाती है।]





[illegible] लड़कियाँ (पृ० १६)



सेठानी और बाढ़-पीडित गृहस्थ स्त्री।

प्रथम दृश्य

स्थान—सेठानीका बँगला

समय—दुपहर

[सेठानी अपने दीवानखानेमें कोच पर लेटी हुई एक उपन्यास पढ रही है। बाहर कपाउडके दर्वाजेपर दो स्त्रियाँ बैठी बातें कर रही हैं। एक स्त्री और छ सात बरसकी बालिकाका प्रवेश।]

आगत स्त्री—बहिन ! सेठानीजी हैं ?

एक—मतलब ?

आ०—सेठानी माँके दर्शन करने हैं।

एक—सीधी क्यो नही बोलती कि कुछ मागना है।

दूसरी—(पहलीको) बतला दे न विचारीको (स्त्रीको) सेठानीजी उस दीवानखानेमें हैं। चली जा। बाहर खडी रहकर पुकारना। अंदर मत जाना।

[स्त्री सिर नीचा किये, चुपचाप, लडकीका हाथ पकडे जाती है। दर्वाजेके बाहर खडी रहती है। मगर सेठानी उस तरफ नहीं देखती। तब स्त्री पुकारती है।]

स्त्री—सेठानी माँ ! (सेठानी सुना अनसुना करती है। कुछ ठहर

कर वह और जोरसे पुकारती है) सेठानी माँ ! (सेठानी फिर नहीं देखती, इसलिए स्त्री ओर जोरसे पुकारती है) ओ सेठानी माँ !

सेठानी—(जरा टेढी निगाहसे देखकर) क्या है ?

[सेठानीको प्रश्न करते देखकर स्त्री अदर घुसती है, और सिर नीचा किये खडी रहती है ।]

सेठानी—बोलती क्यों नही ? क्या मतलब है ?

स्त्री—(दु खके स्वरमें) इस बाढमें हमारा सब कुछ नाश हो गया !

सेठानी—(बेपरवाहीसे) मै क्या करूँ ? भोग तेरे कर्मका !

स्त्री—(एक निश्वास डालकर) सच है–भोग मेरे कर्मका ! (कुछ ठहरकर) भाग्यवती माँ ! इस छोकरीको कुछ खिलाओ ! तीन रोजसे इसने कुछ नहीं खाया है ।

सेठानी—'तुम लोगोंके घरोंपर बंबईने खानेपीनेको भेजा है' फिर तुम यहाँ भीख माँगने क्यो आई हो ?

स्त्री—माँ उससे गरीब और हल्की कौमके लोग फायदा उठा रहे है ।

सेठानी—ओहो ! तुम तो धन्ना सेठकी बेटी हो ! इसी लिए भीख माँगने आई हो ?

स्त्री—सेठानीजी ! मध्यम वर्गके लोग न कुछ माँगने जा सकते है और न कुछ लेही सकते है । भूखसे भी ज्यादा उन्हें आबरू प्यारी है ।

सेठानी—तो फिर वे मरें ।

स्त्री—अनेक भले घरके मौतकी राह देख रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं कि, भगवन् जैसे आपने हमारे घरबार नष्ट किये हैं वैसे ही हमें भी नष्ट कर दो। मगर मैं इस लडकीका तडपना न देख सकी, वहाँ शर्मसे कुछ ले भी न सकी इसी लिए यहाँ आई हूँ। माँ दयाकर लडकीको कुछ खिलाओ और मुझे हो सके तो महनत मजूरीका काम दिलाओ।

सेठानी—हमारे अन्नक्षेत्रमें चली जा।

स्त्री—मै वहाँ भिखारियोंमें न जा सकूँगी।

सेठानी—(गुस्सेसे) न जा सकेगी तो कूएमें जा। निकल यहाँसे।

स्त्री—(घुटने टेककर) सेठानीजी दया करो।

सेठानी—(खडी हो जाती है) निकल यहाँसे। चम्पा! ओ चंपा!

बालिका—सेठानीजी! मेरी माँको कुछ दो। इसने पाँच दिनसे कुछ नहीं खाया है। (चंपाका प्रवेश)

सेठानी—तू मर गई थी या जिंदा थी। यह अंदर कैसे चली आई? निकाल इसको। [चम्पा स्त्रीका हाथ पकडने आगे बढती है, बालिका बीचमें आकर]

बालिका—खबरदार! माँको हाथ न लगाना। हम आप ही चली जाती हैं। (माँसे) उठो माँ, चलो! तुम तो कहा करती थी कि, अपमानसे मरना अच्छा है। आज कैसे अपमान सहती हो?

स्त्री (उठकर) सच कहा बेटी ! अपमानसे मरना अच्छा है। चलो। [दोनों चली जाती है।]

सेठानी—(चंपासे) खबरदार किसीको आने दिया तो ! उपन्यास पढ़नेमें कैसा मजा आरहा था। अभागिनीने आकर सब मजा बिगाड़ दिया। [क्रोधसे कोच धकेलकर चली जाती है।]

दृश्य दूसरा

स्थान—शहरके बाहर एक रस्ता

समय—दुपहर

[स्त्री और बच्ची चले जा रहे है]

बच्ची—माँ, अब नहीं चला जाता, पैर दुखते है। सिर फिर रहा है।

स्त्री—चल बेटी ! उस कूएके पास झाडके नीचे कुछ आराम करेगी।

[कूए पर पहुँचती है। दोनों बैठती हैं। लड़की सो जाती है।]

स्त्री—भगवान् क्या तुम हो ? अगर हो तो कहाँ हो ? आओ ! जिस फूलको तुमने विकसित किया उसकी रक्षा करो ! (बच्चीके मुँह पर हाथ फेरती है) मेरा फूल तीन दिनसे भूखा है। मुझे पाँच दिनसे कुछ न मिला। तुम्हें कितना पुकारा; मगर तुम न आये। तुम नहीं हो, अगर होते तो जरूर आते। (थोड़ी

देर गालपर हाथ रखकर सोचती है) क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? धू धू करके भूखकी आग जल रही है। उसे कैसे बुझाऊँ ? इस बालिकाके दुःखकी ज्वाला कैसे सहूँ ? हा ! नहीं सही जाती ! नहीं सही जाती ! नहीं सही जाती ! (चुप रहती है, गालपर हाथ रख सोचती है फिर एकदम खड़ी हो जाती है।)

हाँ, मौत इसका इलाज है। इसीसे शान्ति मिलेगी। (कुछ सोचती है और अपने मनसे पूछती है) आत्महत्या पाप है ? वह पाप क्या इस ज्वालासे भी बढ़कर है ? नहीं ! कभी नहीं ! अपमान सहकर जीनेसे मौत लाख दर्जे अच्छी है। क्या आत्महत्यासे नरक मिलेगा ? मिले। इस ज्वालासे नरककी ज्वाला भयंकर न होगी। अपनी कुसुमके समान बालिकाको भूखसे तडपते देखनेकी ज्वालासे नरक-की ज्वाला हलकी ही होगी। [कूए पर जाती है] कूआ कितना गहरा है ! कैसा शान्त है ! फाँद पड़ूँ ? फाँद पड़ूँ ? फाँद ही पड़ूँ ! प्रभो ! अगर तू सच मुच ही दीनबंधु है तो मेरी बच्चीकी रक्षा करना ! (कूदना चाहती है) क्या बच्ची पुकार रही है ? मेरे साथ चलनेको कहती है। [लड़कीके पास जाती है, मगर लड़की वैसे ही शान्तिसे सोई हुई है।] तो क्या भ्रम हुआ ? मन मौतसे डरता है। [फिर कूए पर जाती है] कौन पुकार रहा है ? ओह ! यह तो माकी आवाज है। स्वर्गमें बुला रही है। आई माँ ! आई ! (कूदना चाहती है) क्या कहा ? कुसुमको भी लेती आऊँ ? हाँ सच तो है। इस निर्दय दुनियामें

मेरी बच्ची किसके भरोसे रहेगी ? जब वह मॉ मॉ कहकर पुकारेगी ? तब उसे कौन छातीसे लगायगी [बच्चीके पास जाती है। उसे उठाती है।]

बालिका—(ऑखें मलती हुई) मॉ, भूख बड़े जोरकी लग रही है।

स्त्री—तेरी नानी पुकार रही है कुसुम !

बालिका—वे कहॉ हैं ?

स्त्री—स्वर्गमें ! हमें भी वहीं बुला रही है।

बा०—तुम स्वर्गका रस्ता जानती हो मॉ ?

स्त्री०—हॉ, हॉ, पासहीमें तो है।

[दोनों कूएके पास जाती है]

बा०—मॉ, रस्ता किधर है ?

स्त्री०—इसी कूएमें होकर।

बालिका—(आश्चर्यसे) कूएमें होकर ? नहीं मॉ डूब जायँगी।

स्त्री—अपमानसे क्या डूबना बुरा है बेटी ?

बालिका—डर लगता है मॉ,

स्त्री—मैं साथ हूँ। फिर तुझे क्या डर है कुसुम !

बालिका—तब जल्दी चलो। नानीने मेरे लिए मिठाई मॅगवा रक्खी होगी न ?

स्त्री—जरूर

[दोनों कूएमें कूदती है। दूरसे कुछ लड़कियॉ उन्हें देखती हैं। वे दौडकर कूए पर जाती है। अपनी साडियोंके सहारे एक लडकीको

अंदर उतारती हैं। वह दोनोंको निकाल लाती है। पेटमेंसे पानी निकालनेका उपचार किया जाता है। स्त्री होशमें आती है। पूछती है।]

स्त्री—मैं कहाँ हूँ? मेरी कुसुम कहाँ है?

एक—कुछ चिन्ता नहीं है बहिन। भगवानने तुम्हारी रक्षा की है। तुम्हारी कुसुम यह रही (कुसुमको उसकी गोदमें देती है। वह कुसुमको छातीसे लगा लेती है। कुसुम अपनी माँके गलेसे लिपट जाती है।)

दूसरी लड़की—बताओ बहिन तुम कूएमें क्यों गिरी थीं?

स्त्री—क्यों पूछती हो बहिन कि हम कूएमें क्यों गिरी थीं? जिनके घर बार नष्ट हो जायँ; जिनकी कुलीनता पानीमें मिल जाय; जो अनेकोंको खिलाकर खाती थीं उनको भीख माँगनेपर भी कुछ न मिले, दानी कहलानेवाली सेठानियाँ जिनका तिरस्कार करें वे दुनियामें जीकर क्या करें?

ती० ल०—उठो बहिन हमारे आश्रममें चलो। वहाँ तुम्हें किसी तरहका कष्ट न होगा।

स्त्री—(आकाशकी तरफ देख, हाथ जोड़) दयामय तू है, तेरी माया अपार है। (सब प्रार्थना करती है)

प्रार्थना

तू है करुणानिधान॥
तेरी महिमा महान, मुनिगण तव करत ध्यान।
भक्तोंका प्राण, ज्ञान॥ तू०॥
दीननको त्राण-दान,-करता है तव विधान।
पावत सुख सब जहान, ॥ तू०॥

पड़ोसिनोंकी बैठक (१)



स्थान—एक मकान

समय—दुपहर

[पाँच सात स्त्रियाँ बातें कर रही हैं ।]

१—बहिन सुनी तुमने रमणियोंके अपमानकी बात ?

२—हाँ सुनी और जी मसोस कर रह गई ।

३—पुरुष प्राण लेकर भाग गये और स्त्रियोंका धर्मधन लुट गया ।

४—छिः ! उन वायलोंका नाम न लो ! किसने कहा कि वे पुरुष हैं ?

१—विधिने ।

२—शरीर धारण करनेहीसे कोई पुरुष नहीं हो जाता ।

३—पुरुषमें पौरुष चाहिए, मर्दमें मर्दानगीकी जरूरत है ।

४—जिस समय बालोंमें माँग निकाले, ठुमक ठुमक कर चलते, स्त्रियोंकी तरह मधुर स्वर बना कर बोलनेकी कोशिश करते मैं किसी पुरुषको देखती हूँ, मेरे ..
जाती है ।

१—विचारे चाहते हैं कि ।

२—पुरुष बनाकर विधाताने जो भूल की। उसको वे बायलापन करके सुधारना चाहते है।

३—(एक निःश्वास छोड कर) एक समय था जब भारतके पुरुषोंमें पौरुष था।

४—रामचन्द्रजीने सीताका अपमान करनेवाले राक्षसवंशका नाश कर डाला।

१—द्रौपदीका अपमान करनेवाले कौरव कुलको पाण्डवोंने मिट्टीमें मिला दिया।

२—पुरुष जब कभी स्त्रियोंके अपमानकी बात सुनते थे सिंहकी तरह गर्ज कर अपमान-कर्ताका हृदय चीर डालते थे।

३—अब वे पुरुष चले गये। उनके साथ पुरुषार्थ भी नष्ट हो गया।

४—अब रह गई है केवल घृणित विषय वासनाकी लीला और नीच भोगविलासकी क्रीडा।

१—नरकके कीडोंकी तरह कहते है,—अभी जीवनके अनेक भोग भोगने बाकी है; अद्वितीय उल्लासोंका उपभोग अभी अधूरा है।

२—इन्हीं भावनाओंके वश कुत्तोंकी तरह अपनी स्त्रियोंका सतीत्व लुटने देते है।

३—इतना ही नही स्त्रियोंका अपमान करनेवालोंके पैर चाटते हैं।

४—आज वे बाते बनानेमें वीर है।

१—और कर्म करनेमें कायर।

२—मगर स्त्रियाँ भी क्या कम गिरी हैं ?

३—नारी अबला। वह क्या करे ?

४—नारियाँ सब कुछ कर सकती हैं। वे अपमान करनेवालेका गला घोट सकती है।

१—पैनी छुरी अत्याचारीके पेटमें भौंक सकती है।

२—अगर और कुछ नहीं तो वे आन देनेकी अपेक्षा अपने प्राण दे सकती हैं ?

३—प्राण तुच्छ वस्तु नहीं है कि सहजमे दे दिये जायँ।

४—कैसी बात कहती हो ? हम जौहर करनेवाली क्षत्रिय रमणियोकी सन्तान क्या इन तुच्छ प्राणोंको मान-रक्षाके लिए बलिदान न कर सकेगी।

१—उठो बहनो ! हम पुरुषोंको पुरुषार्थ करनेके लिए उत्तेजित करेंगी।

२—उनके सोते हुए विक्रमको जगायँगी।

३—और अगर ऐसा न कर सकी ?

४—तो खुद अपनी इज्जत पर हाथ डालनेवालेको दंड देनेका उद्योग करेंगी।

१—असुर-संहारिणी माँ, इन कोमल करोंमें भीमकासा बल देगी।

२—विघ्न बाधाओंके पहाड़ हमें फूलसे लगेंगे।

३—साहस करनेवाली पुत्रियोंको काली हर समय मदद देती है।

४—तो उठो, कर्तव्यमें लगो ! (सब जाती है)

पड़ोसिनोंकी बैठक (२)



स्थान—एक मकान

समय—दुपहर

[पाँच सात युवतियाँ बातें कर रही है।]

कमला—क्यो चपला तुझे भी ऐसा सजना आता है ?

चपला—कैसा ?

कमला—अरुणवालाके जैसा।

विमला—आधे कपाल तक वालोंको लाना।

सुशीला—उनको वेसलिनसे जमाना।

निर्मला—आधे सिरपर साडीको रखना।

चपला—ठुमक ठुमक कर नजाकतसे चलना।

सुशीला—क्योंरी विमला ! तेरी पडोसिन गौरी तो साक्षात् दूसरी झाँसीकी रानी है।

कमला—वरको तो बंदरकी तरह नचाती है।

अमला—विचारे देवरके तो नाकों दम है।

कमला—उसका वर भी तो बायला है।

सुशीला—और नहीं तो क्या ?

विमला—सवेरे चाय पीने बैठते हैं तो छोकरेको घरसे बाहर निकाल देते हैं।

अमला—दोनों जोरू मर्द पी लेते है।

२—मगर स्त्रियाँ भी क्या कम गिरी हैं ?

३—नारी अबला । वह क्या करे ?

४—नारियाँ सब कुछ कर सकती हैं । वे अपमान करनेवालेका गला घोट सकती है ।

१—पैनी छुरी अत्याचारीके पेटमें भोंक सकती है ।

२—अगर और कुछ नहीं तो वे आन देनेकी अपेक्षा अपने प्राण दे सकती हैं ?

३—प्राण तुच्छ वस्तु नहीं है कि सहजमें दे दिये जायँ ।

४—कैसी बात कहती हो ? हम जौहर करनेवाली क्षत्रिय रमणियोकी सन्तान क्या इन तुच्छ प्राणोको मान-रक्षाके लिए बलिदान न कर सकेंगी ।

१—उठो बहनो ! हम पुरुषोंको पुरुषार्थ करनेके लिए उत्तेजित करेंगी ।

२—उनके सोते हुए विक्रमको जगायँगी ।

३—और अगर ऐसा न कर सकीं ?

४—तो खुद अपनी इज्जत पर हाथ डालनेवालेको दंड देनेका उद्योग करेंगी ।

१—असुर-संहारिणी माँ, इन कोमल करोंमें भीमकासा बल देगी ।

२—विघ्न बाधाओंके पहाड़ हमे फूलसे लगेंगे ।

३—साहस करनेवाली पुत्रियोंको काली हर समय मदद देती है ।

४—तो उठो, कर्तव्यमें लगो ! (सब जाती हैं)

पड़ोसिनोंकी बैठक (२)



स्थान—एक मकान

समय—दुपहर

[पाँच सात युवतियाँ बातें कर रही है ।]

कमला—क्यो चपला तुझे भी ऐसा सजना आता है ?

चपला—कैसा ?

कमला—अरुणबालाके जैसा ।

विमला—आधे कपाल तक बालोको लाना ।

सुशीला—उनको वेसलिनसे जमाना ।

निर्मला—आधे सिरपर साडीको रखना।

चपला—ठुमक ठुमक कर नजाकतसे चलना ।

सुशीला—क्योरी विमला ! तेरी पडोसिन गौरी तो साक्षात दूसरी झाँसीकी रानी है ।

कमला—वरको तो बदरकी तरह नचाती है ।

अमला—बिचारे देवरके तो नाकों दम है ।

कमला—उसका वर भी तो बायला है ।

सुशीला—और नहीं तो क्या ?

विमला—सवेरे चाय पीने बैठते है तो छोकरेको घरसे बाहर निकाल देते हैं ।

अमला—दोनों जोरू मर्द पी लेते है ।

चपला—फिर छोकरेको वची वचाई दे देते है।

सुशीला—दूधके तो विचारेको कभी दर्शन भी नहीं होते।

विमला—एक दिनकी वात है कहींसे मिठाई आई थी। गौरीने अपनी छोकरीको दी। छोकरीने अपने काकाको भी कुछ देदी। गौरीको खवर पडी। उसने छोकरीको वहुत पीटा।

अमला—शामको वर नौकरीपरसे आया। गौरीने झूठी वाते वनाकर देवरको भी पिटवाया।

निर्मला—कमला तुम तो वहुत वढ़िया लेकचर देती हो।

चपला—अरी यह तो कोयलकी तरह कुहुकती है।

सुशीला—वडी होगी तव तो यह एनी वीसेंट वन जायगी।

विमला—नहीं जी यह तो देवी सरोजनी वनेगी।

अमला—वाह! सुनते ही इसका दिल खुश हो गया।

निर्मला—पहले तो 'सरोजनी' नाममें ही जादू है! ऊपरसे महात्मा गॉधीने पदवी दी वुलवुले हिन्द!

चपला—वाहवा! अगर मेरा भी कंठ मधुर होता।

सुशीला—तपस्या चाहिए तपस्या!

विमला—कम्मू तेरा वह गाना वड़ा मीठा लगता है। सुना तो वहिन।

कमला—जाओ तंग न करो। मुझे कुछ नहीं आता।

अमला—मेरी अच्छी कम्मू!

निर्मला—मेरी प्यारी सखी।

चपला—वहिना मेरी, अव तो सुना ही दो।

अफ़ीदा—सोचती हूँ, कि, कहाँ जाऊँगी ?

२ री सखी—सुना है, स्वर्ग नामका एक नगर है। वहाँ सुख ही सुख है।

अफ़ीदा—सखी हँसी न करो।

३ री सखी—जिसके हृदयमें रात दिन चिन्ताकी आग जलती रहती है उसे हँसी क्या अच्छी लगती है ?

२ री सखी—मैं उसी अग्निको परिहाससे दावना चाहती थी।

अफ़ीदा—सखी ! उसको दवानेके लिए पहाड़ रख दो तो वह राख होकर उड जायगी।

४ थी सखी—चिन्ता छोड़ो ! रात हुई है प्रभात भी होगा।

अफ़ीदा—जबतक पिताकी मौतका बदला न लूँगी; और विश्वास-घातक हुजिरको न मारूँगी तब तक यह जलन नहीं मिटेगी।

५ वीं सखी—मगर अफ़ीदा सच कहना ! क्या तुम सुहराबको नहीं चाहती ?

अफ़ीदा—चाहती हूँ ! अगर वह देशका शत्रु न होता तो मैं अनायास ही उसके चरणोंमें प्राण अर्पण कर देती ! मगर जो स्वदेशका शत्रु है वह हमारा भी शत्रु है ? चाहे वह पिता, भाई या पति ही क्यों न हो ? इसी लिए मैं सुहराबको वैसे ही चाहती हूँ, जैसे अग्नि घृतको चाहता है, जैसे सिंह बकरीको चाहता है; जैसे बिल्ली चूहेको चाहती है।

अफ्रीदा और सखियाँ।



[रुस्तम ईरानका प्रसिद्ध योद्धा था। उसके लडकेका नाम सुहराब था। जब वह गर्भमें था तभी उसका पिता उसे छोडकर चला आया था। बडा होनेपर वह तूरानके बादशाहकी फौज लेकर पिताको ढूँढने ईरानकी तरफ चला। रस्तेमें उसने चूड दुर्गको जीत लिया। चूड दुर्गके राजाकी कन्या अफ्रीदा भागकर, अपनी सखियों सहित ईरानके बादशाहकी मदद लेनेको जा रही थी। जंगलमें एक पडावपर उसकी और सखियोंकी जो बातचीत हुई थी, वही यहाँ दी गई है।]

स्थान—जगल।

समय—सध्याकाल।

अफ्रीदा—(अकेली) ओह! जंगल कैसा भयानक है? मै कहाँ हूँ? मेरा चूड दुर्ग कहाँ है? मेरे स्वजन संबंधी कहाँ है? मेरे पिता किस महासागरमें विलीन हो गये? मेरी सेना सब नष्ट हो गई। केवल चार सिपाही बचे हैं। वे प्राणपणसे हमारी रक्षा करते है। विधाताके किस विधानसे मुझ पर यह दुःख पडा है! पिताकी मौत आज भी हृदयमें साल रही है। प्रतिहिंसाकी आग धू धू करके हृदय में जल रही है! हाय! कैसे यह आग बुझेगी? किससे मदद मिलेगी?

[सखियों का प्रवेश]

१ ली सखी—अफ्रीदा! क्या सोच रही हो?

अफ़ीदा—सोचती हूँ, कि, कहाँ जाऊँगी ?

२ री सखी—सुना है, स्वर्ग नामका एक नगर है। वहाँ सुख ही सुख है।

अफ़ीदा—सखी हँसी न करो।

३ री सखी—जिसके हृदयमें रात दिन चिन्ताकी आग जलती रहती है उसे हँसी क्या अच्छी लगती है ?

२ री सखी—मैं उसी अग्निको परिहाससे दाबना चाहती थी।

अफ़ीदा—सखी ! उसको दबानेके लिए पहाड़ रख दो तो वह राख होकर उड़ जायगी।

४ थी सखी—चिन्ता छोड़ो ! रात हुई है प्रभात भी होगा।

अफ़ीदा—जबतक पिताकी मौतका बदला न लूँगी; और विश्वास-घातक हुजिरको न मारूँगी तब तक यह जलन नहीं मिटेगी।

५ वीं सखी—मगर अफ़ीदा सच कहना ! क्या तुम सुहराबको नहीं चाहती ?

अफ़ीदा—चाहती हूँ ! अगर वह देशका शत्रु न होता तो मैं अनायास ही उसके चरणोंमें प्राण अर्पण कर देती ! मगर जो स्वदेशका शत्रु है वह हमारा भी शत्रु है ? चाहे वह पिता, भाई या पति ही क्यों न हो ? इसी लिए मैं सुहराबको वैसे ही चाहती हूँ, जैसे अग्नि घृतको चाहता है, जैसे सिंह बकरीको चाहता है; जैसे बिल्ली चूहेको चाहती है।

छठी सखी—मगर हुजिर तुम्हे, प्रेम करता है।

अफ़ीदा—चुप! उस विश्वास-घातकका नाम न लो।

१ ली सखी—यह तो द्वेप है।

२ री सखी—हो, मगर प्रेम तो नहीं है। प्रेममें और द्वेपमें बहुत अन्तर होता है।

३ री सखी—द्वेप मारता है और प्रेम प्राण देता है।

अफ़ीदा—अगर यह प्रेम हो तो भी जो प्रेमी देशका द्रोह करे मैं उसे घृणाकी दृष्टिसे देखती हूँ।

४ थी सखी—देशद्रोहीके बराबर संसारमें विश्वासघातक और पापी कौन होगा?

अफ़ीदा—सखियो! तैयार हो! चलो ईरान चलें। उसकी मददसे शत्रुओंका नाश करें। (सब गाती हैं)

राग, माढ

हम ईरानी वीर नारियाँ, चलो चलें हम वहीं सभी।
उठें खूब रणरंग-तरंगें, नहीं युद्ध नि.शेप अभी॥
नहीं समाप्त एक रणसे यह, एक हारसे नष्ट न देश।
एक बार यदि हुई विफल फिर, नव आयोजनका उद्देश॥
साज वर्मसे यह उत्तम तनु,
कोमल करमें लेंगी शर-धनु,
चपला तुल्य चमक कर जलकर,
चकाचौंध आँखोंमें भर भर,

पुन करेंगी गढ अवरोध,
लेंगी हम लेंगी प्रतिशोध,
सुन तूरान ! सुन ईरान !
रमणी गण
करता है दृढ प्रण,
उड़े निशाण बजे विषाण,
मान रहित जीवनको धिक है, भूल न जाना इसे कभी ।
हम ईरानी वीर नारियाँ, चलो चलें हम वहीं सभी ॥



तारा और उसकी सखी



स्थान—बदनोरका किला ।

समय—सन्ध्याकाल ।

[सुमित्रा और ताराका बातें करते हुए प्रवेश]

तारा—सुमित्रा ! तुम्हें भी क्या धुन लगी है ? 'जयमल तुम्हें चाहता' 'जयमल तुम्हें चाहता' सुनते सुनते हैरान हो गई। घृणासे हृदय भर गया ! अव नहीं सुनना चाहती ।

सुमित्रा—मगर तारा ! मेवाड़के राजकुमार तुम्हें जी जानसे चाहते है ।

तारा—वे चाहें या न चाहें । मेरा कुछ वनता विगड़ता नहीं है ।

सुमित्रा—तारा ! क्या सच कहती हो ? तुम्हारा कुछ वनता विगड़ता नहीं है ?

तारा—एक वार नहीं सौ वार कहती हूँ । मेरा कुछ वनता विगड़ता नहीं है ।

सुमित्रा—क्या तुम मेवाडकी रानी वनना नहीं चाहती ?

तारा—मेवाडकी क्या मैं स्वर्गकी रानी वनना भी नहीं चाहती । मैं प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ कि, जवतक मेरी मातृभूमिका उद्धार न होगा तव तक मैं कोई दूसरी वात नहीं सोचूँगी ।

सुमित्रा—मगर मातृभूमिका उद्धार कैसे होगा ?

तारा—नहीं जानती कि, कैसे होगा ? सुमित्रा ! मैं शस्त्र चलाना जानती हूँ; मैं युद्ध करना जानती हूँ। मगर मैं अकेली नारी क्या करूँगी ?

सुमित्रा—इसी लिए कहती हूँ पुरुषका साथ करो !

तारा—छिः ! पुरुषोंका नाम न लो ! वे सब बेफिक्र होकर घृणित जीवन बिता रहे हैं। वे नीच विलास-वासनाके दास हैं ! हाय ! अगर पुरुष ही 'पुरुष' होते,—वे पुरुषार्थ करते तो आज किस बातका दुःख था ? यह नहीं जानती कि, कैसे जन्मभूमिका उद्धार होगा तो भी मैंने प्रतिज्ञा की है कि जबतक मातृभूमि पराधीन और दुखी है तबतक ब्याह न करूँगी।

सुमित्रा—मगर ब्याह करनेसे तो मातृभूमिका उद्धार करनेकी तुम्हारी भावना नष्ट नहीं हो जाती।

तारा—ब्याह करनेसे सब कुछ नष्ट हो जाता है। रह जाता है सिर्फ घृणित भोग विलास ! नीच विषय वासनाका खेल ! और कुत्तोंका जीवन !

सुमित्रा—मगर—

तारा—जाओ सुमित्रा ! मैं कुछ सुनना नहीं चाहती ! मुझे चाहिए जननी जन्मभूमिका उद्धार ! *(प्रस्थान)*

रानी जवाहरबाई और कर्णवती

[रानी जवाहिरबाई और रानी कर्णवती दोनों चितौडके राना साँगा या सग्रामसिहजीकी पत्नियॉ थीं। विक्रमजित रानी जवाहिरबाईकी कोख से जन्मे थे। मगर उनका स्वभाव उच्छृखल था, इसलिए सारे क्षत्रिय नाराज होकर, उन्हें छोड गये थे। मालवेका बादशाह बहादुर शाह राना सॉगासे बुरी तरह हारा था, इसलिए मेवाडको ध्वस करनेका उसने यह अच्छा मौका देखा और मेवाडपर चढाई कर दी। विक्रमजित हारकर कहीं भाग गये। मगर चितौड अभीतक बहादुरशाहके हाथ नहीं लगा था। कुछ क्षत्रिय वीर उसकी रक्षा कर रहे थे। उसी समय रानी जवाहरबाई और कर्णवतीने जो सकल्प किया था वही सवादकेरूपमें यहॉ दिया गया है।]

पात्र

रानी जवाहरबाई—राना विक्रमजितकी माता।

कर्णवती—उदयकी माता

पन्ना—धाय

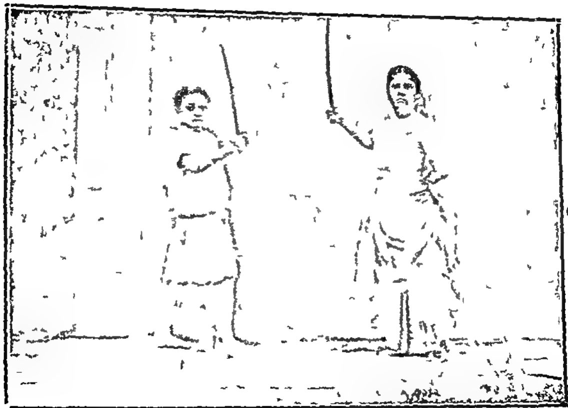
क्षत्राणियॉ, क्षत्रिय आदि

प्रथम दृश्य

स्थान—क्षत्राणियोकी व्यायाम शाला।

समय—प्रातःकाल

[क्षत्राणियाँ, लाठी, तल्वार, वगैरा चलानेका अभ्यास कर रही हैं।]



" रानी जवाहिरबाई और कर्णवती " के खेलका एक दृश्य (पृ० ३८)

नोट—(१) अगर लडकियोंको लाठी तलवार वगैरा चलाना सिखलाया न जाता हो तो यह प्रवेश छोड देना चाहिए। लेखक की आन्तरिक इच्छा तो यह है कि, यह दृश्य जरूर रक्खा जाय। लड़कियाँ इसके लिए तैयार कर लीं जायँ। (२) जहाँ राजपूत आते हैं, वहाँ अगर लडके लिए जा सकते हों तो अच्छा है। वरना वहाँ लडकियाँ ही राजपूत मान लीं जायँ।

द्वितीय दृश्य



स्थान—चित्तौडके अन्तःपुरका कमरा

समय—सवेरा

[रानी कर्णवती और कुछ सखियाँ बैठी है। रानी जवाहरबाई अपनी सखियोंके साथ आती है। ये सभी युद्धसाजसे सजी हुई है। इन्हें आते देखकर कर्णवती आदि खडी हो जाती है।]

कर्णवती—(हाथ जोड नमस्कारकर) आओ जीजी! विराजो!

(कर्णवती बैठती नहीं है। खडी हुई ही कहती है।)

जवाहरबाई—वहिन! आज विक्रम नहीं है। युद्धमें गया वापिस नहीं आया। कहाँ है, सो भी नहीं जानती। चित्तौड शत्रुओंने घेर लिया है। विक्रमसे नाराज होकर सारे क्षत्रिय अपने घरोंमे बैठे हैं। ऐसे समयमे आज मेवाड़की रक्षा कौन करे?

कर्णवती—वहिन! हम वीरवाला! हम ही यह काम करेंगी।

जबतक हम जीवित हैं, तबतक शीशोदियोंकी लाल धजा पृथ्वी-पर न गिरेगी।

जवा०—शावाश वहिन! मैं तुमसे यही सुनने आई थी। माताको पददलित होते देखकर भी आज राजपूत चुप हैं। उनके वाप दादोंने अपना रक्त देकर जिस चित्तौड़की स्वाधीनता वचाई थी, उसीका आज नाश हो रहा है। तो भी ये स्थिर भावसे देख रहे हैं। तब हम स्त्रियाँ ही आज मेवाड़की रक्षाके लिए हथियार पकड़ेंगी।

कर्ण०—हाँ वहिन चलो! हम ही शत्रुदलमें कूदेंगी और देखेंगी कि शत्रुओंकी भुजाओंमें कितना वल है?

जवा—वहिन! तेरी गोदमें शीशोदिया कुलका अन्तिम दीपक उदय है। उसकी रक्षाके लिए तुम यहीं रहो। मैं जाऊँगी। अन्तःपुरवासिनी वीर राजपूतानियोंको लेकर शत्रुदल पर आक्रमण करूँगी। दुश्मनोंको मारते मारते मरूँगी। दुश्मन देखेंगे कि क्षत्राणियोंकी भुजाओंमें भी कितना वल है। तुम उदयकी रक्षाकर अपनी आवरू वचानेके लिए जो उचित जान पड़े सो करना।

कर्ण०—(प्रणाम करके) जाओ जीजी! चित्तौड़की स्वर्गस्थ सतियाँ तुम्हारी और तुम्हारे साथकी वीर वालाओंकी रक्षा करें। और मैं उदयकी रक्षाके लिए यहाँ रहती हूँ। देखूँ चित्तौड़को और उदयको वचा सकती हूँ या नहीं?

जवा०—(क्षत्राणियोंसे) वहिनो! आओ हम चलें। इन लुटेरोंको नाश करते हुए रण-सागरमें विलीन हो जायँ!

क्षत्राणियाँ—रानीजी चलो रानी।

रानी—बोलो जगदम्बा मैयाकी जय! रिपुदल संहारिणीकी जय! [सब जय बोलती हुई आती हैं] (पट परिवर्तन)

तीसरा दृश्य



स्थान—अन्त पुर

समय—प्रात काल

[रानी कर्णवती और पन्ना धाय बातें कर रही है।]

कर्णवती—पन्ना! तुम और तुम्हारे बड़ावे हमेशा राजकुलको पालते आये हैं। उदयको तुम्हें सौंपती हूं। (बालक उदयको पन्नाकी गोदमें देती है) इसे भी तुम्हीं बचाना।

पन्ना—(उदयको लेकर) रानीजी! आप कोई चिन्ता न करें अपना प्राण-प्राणोंसे भी बढ़कर समय आया तो अपना पुत्रतक-देकर उदयकी रक्षा करूँगी। आप निश्चिन्त होकर देशकी रक्षाके उद्योगमें लगिए।

एक क्षत्राणी—रानीजी! एक बार रूठे हुए क्षत्रियोंको जमा कीजिए।

दूसरी क्षत्राणी—हाँ रूठों हुओंको मना लीजिए।

तीसरी ,,—उनके सोते हुए क्षात्र तेजको जगाइए।

चौथी ,,—उनकी नसोंमें वीरताकी बिजली दौड़ाइए।

कर्णवती—चलो उद्योग करके देखूँ। (प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—गाँवका एक भाग

समय—संध्याकाल

[राजपूत लोग जमा है। कुछ क्षत्राणियोंके साथ कर्णवतीका प्रवेश। क्षत्रिय लोग उठकर रानीका अभिवादन करते है।]

कर्णवती—क्षत्रियो ! मै–मेवाड़की रानी–और तुम्हारा भविष्यका राजा आज संकटमें पड़े है।

एक राजपूत–तो हम क्या कर सकते है ?

दूसरा रा०—पहलवान कहाँ हैं जिनके खातिर राजपूतोंका अपमान किया गया था।

कर्ण०—सर्दारो ! सुनो ! मैं अपना ही दुखड़ा रोने तुम्हारे पास नहीं आई। मैं आई हूँ सुंदर मेवाडके लिए। दुश्मन असंख्य फौज लेकर आया है। तुम मेवाड़की सन्तान हो; तुम राजपूत हो; तुम वीरोंके नामसे प्रसिद्ध हो फिर भी, क्या तुम चुपचाप खड़े हुए इस मेवाड़को लुटते और मिटते देख सकोगे ?

एक सर्दार—(भयसे) असंख्य सेना ! बापरे !

दू० सर्दार—इतनी सेनासे युद्ध करना हमारे लिए संभव नहीं है।

रानीके साथकी क्षत्राणी—(आवेशसे) संभव नहीं है ? संभव नहीं है ? तो तुम यही चुप चाप खड़े देखोगे कि, तुमको निकाल कर,

तुम्हारा नाश कर शत्रु इस स्वर्ण भूमिपर अधिकार कर ले ! धिक्कार है ! जिस मेवाडके एक एक कंकरकी रक्षाके लिए तुम्हारे पुरखोंने अपना रक्त बहाया था उसी मेवाड़को तुम चुप चाप दुश्मनोंके हाथमें सौंप दोगे ! तुम राजपूत हो, तुम वीर हो, फिर भी कहते हो कि, संभव नहीं है। अगर आज बडे रानाजी जीते होते तो तुम्हें यह कहनेका साहस कभी न होता, मगर आज महारानी अनाथा है। इनकी बात तुम क्यों मानोगे ? हा दुर्भाग्य !

सभी सर्दार—नही, नहीं, हम इनकी बात मानेंगे।

रा० क्ष०—अगर मानोगे तो उठो ! तुरहीकी आवाजसे जैसे सिंह गर्ज उठता है वैसे उठो ! पूँगीका नाद सुनकर जैसे सर्प फुंकार उठता है वैसे उठो ! बादलोंकी टक्करसे जैसे बिजली कडक उठती है वैसे उठो ! आँधीके समय जैसे समुद्रमें तूफान उठता है वैसे उठो ! तलवार पकडो और शत्रु दलपर टूट पडो।

एक सर्दार—हम लडेंगे, मगर मौतके सिवा इस लड़ाईमे कुछ हाथ न आयगा।

रा० क्ष०—मरना ! क्या मौत सबको एक दिन न आयगी ? रोगशय्यापर पडे दुःख झेलते हुए मरना सुखकी मौत नहीं है; वह तो अभिशाप है। सुखकी मौत है, अपनी इच्छासे, उत्साहके साथ हँसते हँसते देशकी रक्षामें प्राण देना।

सब—हम लडेंगे, मरेंगे; देशकी रक्षा करेंगे।

रानी कर्णवती—शाबाश! यही तो मेवाड़ी वीरोंके लायक बात है। सुनो, मैं किसीको उसकी इच्छाके विरुद्ध नहीं बुलाती। अगर किसीको अपनी जन्म भूमिका खयाल हो; यदि किसीको अपने धर्मपर भक्ति हो, यदि कोई स्वाधीनताके लिए प्राण देनेको तैयार हो तो वह आवे। वह अकेला ही एक सौके बराबर है। देखो एक तरफ, गुलामीके साथ, संसार, घरबार और शान्ति है; दूसरी तरफ स्वाधीनताके साथ देशके कर्तव्य हैं; कर्तव्यके लिए मरना है। दोमेंसे एक पसंद कर लो।

सब—हम कर्त्तव्यको ही पसंद करते हैं।

कर्ण०—अच्छी बात है। तब उठो, चलो। बोलो जननी जन्मभूमिकी जय!

सब—जननी जन्मभूमिकी जय!



पाठशालामें आनंद। (१)



स्थान—पाठशालामें एक श्रेणी।

समय—ग्यारह बजेका।

[श्रेणीमें लड़कियाँ बैठी हैं। कोई शिक्षिका नहीं है। लड़कियाँ बातें करने लग रही है।]

१—कमला, कलका पाठ तैयार किया ?

कमला—था ही क्या कलके पाठमें !

१—जो कुछ हो, मुझे बताओ मैं कल आ न सकी थी।

२—मैं बताऊँ, शुद्ध लेखन, सिलाई, इंग्लिश और गणित।

१—गणितमे क्या बताया था ?

३—मेरे तो गणितके मारे नाकों दम है।

४—मै भी तो इसके कारण हैरान हूँ।

५—न जानें हमें कहाँका साहूकारा करना है।

१—तुम तो इतना बता दो कि, कौनसी उदाहरणमाला करनेको दी थी।

३—अच्छा तुम ही कहो, व्याजका व्याज लगाना सीखके हम क्या करेंगी ?

१—इससे तो बड़ा फायदा है। हमें कोई ठग न सकेगा।

३—वाहरी अक्ल ! हम क्या किसीसे कर्ज निकलवाने जायँगी सो हमे कोई ठग लेगा।

४—शिक्षिकाएँ सीखी है या नहीं ?

५—उन्हें तो ट्रेन्ड (Trained) होना था, हमें कहाँ ट्रेन्ड होना है।

२ अच्छा बताओ तुम क्या पढ़ना पसंद करती हो ?

३—मुझे तो दुनियाकी सभी भाषाएँ सीखना अच्छा लगता है।

४—मैं तो कहती हूँ हमें सिलाई बहुत अच्छी आनी चाहिए।

१—क्यों सिलाई तो हमें सिखलाई जाती है न ?

५—खाक सिखलाई जाती है। छः बरस सीखते हो गये; परन्तु अभीतक हमें अपने बदनका एक कपड़ा भी अच्छी तरह सीना नहीं आया।

२—बहिन बात तो सच कहती हो। मेरे भाई कहते थे कि, अगर हमें कोट, कमीज, चोली, फ्राग वगैरा सीना आजायँ तो साल भरमें कमसे कम हमारे सौ रुपये बच जायँ।

३—मेरी माताजी भी यही बात कहती थीं।

४—मुझे तो ड्राइंग सबसे अच्छा लगता है। कैसी सुंदरताके साथ अपना घर सजाया जा सकता है।

६—मैं तो गायनको सबसे ज्यादा पसंद करती हूँ। किसी तरहकी चिन्ता हो, गायनकी एक तान छेड़ दो। आनंदमें मग्न हो जाओगी।

१—अच्छा समझी कि, गणितमें चक्रवृद्धि ब्याज सिखलाया था और इंग्लिशमें क्या बताया था ?

६—इंग्लिशमें तो सारी बारहखड़ी ही बता दी थी।

१—कैसे ?

६—देखो-(आ) के लिए आता है (A) (इ) के लिए (I) (ई) के लिए (EE) (उ) के लिए (U) (ऊ) के लिए (oo) (ए) के लिए (E) (ओ) के लिए (O) (ऐ) के लिए (A, I) (औ) के लिए (A, U) बस।

[घंटा बजता है। इङ्ग्लिश शिक्षिका आती है। लड़कियाँ किताबें निकालकर नम्बरवार बैठ जाती हैं]

शिक्षिका—(एकसे) अच्छा आकी मात्राके शब्द बताओ।

एक—Car, war, mat, (कार, बार, माट)

शिक्षि०—एम. ए. टी. माट नहीं मॅट। (दूसरीसे) तुम इकी मात्रके शब्द बताओ।

दूसरी—Big, fig, sir, (बिग, फिग, सिर)

शिक्षि०—एस, आइ, आरका उच्चारण क्या कहा ?

दू०—सिर।

शिक्षि०—सिर, तुम्हारा सिर। इसका उच्चारण होता है 'सर' (तीसरीसे) तुम ईकी मात्राके बोलो।

तीस०—Deep, keep, Deer, (डीप, कीप, डीर)

शिक्षि०—'डीर' नहीं 'डीअर' कैसी बेपरवाह लड़कियाँ हैं। (चौथीसे) तुम उकी मात्राके शब्द बोलो।

चौथी—Put, pul, shut (पुट, पुल, शुट)

शिक्षि०—(मेजपर हाथ मारकर) 'शुट' नहीं 'शट' बोलो। सब एकसे एक बढ़कर हैं। ध्यान देना तो जानती

ही नहीं। (पाँचवींसे) अच्छा तुम ऊकी मात्राके बोलो। खबरदार, गलती न करना।

पाँचवीं—Boot, Shoot, Door (बूट, शूट, डूर)

शिक्षिका—(आवेशसे खडी हो जाती है और फुट उठाकर) डूर नही 'डोअर' (छठीसे) तुम ओके बताओ। (बैठती है)

छठी—Go, Lo, Do (गो, लो, डो)

शिक्षि०—(हताश भावसे) अरे लक्ष्मी डीओ 'डो' नहीं 'डू' (सबको सबोधन करके) तुम लोग जरासा भी ध्यान नहीं रखतीं। इतनी क्या लापरवाही? हम महनत कर करके मरें और तुम्हारे भावे कुछ नही।

एक—(साहस करके) हम तो वैसे ही बोलीं जैसे आपने नियम बताये थे।

शिक्षि०—अपवाद होते ही न होंगे?

एक—हम क्या जानती थीं, कि अपवाद भी होते है।

शि०—चुप रह! सामने बोलती है? एक पाठ नही करना और ऊपरसे जबान लड़ाना? खबरदार फिर सामने बोली तो (सिर पकडकर बैठती है। छोकरियाँ बातें करने लगती हैं। नाराज होकर) होगई न तुम्हारी कट कट शुरू! पाठ करना तो सीखा ही नहीं पाठ करो। (इतनेहीमें घटा बज जाता है। शिक्षिका अपनी छत्री और थेली (Bag) सभालकर रवाना होती हुई) कल बराबर पाठ करके लाना। नहीं तो देखना। [हाथसे पीटनेका सकेत कर, जाती है]

१—बड़े सस्तेमें छूटे।

२—कान न ऐंठे गये, सद्भाग्य।

३—इस अंग्रेजीके मारे तो नाकों दम है।

४—यह कोई नियम मानकर तो चलती ही नहीं।

५—कैसा अंधेर है U का कहीं 'उ' होता है और कहीं 'अ' ही होता है'।

६—अब तो हिन्दीका घंटा है। हिन्दी मास्टर आज आवेंगे नहीं। अच्छा आओ कुछ कविता ही करें।

१—तब मैं शुरू करती हूँ। सुनो—
हुए आम पकके तैयार, मैं खाऊँगी पूरे चार।

२—ब स, मैं कितने खाती हूँ देख जरा—
तू रहेगी खाके चार, मैं उडाऊँ एक हजार।

३—वाह! गप हो तो ऐसी हो; मगर मैं मतलबकी कहती हूँ—
लेसन करो शीघ्र तैयार, नहीं पड़ेगी तुमपे मार।

४—बैठ बैठ मारवाली!

५—जरा मेरी भी सुनिए—
चाय हुई किटलीमें रेडी, (ready) पीलो कप भरके तुम लेडी।

६—देखा न अभीसे चायकी तलप लग गई। मगर छुट्टी वगैर चाय कहाँ? अच्छा मेरी सुनो—
हुआ घडीमें हाफ पास्ट वन, मिल गई छुट्टी खुशी है मन।

१—मुँह, धो लो, छुट्टीमें अभी एक घटेकी देर है। (घटा बजता है)

३—रह गई न जीभ चट खाती आम और चाय बिना !

[गायन मास्टर आते हैं। पेटी बजने और लड़कियाँ गाने लगती हैं।]

पीलू खम्माच ।

मन बंसी बजावत बनवारी ॥
देह गेहको नेह न राखत,
नीर छीरकी सुधि बिसरावत,
बंसी सुनि बनको हीं धावत,
है व्याकुल सब ब्रजनारी ॥ ब० ॥
चहक उठीं कुंजनमें चिरियाँ,
लागी चलन वायु यहि बिरियाँ,
चटक उठीं फूलनकी कलियाँ,
खूब बनी है मतवारी ॥ ब० ॥
चन्दकिरन जमनामें गेरत,
राधा राधा बंसी टेरत,
राधा भौचक इत उत हेरत,
कोयल कूक रही डारी ॥ ब० ॥
है व्याकुल निकसीं सब बामा,
तजि तजिके निज घरको कामा,
देखन चलीं चतुर घनश्यामा,
है कैसो बंसीधारी ॥ ब० ॥



'वनवसी बजावत वनमाली' गरबा करनेवाली लडकियां (पृ० ५०)

पाठशालामें आनंद (२)



स्थान—कन्याशालाका बरामदा।

समय—साढे दस (स्कूल प्रारंभ होनेके पहले)

[कुछ लड़कियाँ इधर उधर फिर रही हैं]

१—बहिनो! घंटा बजनेमें देर है, आओ कुछ खेल ही करें।

२—पहले रमाको बुलाइए।

३—चलोजी रमाको पकड़ लावें। [रमा एक तरफ बैठी पढ़ने लग रही है—" सी. ए. टी. कॅट, कॅट माने बिल्ली; आर. ए. टी. रॅट, रॅट माने चूहा।" जल्दी, जल्दी स्पेलिंग करती हुई लड़की रॅट, कॅट बोलती है। लड़कियाँ उसके पास पहुँचती हैं]

१—किताबकी कीड़ीजी! प्रणाम।

२—खिलाइए बदाम, लीजिए छदाम।

३—उठिए जनाब आला।

४—होगा बोलबाला;

५—नहीं तो पडेगा हमीं से पाला।

रमा—जाओ, हैरान न करो। मुझे इंग्लिशका लेसन करना है। (फिरसे स्पेलिंगके साथ ' रॅट ' ' कॅट ' बोलने लगती है।)

६—अजी, कॅट रॅटको खा जायगी।

७—अच्छा होगा बला टल जायगी।

१—और कपडोंकी जान आराम पायगी।

२—वाह ! आपके कपड़े तो जानदार भी हैं । कमाल है ।

३—अजी रॅट कॅटको खा चुकी अब उठो !

रमा—चलो टलो भी, मै न आऊँगी।

४—आपके बिना हम क्या टल सकती हैं ?

५—गुड़ बिना क्या लड्डू बनते है ?

६—वाहरे तेरी उक्ति ! मेरी रमा क्या गुड़ है। हट परे (पाँचवींको हटाती है और रमाका हाथ पकड कर) चलो हमारी लीडर साहिबा !

रमा—(किताब बद कर) तुम क्या पढने दोगी ? लाल कीड़ीकी तरह चिपकती हो। (खडी होती है) अच्छा क्या खेलोगी ?

१—आज पहेलियों की हारजीत।

२—सखी तुमने तो मेरे मनकीसी कही।

३—अच्छा तो रमा और चंदा अपनी कप्तान।

४—बस तो बीड़ बॉट लो। [बीड़ बॉटती है । एक तरफ एक पार्टी खडी होती है और दूसरी तरफ दूसरी। चार प्रश्न पहली पार्टी पूछती है और चार दूसरी]

प्रश्न १—बातकी बात ठठोली की ठठोली,
मर्दकी गाँठ औरतने खोली।

उ०—कहूँ सखि 'ताला'।

प्र०—बाँबी वाकी जल भरी, ऊपर जारी आग।
जबै बजाई बाँसुरी, निकस्यो कारो नाग।

उ०—मैं बताऊँ यह तो ' हुक्का '

प्र०—पान सड़ें घोड़े अड़ें विद्या विस्मृत होय।
अंगारे बाटी जले, क्यों सखि कैसे होय ?

उ०—सखि ' फेरे न थे '।

प्र०—लाल लाल लटकन, बाजू बंद चटकन।
खाते जायें, पीते जायें हाय हाय करते जायें।

उ०—ओ हो ! यह तो बडी अच्छी चीज है ! कह डालूँ ? ' लाल मिरच '

रमा—अच्छा अब आप पूछिए।

चदा—अभी लीजिए—

प्र०—एक जानवर ऐसा है, जो दुमसे पानी पीता है।
बिन पानी तुरत मर जाता, पानीसे वह जीता है।

उ०—वाह वा बडा भारी जानवर है ! कहूँ सखि ? 'दीपक'

प्र०—देखा एक शैतानका बच्चा, पडा गुफामें अकडे।
बड़ों बडोंकी आँखो चढ़कर, नाक कान दोउ पकड़े।

उ०—शाबाश ! शैतान हो तो ऐसा हो ! बडो बडोंके कानके साथ नाक भी पकडता है ? खूब करता है। कहूँ सखि ! ' ऐनक '

प्र०—चार टाँग पर पशु नहिं, है चलनी सम छेद।
पीडितको आनंद दे, कहो सखी यह भेद।

उ०—कहूँ सखि ! ' '

प्र०—अभय दान वह देत है, जानत सकल जहान।
श्याम वर्ण द्वारका वासी, नहीं कृष्ण भगवान।

उ०—कृष्ण भगवान नहीं तो उनका प्रसाद पकवान ही होगा।

(प्रश्न करनेवाली लड़कियाँ हँसती हैं और ताली बजाती हैं।)

चदा०—मैं बताती हूँ सुनो। यह तो है 'ताला'

रमा—आओ बहिनो! अब तो कल गायन मास्टरने सिखलाया वह गायन गावे।

चदा—हाँ, हाँ, बड़ा सुंदर है—

खम्माज—(मालकोस भी)

सोइ चन्द्र-वदन मोहि भावत है॥
करत प्रकाशित जो वसुधाको,
मधुर रूप दरसावत है॥
पास रहत जब खिलत चाँदनी,
दूर भये तम छावत है॥
चदा जात जात नहिं सौरभ,
फूलनसों जो आवत है॥
समझ परत नहिं भेद कहा है,
कोयल कूक सुनावत है॥
मावो विना लगत जग सूनो,
मन रहि रहि घबरावत है॥

(घटा बजता है। लड़कियाँ श्रेणियोंमें जाती हैं।)

पड़ोसिनोंकी बैठक (३)

[दस पन्द्रह पड़ोसिनें बैठी बातें कर रही है ।]

१—बहिनो ! जमाना खराब है ।

२—अपनी आबरू संभालना भारी हो गया है ।

३—राह घाटमें निकलते बदमाशोंका डर रहता है ।

४—इसी लिए कहती हूँ कि मजबूत बनो ।

५—दुनियामें शक्तिकी पूजा होती है ।

६—बलवानके आगे सभी सिर झुकाते हैं ।

१—मगर हमारे ये दुबले पतले हाथ, इनमें बल कहाँ ?

४—इसी लिए कहती हूँ कि कसरत करो ।

२—क्या दंड पेलें ?

३—नहीं जी बैठक लगावें ।

४—या मुद्गरें ही फिरावें ।

५—अथवा मलखम पर चढ़ें ।

६—ऊँ हूँ ये सब बातें तो अब बुड्ढी खखड हो गई हैं ।

१—बेशक, डबल बार सीखो ।

२—सिंगल बार पर उछलो कूदो ।

३—या लाँग जंप हाई जंप करो ।

५—नहीं जी फुट बालके किक लगाओ ।

७—या हाकीके डंडे चलाओ ।

सेठानी—सबसे अच्छा मैं बताती हूँ जी । टेनिस खेलो ।

[एक वड़ी आयुकी स्त्री आती है]

स्त्री—अरे क्या निकम्मी वड़ वड़ लगा रखी है ?

१—(बीचहीमें) ओ हो ! आप हैं वड़ीजी ?

२—आइए ! आइए !

३—किसीकी निंदाका चरखा चलाइए।

५—कुछ भक्तिका उपदेश दीजिये।

६—या किसीकी प्रशंसाके ही पुल वाँधिए।

४—अजी मैं कहती हूँ ताक़त वर वननेका रस्ता बताइए।

नई स्त्री—हमें चौके चूल्हेसे ही कहाँ फ़ुर्सत मिलती है सो हम दूसरी तरफ ध्यान दें।

चार पाँच स्त्रियाँ—वेशक ! वेशक !

सेठानी—यहाँ कौन चूल्हेमें सिर देती है। हमें तो अपने कामसे ही फ़ुर्सत नहीं मिलती।

१ इनके तो वनाव सिंगारके मारे ही नाकों दम है।

२—महा परोपकार करते फ़ुर्सत कहाँ ?

३—सभा सुसाइटियाँ और लेक्चर वाजियाँ इन्हें कहाँ दम लेने देती है ?

४—सभाओंकी धूमसे ये हैरान हैं।

५—और उपन्यासोंके वाचनमें मस्तान हैं।

६—इतने कामोंके रहते हुए चूल्हे चक्कीके लिए ये वक्त कहाँसे लावें ?

धनिक स्त्री—यही तो गरीवोंकी औरतोंमें ऐव है।

१—ये ऊँची बातें क्या समझें ?

२—इनकी संगति करनेमें भी अपना अपमान है।

३—चलो चलें।

[धनिक स्त्री और तीनों जाती हैं। एक उनके जानेकी नकल करती है]

५—सेठानी मटक कर चली गई।

६—अब चूल्हे चौके वालियाँ संभल जायँ।

४—कसरत करो कसरत। घरका काम करनेमें भी कसरत हो सकती है।

५—इस कसरतके मारे तो नाकों दम है।

६—थोड़े दिनमें तो यह पागल हो जायगी।

७—घरमें कसरत कैसे हो सकती है ?

४—मैं बताती हूँ सुनो-बिस्तर धीरेसे न उठाओ (बताती है) जरा ताक़तसे उठाओ (बताती है)

५—अरे हाँ, हाँ, समझी—कचरा निकालनेको बुहारी धीरे धीरे न फेरो (बताती है) जरा जोर लगाके फिराओ (बताती है)

६—नहाते वक्त ऐसे (बताती है) धीरे धीरे हाथ न फेरो शरीरको जोरसे मलो (बताती है)

७—टुवालसे शरीर इस जोरसे पोंछो कि चमड़ी छिल जाय (बताती है)

८—शाक वनारनेको चाकू इस तरह चलाओ मानों दुश्मनों पर तलवार चला रही हो। उँगली कट जाय तो कुछ परवाह नहीं।

६—आटा यूँ अधर न गूँधो (बताती है) इस तरह वहादुरीसे गूँधो (बताती है) मानों वॉक्सिग हो रहा है।

७—कढाईसे पूरी झटकेके साथ निकालो (बताती है) घी उछले और जल जाओ तो कुछ परवाहकी वात नहीं है।

८—वहिनो! कसरतकी वातें तुम्हें दिल्लगी मालूम हो रही है, इसका मुझे दुःख है। अगले जमानेंमें औरतें कसरत ही नहीं करती थीं वल्के हथियार भी चलाती थीं और इसी लिए वे अपनी ही नहीं अपने देशतककी रक्षा कर सकती थीं।

४—(हँसकर) अरे मर्दुए मर्द ही जब कसरत नहीं करते तब औरतोंको तो करना ही क्या है?

५—हथियारका नाम सुनकर तो उनकी नानी मर जाती है।

६—और पठानके हाथमें छुरी देखकर तो उनके प्राण ही सूख जाते हैं।

७—अजी तुमने भी अच्छी गप्प लगाई कि औरतें हथियार चलातीं थीं।

५—तुम जागती हुई सपना तो नहीं देखती?

८—सुनो वहिनो! मुसलमान महिला चाँद सुल्ताना आदि और क्षत्रिय वीरांगना तारावाई अहल्या वाई आदि अनेक महिलाओंने हथियार उठाए हैं, दुश्मनोंके दाँत खट्टे किये हैं और

अपनी व अपने देशकी आबरू बचाई है। हम भी उन्हीं महिला-ओंकी जातिकी है।

सभी—बेशक! बेशक!

८—इस लिए हमें भी औरतोंके लायक कसरते करना और लाठी तलवार वगैरा चलाना सीखना चाहिए।

९—पुरुषोंको हमीं बहादुर बनाती हैं और हमी कायर कर देती हैं।

५—कैसे?

८—क्यों कि उनको बचपनसे हम जैसी शिक्षा देती है वैसे ही वे होते हैं। इसलिए पुरुषोंकी शिकायत करना फिजूल है।

४—इसी लिए कहती हूँ बहिनो! कसरत करो! कसरत!

७—मर्दो, सावधान! अब औरतें दंड पेलेगी।





पाठशालामें आनंद (३)

स्थान—पाठशाला।

समय—दस बजे दिनके ।

[पॉच सात लडकियाँ खडी बातें कर रही है ।]

अ—बहिनो ! घंटी बजनेमें अभी देर है। आओ कुछ खेलें।

क—क्या खेलेंगी ?

ख—तब कमलाको भी बुलाइए ।

ग—अरे, देखो वह तो कुछ पढ़ने लग रही है ।

च—हॉ जी, इसे तो जब देखो तब पढ़ना, जब देखो तब पढ़ना !

अ—न जाने कहॉका कामदारा करेगी ।

क—अजी वह तो वरको घर बिठायगी और आप पेढी चलायगी ।

ख—वाहरे अकल ! मर्दोसे भी आगे बढ़ना चाहती है ।

ग—आओ जी चले, किताबे फैंक दें और उसे पकड लावें ।

(कमला मेजपर बैठी रामायणका पाठ कर रही है ।)

चोपाई

अस जियजानि सुनहु सिख भाई । करहु मातु पितु-पद-सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं । राउ वृद्ध अति दुख मन माहीं ॥

मैं वन जाऊँ तुमहिं ले साथा । होइ हि सब विधि अवध अनाथा ॥
रहहु करहु सबकर परितोषू । न तरु तात होइहिं बड दोषू ॥

[सब लडकियाँ कमलाके पास जाती है]

क—पंडितानीजी महाराज हो चुकी कथा ! अब उठिए ।

ख—ये रामायणकी कथा पंडितोंके लिए रहने दीजिए ।

ग—ब्राह्मणोंके लिए कुछ कमाईका धंधा भी छोडिए ।

कमला—बहनो जाओ ! मुझे पाठ याद करने दो । घरमें न कर सकी थी ।

घ—पाठ याद न हुआ न सही । कह देना घरमें काम करती थी ।

च—हाँ बहिन, कह देना माँको मदद देती थी ।

क—बहिनजी ज्यादा नाराज हो तो कह देना कि, माँकी तबीअत खराब थी ।

ख—सीधी बात है । कह देना रामायण पढकर मुझे क्या कथाभट्ट होना है ?

कमला—बहिनो ! क्या तुम यह कहना चाहती हो कि मैं झूठ बोलूँ ?

ग—ओहो ! यह तो साक्षात सत्य हरिश्चंद्रका अवतार है ।

घ—नहीं जी धर्मराज युधिष्ठिरकी छोटी बहिन है ।

च—ऐसी छोटी छोटी बातें क्या झूठ कहलाती है ?

क—ऐसी झूठ तो हम रात दिन ही बोला करतीं हैं ।

कमला—बहन, जान पड़ता है कि तुम जो कुछ पढ़ती हो वह भूलनेके लिए। क्या तुमने नहीं पढ़ा?—

सॉच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप॥

सब–(हँसती है)

क—ये सब पोथीके बेंगन हैं।

ख—दुनियामें तो यह कहावत है कि—

बोलो झूठ, लो धन लूट।
करो धरम, फूटे करम॥

ग—सच कह देनेसे माँ भी नाराज होती है।

घ—हॉजी मैंने एक दिन एक रुपया चुराया था। फिर पूछने पर सच कह दिया। पिताजीने मेरे कान ऐंठ दिये।

च—तुम सच कहती हो। मुझे भी बहनजीने (शिक्षिकाने) सजा दी थी। मै एक दिन खेलने लग गई थी। पाठ न कर सकी। पूछा पाठ क्यो नहीं किया? मैंने कहाः–"खेलनेमें भूल गई थी।" बहिनजीने झटसे चार फुट फटकार दिये।

क—उस दिन मैं भी इसके साथ खेलमें पाठ न कर सकी थी। मगर बहिनजीको कह दियाः–"घरमें काम करती थी।" बस बाल बाल बच गई।

ख—हॉजी सच बोलनेसे हाकिम भी नाराज होते है।

ग—बेशक! झूठी खुशामद करो सब खुश!

घ—कहावत है:—

'खुशामदसे खुदा राजी।'

च—हम तो रातदिन झूठकी जय और सत्यको सजा ही देखती सुनती हैं।

च—हटाओजी अब ये सारे झगड़े। पंडितानीजी चलो उठो! [कमला एक निःश्वास डालकर उठती है और गरदन हिलाती हुई] बहिनो! ईश्वरकी माया अपार है। कलियुगमें झूठका राज है। सत्य कैदमें पड़ा है।

क—चलो रहने भी दो ये ढोंग। एक तान छेड़ो देखूँ—

ख—नही जी आज तो सब मिलकर भारत वर्षका गरबा गायँगी

ग—तो करो प्रारंभ

राग—

भारत वर्ष हमारा प्यारा,
दुनियाभरकी प्रकृति देवीका, आँखोंका यह तारा है।
होनेको बलिदान इसीपर, तीस कोटि सिर रहते तत्पर,
कहते हैं सब गरज गरज कर, भारत वर्ष हमारा है॥ भा० ॥
जिसका मुकुट किरीट हिमाचल, है यज्ञोपवित गंगाजल,
जिसमें फल कर विविध फूलफल, सुरभि सुयश विस्तारा है॥ भा० ॥

उमा, इन्द्राणी और लक्ष्मी



स्थान—कैलाशपुरीमें शंकरका महल

समय—रात्रिका प्रारंभ

[उमा स्वर्णके सिंहासन पर बैठी हैं। सेविकाएँ पखा झल रही है। कुछ सखियाँ सामने बैठी हुई हैं। वार्त्ता विनोद हो रहा है। इन्द्राणी और लक्ष्मी सखियोंके साथ आती है और उमाकी विधिसहित पूजा करती हैं। उमा उन्हें आशीर्वाद देती हैं और पूछती है]

उमा—हे शचि ! हेलक्षी ! आज तुमने यहाँ आनेका कष्ट कैसे किया ?

इन्द्राणी—(हाथ जोडकर) माता ! इस दुनियामें कौनसी बात है जिसको आप नहीं जानती ? तो भी अपने आनेका कारण बताती हूँ। देवोंके द्वेषी रावणने घबरा कर अब मेघनादको सेनापति बनाया है। इसका पराक्रम आपसे छिपा नहीं है। सामान्य देवोंकी बात छोड़ दीजिए। खुद इन्द्र भी उससे घबराते हैं। फिर मनुष्य रामलक्ष्मणकी तो सामर्थ्य ही क्या है जो उससे लड़ सकें।

१ इन्द्राणीकी सखी—हे शुभंकरी जगतका नाश करनेवाले इन्द्रके वज्रतकको जिस महाबलीने तुच्छ कर दिया। उससे लड़नेके लिए कौन खड़ा होगा ?

२ सखि—और अगर कोई होगा तो वह उस अतुल शक्ति शालीके आघातसे चूर चूर हो जायगा।

लक्ष्मी—इसी लिए कात्यायिनी! हम आपके पास आई हैं। आप रामकी रक्षा करें। अगर आप कृपा न करेंगी तो दुरंत मेघनाद कल इस पृथ्वीको रामहीन बना देगा।

उमा—हे लक्ष्मी! हे शचि! रावण और मेघनाद शैवकुल-में श्रेष्ठ पुरुष हैं। वे शंकर को अत्यंत प्रिय हैं। ऐसी दशामे क्या मैं उनका कोई अनिष्ट कर सकती हूँ! लंकाकी ऐसी दुर्गती हो रही है इसका कारण यह है कि अभी शूलपाणि तपमें मग्न है।

शचि—(हाथ जोड़कर) हे नगेन्द्र नन्दिनी! लङ्कापति पूरा अधर्मी है। देवकुलका दुश्मन है! दूसरोका रत्न हरण करने वाला चोर है। उसी पर आपकी कृपा? आश्चर्य है!

लक्ष्मी—अपने पिताका सत्य रखनेको जो राम राजपाट छोडकर वनवासी बने, जिन्होंने सुखोपभोगका त्याग किया, जो पिताकी आज्ञा पालनेके लिए वल्कल वसन धारण कर फल फूलो पर जीवन टिका कर रखने लगे; जिन्होंने शक्ति-शाली होनेपर भी पिताकी आज्ञा पालनेके लिए तपस्वी रहना स्वीकार किया और जो आपके परम भक्त हैं उन्हीं रामकी गौरी! क्या आप सहायता न करेंगी! क्या उन्हें आप मिट जाने देंगी?

शचि—ऐसे परम धर्मात्मा रामके पास एक ' सीता ' रूपी अमूल्य रत्न था। उस रत्नकी वे सौ संकट सहकर भी रक्षा करते थे। उस रत्नको जो चुराकर ले गया, उनकी परम साध्वी सीताको जो हर कर ले गया उसी चोरकी, उसी दुराचारीकी, अम्बे! क्या आप रक्षा करेंगी? और धर्मात्मा, पवित्र रामकी क्या आप सहायता न करेंगी?

उमा—देवियो! मै क्या करूँ? पशुपति जिनके रक्षक हो उनको हानि पहुँचाने का सामर्थ्य किसमें है?

लक्ष्मी—देवी! तव क्या अबसे धर्मको अधर्म जीतेगा? पवित्रताको अपवित्रता नष्ट करेगी? सदाचारियोंको 'दुराचारी दलेंगे और आप चुप चाप बैठी यह सब देखा करेंगी?

उमा—देवियो! शंकरकी इच्छाके सामने मै लाचार हूँ।

शचि—भवानी! क्या आप यह कहना चाहती हैं कि, अब आपमें कोई शक्ति नहीं रह गई है? क्या आपका सर्वमंगला नाम अब निरर्थक होगा? जिन शंकरने आपके लिए दक्षयज्ञको ध्वस कर दिया वे ही शंकर क्या आपके लिए-आपको प्रसन्न करनेके लिए-दुराचारी राक्षस वंशका नाश न करेंगे? न होने देंगे?

एक सखि—दक्षने तो स्वयं महामाया और शंकरका अपमान किया था; यहाँ वह बात नहीं है।

दूसरी सखि—शिव और शिवा दोनों धर्म, न्याय और सदाचारकी साक्षात मूर्ति हैं। इसलिए जो अधर्म करता है, जो

अन्याय करता है और जो दुराचार करता है, वह शिव और शिवा दोनोंका द्रोही है। द्रोहियों पर स्नेह करना यह तो अभूत-पूर्व घटना है।

तीसरी सखि—मगलदा माँ! जरा सीताकी दशा देखिए; आज वह त्रिभुवन-मोहिनी रूप किस दशामें है? प्रफुल्ल मुख आज म्लान है, हास्यपूर्ण आँखोंमें आज विषाद है, गुलाबसे खिले हुए गालों पर आज झुर्रियाँ पडी है; सौन्दर्यका साक्षात अवतार आज हड्डियोंका कंकाल मात्र रह गया है। यह दशा क्यों हुई? केवल धर्म पालनेके लिए?

४ सखि—दयामयी! ऐसी धर्मपरायणा नारीका दुःख क्या आप देख सकती हैं? जिस दुराचारीने इस देवीको दुःख दिया क्या उसको दड दिये बिना आप रह सकती हैं।

५ सखि—राक्षसवशसे पृथ्वी घबरा गई है, वासुकी (शेष नाग) पृथ्वी धारण करनेमें असमर्थ हो रहा है। उसके आर्त नादसे त्रिभुवन व्याप्त हो गया है। देवी! तो भी क्या आप शात बैठी रहेंगी? शंभुके वलका उनकी कृपाका क्या इसी तरह दुरु-पयोग होता रहेगा और आप यह होने देंगी?

(उसी समय वहाँ सुगध फैलती है)

उमा—यह सुगध कैसी है?

शचि—सर्वान्तर्यामिनी! क्या आप नहीं जानतीं कि आपके परम भक्त राम आपकी उपासना कर रहे हैं। वह सुनिए—

[अन्तरिक्षमेंसे आवाज आती है,—" हे माता रामकी रक्षा करो, धर्मकी रक्षा करो ! राक्षस वंशको त्रिपुरारीने अभय और अजेय बना दिया है । इसीलिए देवी मैं तुम्हारे आश्रयमें आया हूँ । "]

लक्ष्मी—उमा ! आप अब भी क्या चुप रहेंगी ? उठो देवी ! रामकी-नहीं नहीं धर्मकी रक्षा करो, और भ्रममें पड़े हुए जगतको समझा दो कि चिरस्थायी धर्म ही रहता है, अधर्म नहीं; धर्म ही जीतता है अधर्म नहीं ।

(उमा कुछ क्षण विचार कर उठती है)

उमा—देवियो ! तुम ठीक कहती हो; मैं रामकी रक्षा करूँगी। मैं धर्म और सदाचारको विजयी बनाऊँगी; मैं तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूँगी; मैं रावण और उसके साथियोंका नाश करूँगी और दुनियाको बताऊँगी कि, स्त्री जातिका अपमान करनेवाला, उसके सतकी तरफ हाथ बढ़ानेवाला दुनियामें नहीं रह सकता चाहे वह रावण और इन्द्रजीतके समान महान वीर और शंकर का भक्त ही क्यों न हो !

शचि-और इन्द्राणी—माता ! तुम धन्य हो । तुमने स्त्रीजातिका मान रख लिया । बोलो सिंहवाहिनी माताकी जय । [सब जय बोलती है और जाती हैं ।]



झमकू

प्रथम दृश्य

स्थान—एक मकान।

समय—दुपहर।

[*शिवगौरी और झमकू बातें कर रही हैं।*]

शिवगौरी—भोजाईजी! देखो आज भाईजी आवेंगे। हाँ . तुम्हारे लिए बंबईसे बढ़िया बढ़िया चीजें लावेंगे। कुछ मुझे भी दोगी न भाभी?

झमकू—(जरा तिरस्कारके स्वरमें) रेवा दो रेवा! मने तो म्हारे असी मसकरी आछी नी लागे।

शिवगौरी—इसमें मसखरीकी क्या बात है? दादाभाई साहबका कल पत्र आया था। उसीमें तो यह लिखा था कि,—

झमकू—देख्या, देख्या थाने ने थाणा दादाभाईने। म्हूँ कई मेमटी हूँ जो म्हारे वास्ते मेमटियाँ जसी चीजाँ लावेगा।

शिवगौरी—नहीं भाभी! दादाके पत्रका यह अर्थ नहीं था।

झमकू—जाण्या, जाण्या, थाने ने थाणा दादारा अर्थने। दोई व्हे गिया मजारा किरस्टान। व्हारे थाणी अकल! म्हाराऊँ पण थाँ किरस्टानी बोलवा लाग्या के?

शिवगौरी—यह तो भारतकी भाषा है, इसमें किरस्टानी कैसी?

झमकू—और कई किरस्टान व्हेवामें सींगड़ा लाग ही ? बोलवामें हम तम बोलवा लाग गिया, मेमटियाँरी नाँई हरेक आदमीऊँ वार्तो करवा लाग गिया; गेणो गॉठों पेरणो छोड़ दीदो; अंग्रेजी, पारसी, भणवो सरू कर ही दीदो है; री पी आपणा देशरी पोशाक भी छोड़ दीदी, अबे कसर ही कई री है ? अतरीज नी के मेमटियॉरी जसी टोप नी लगावा लाग्या हो।

शिवगौरी—भाभीजी, आप यह क्या कह रही हैं ? मेमोंने तो यह भारतीय भाषा हमारे ही देशमें आकर सीखी है। यह तो देशभाषा है। इससे हम भारतके प्रत्येक प्रान्तमें जाकर अपना काम चला सकती है। हरेक पुरुषसे बोलनेमें कोई पाप नहीं। इससे तो उल्टा हृदयका भय निकलता है, कभी किसी स्थानमे अकेले रह जानेपर भी यदि निर्भीकतासे बोलनेका स्वभाव होता है तो हमारे पर कोई पुरुष अत्याचार नहीं कर सकता है। और ।

झमकू—अबे असी वार्तां तो रेवा दो। थॉइज न्याराई अस्या चवदे विद्या निधान पैदा व्हिया होके ? आपणा पुरखा कई सगळाई मूर्ख हा, जणा लुगायॉनें पर्दामें राखी ही ने पर पुरुष सूँ बोलवारी मनाई कीदी ही ?

शिवगौरी—सुनो ! बीचमेंजबकि मुसलमानोंका राज्य था—मुसलमान हिन्दुओंकी बहु बेटियोंको पकड लेजाते थे। इसलिए

हमारे पुरुषाओंने पर्देका रिवाज कर दिया था; परन्तु अब वह बात नहीं रही है। अब तो उल्टे पर्देमें रहनेसे लोग हमारे पर अत्याचार करने लगे हैं। यह बात तो मैंने नई ही सुनी है, कि अँग्रेजी फारसी पढ़नेसे लोग किरस्तान हो जाते हैं। देखो, दादा कितनी अँगरेजी और फारसी पढे हैं, क्या वे किरस्तान बन गये?

झमकू—किरस्तान नी तो और कई है? जूतियाँ अने कपड़ा पेरयाँ थकाई तो रसोई जीमवा लाग गिया। डबल रोटी अने बिस्कूट खावा लाग गिया, रेलमें, बग्गीमें गेलामें, हर कठेई कई खाई ले; कई संज्ञा नी राखे। बोलो अबे बणामे ने किरस्तानमें कई फरक है?

शिवगौरी—यह आप कह क्या रही हैं? क्या बिस्कूट खाना पाप है? क्या गंदी गलियोंमें—जहाँ कि पासहीमें पाखाना भी पडा होता है—बैठ, पत्तले बिछा, अपने नीचे जूतोंको छिपाकर जीमनेसे, जूते पहिन कर जीमना बहुत बुरा हो गया? और दादा आज अँग्रेजी फारसी भी नहीं पढ़े हुए होते तो उन्हें पाँच सौ रुपये मासिक कभी नहीं मिलते।

झमकू—पण लुगायाँने कसी कमाई करवा जाणो है? आपणो घर धंदो करणो आयो ने व्हियो।

शिवगौरी—मगर घर धंधा भी तो बिना पढे ठीक नहीं आता है।

झमकू—व्हा ओ ! व्हा ! थॉ कीदो घर धंदो ! म्हूँ भणी नी हूँ जणीऊँज तो सब काम कर लूँ। भणवावालाने तो बॉच-वाऊँ छुट्टी नी मिले, फेर धंदो कदी करे।

शिवगौरी—खैर । अब दादाभाईने लिखा है, वह काम करोगी या नहीं ?

झमकू—और कई लिख्यो है ?

शिवगौरी—यही कि एक तो ये जेवर उतार दो, दूसरे पढ़ना प्रारंभ करो। यदि ऐसा नहीं करोगे तो वे नाराज हो जायँगे।

झमकू—(क्रोधसे) चूल्हामें जाय थाणो भणणो। म्हारे भणने कई रॉड वणणो है ? म्हारे ऐवात कायम रेई तो सनी घाना व्हेई। म्हारे भणीने ऐव्हात (सौभाग्य) नी खोवणो। गेणारी वात घड़ी घड़ीमें कई को हो। घणो जोर तो थाणा घररा गेणा पे है के ? यो लो थाणो गेणो (एक दो जेवर उतार कर फैक देती है। और जाती हुई कह जाती है) म्हारा वापरा दीदा गेणा पे तो थाणो कई जोर नी है। (पट परिवर्तन)

दृश्य दूसरा

(झमकू और उसकी माँ मूरी।)

झमकू—(डसूके भरती हुई) ए म्हारी मॉ ! अबे कई करूँ रे ! (बोलती बोलती मूरीकी गोदमें मुँह ढके रोने लगती है।)

भूरी—(उसकी पीठ पर हाथ फेरती हुई, प्यारसे) कई व्हीयो बेटी, आज यूँ रोवे क्यूँ है ?

झमकू—(कडके मोडती हुई) सत्या नाश जाय अणी रॉडरो ! अणीज हीकाई हीकाईने वणॉने बेराजी कर दीदा है।

भूरी—(साश्चर्य) कई जमाई थाराऊँ बेराजी व्हे गिया है ?

झमकू—अणी लुची रॉडरीज सब करतूतॉ है।

भूरी—हाँ बेटी, सॉची वात है। जमाई तो म्हारो होना हरीको है। थारी देराणी महा खोडीली है। वणीज जमाईरा कान भर्या व्हेई। मरद माणस है। लुगायॉरी वातॉ वी कई हमजे ? रोव मती, म्हूँ हमजाई देऊँगा।

झमकू—नी ए मॉ ! नी ! वणा तो हठ पकड लीदी है, अने केवे है के शिवगौरीरा केवा परमाणे भणेगा अने चलेगा तो म्हूँ थाराऊँ बोलूँगा, नहीं तो थारे म्हारे कई लेणो देणो नहीं।

भूरी—(आवेशसे) हैं ! कई कियो ? थारे म्हारे लेणो देणो नी।

झमकू—(एक निश्वास छोडकर) हाँ ! ऑ ! ऑ !

भूरी—(गुस्सेसे) ओहो ! म्हूँ कई बोलूँ नहीं जणीऊँज अतरी वातॉ व्हे है के ? चाल म्हारी साथे। म्हूँ देखूँगा देखॉ किस तरे थाराऊँ नी बोले है ? म्हूँ तो केऊँ, बाई जवान छोरा है, जावा दो; ने ई तो माथापेड्ज चढ गिया है। (भूरी झमकूको लेकर जानेको तैयार होती है। झमकूकी सखी कमला प्रवेश करती है। दोनों एक दूसरेसे गले मिलती हैं।)

कमला—(हँसते हुए) क्यो बहिन, आज माँ बेटियाँ कहाँ चढ़ाई करने चली हो ? (दोनों कमलाकी बोली और पहिनावको देख कर साश्चर्य बोलीं —)

वयूँ कमला, थूँ पण किरस्टान व्हेगी के ?

कमला—हाँ, मैं तुम्हें किरस्टान ही मालूम देती हूँ। परन्तु बहिन सच पूछो, तो अब मैं वास्तविक हिन्दू रमणी हुई हूँ। पहिले मैं बिलकुल जँगली थी। तुम्हारी तरह मेरे घरमें भी नित्य झगड़े रहा करते थे। मेरी माँ कई बार मेरे स्वामीसे लड़ी; परन्तु उस लड़ाईका उल्टा परिणाम हुआ। एक दिन मैं दुखी होकर शिवगौरीके घर चली गई। शिवगौरी अपने स्वामीके साथ आनंदसे बैठी बातें कर रही थी। दोनोंने मेरा अच्छा सत्कार किया। फिर उसके पति तो थोड़ी देरसे अपने काम पर चले गये। मैंने उससे पूछाः–" क्यो बहिन तुम्हारे पति तुमसे कभी नाराज होते है ? " उसने कहाः–" नहीं। " मैंने पूछाः–" क्यों ? " उसने उत्तर दियाः–" मैं प्रत्येक काम अपने स्वामीकी आज्ञानुसार करती हूँ। खाली समयमें उनके साथ बैठकर देशकी समाजकी और धर्मकी बाते किया करती हूँ। इसलिये वे सदा ही मुझसे प्रसन्न रहते हैं। " क्या तेरे पतिके साथ तेरा झगडा होता है ? तेरे पति तो बड़े ही सीधे पुरुष हैं। " मैंने कहाः–" हाँ होता है। " उसने पूछाः–" क्यो ? " मैंने कहाः–" वे कहते है कि तू पढ़ और मैं इन्कार करती हूँ। " फिर मैंने गिडगिडा कर उससे कहाः–" बहिन कोई ऐसा उपाय बता जिससे मेरे

स्वामी मुझसे प्रसन्न रहें।" उसने मुझे पढ़ने लिखनेके लिए कहा। इतना ही नहीं उसने पढ़ा लिखा भी दिया। मेरे पढ़ने लिखनेका हाल जानकर मेरे स्वामी बहुत प्रसन्न हुए। अब वे मुझसे कभी नाराज नहीं होते। बहिन, आजकलके पढे लिखे पढ़ने लिखनेहीसे खुश रहते हैं। अतः यदि तुम अपनी भलाई चाहती हो तो पढो, लिखो। यदि इससे विपरीत करोगी तो पछताओगी। जैसे कि मैं पहिले बहुत दिनों तक पछताती रही थी।

झमकू—आछो ब्हेन, जिस तरे थूं केगा विस्तरेई करूँगा।

(पट परिवर्तन)



बनिया

प्रथम दृश्य

स्थान—राजमहल

समय—दुपहरका

[राजा और दर्बारी बैठे हुए है। उसी समय खबर आती है कि, शत्रुओंने आक्रमण किया है। यह खबर सारे शहरमें फैल जाती है। एक बनिया हथियारोंसे लेस होकर राजमहलके दर्वाजे पर पहुँचता है। चोबदार राजाके पास जाकर नियमानुसार कोर्निसकर अर्ज करता है।]

चोबदार—अन्नदाता ! कोठारी तेजमल हुजूरके कदमोंमें हाजिर होने की अर्ज कराते है।

राजा—आने दो।

[कोठारी तेजमल दर्बारमें धीरे धीरे प्रवेश कर]

कोठारी—खम्मा घणा अन्न दाताने। (मुजरा करता है)

राजा—आओ कोठारी ! आज हथियारसे सज कर कैसे आये ?

कोठारी—गरीब परवर ! सेवक भी लड़ाईमे हुजूरके साथ चलना चाहता है।

एक सर्दार—(जरा तिरस्कारपूर्ण हँसी हँसकर) ढीला हाजी ! यहाँ तुम्हारा काम नहीं है।

कोठारी—सुनिए सर्दार साहब—

अगरचे चाल ढीली है, बलाका जोश रखता हूँ।
बजाता फर्जमें अपना, सदा संतोष रखता हूँ॥

दूसरा सर्दार—जाओ सेठ हाटमे बैठो, सौदा तोलो, लाभों है बोलते हुए कॉटेपर घडियोंकी गिन्ती करो, अपने बलाके जोशसे ग्राहकोंको ठगो, और अपने बाल बचोंको पालकर चैन की बंसी बजाओ। यह काम तुम्हारा नहीं, हम राजपूतोका है।

कोठारी—(जरा उत्तेजित होकर सिर हिलाता हुआ) सुनिए ठाकुर ! आप फक्त एक ही काम फक्त मारकाटका ही काम कर सकता है; मगर मैं

हाटमें तोल्ता सौदा, युद्धमें वीर तोलूँगा।
यहाँ पै बोल्ता 'लाभों' वहाँ 'जय अब' बोलूँगा॥
यहाँ काँटा पकडता हूँ, वहाँ तलवार पकडूँगा।
यहाँ ग्राहक ठगाता हूँ, वहाँ दुश्मन खपाऊँगा॥

दूसरा सर्दार—ओ हो ! बनिएकी जात और यह दिमाग !

कोठारी—ठाकुरों, बनियेकी जातको न ललकारो। इस कौमकी कृपासे सैकडो राज बने हैं और इसकी नाराजगीसे सैकडों मिट्टीमें मिल गये हैं।

मुसद्दी है कचेरीमें, हाटमें बैठ बनिया है।
युद्धमें शेर बब्बरसा, ये ऐसी जात बनिया है॥

राजा—कोठारी खबर्दार! होश ठिकाने रखकर बात कर। जानता नहीं कहाँ और किसके सामने बोल रहा है?

कोठारी—हुजूर जानता हूँ। दर्बारमें अपने राजाके सामने खडा सर्दारोंसे बोल रहा हूँ। मगर मुझे फिर भी कहने दीजिए कि जहाँ बनिया नहीं है, वहाँ कल्याण नहीं है। बनियेकी बुद्धि राजपूतकी तलवार और बनियेकी हाट जिस राजमें न होंगे वह राज कभी, न फलेगा फूलेगा और न टिकेहीगा, वह नष्ट हो जायगा।

राजा—चुप! ऐसी बे अदबी? क्या तेरी मौत तुझे बुला रही है?

कोठारी—सच कहनेसे मुझे मौतका डर न रोक सकेगा। अब वह दिन दूर नहीं है कि जब मुसद्दीपन, बहादुरी और बनियापन तीनों गुण जिस कौममें होंगे वही कौम दुनियापर राजकरेगी दूसरी कौमें उसकी दास बनकर रहेंगी।

राजा—(सर्दारोंसे) इस नालायकको कैद कर लो। (सर्दार कैद करनेके लिए आगे बढते है।)

कोठारी—(तलवार खींचकर) खबर्दार! जान प्यारी हो तो आगे कदम न बढाना। (राजासे) महाराज! हुजूरके चरणोंमें सिर झुकाता हूँ। आप सजा दीजिए। (सिर झुकाता है)

एक वृद्ध सर्दार—महाराज इसे युद्धमें साथ ले चलिए। अगर बहादुर होगा तो हमारा पक्ष सबल होगा और अगर कायर हुआ तो आप ही दुश्मनोंके हाथसे मारा जायगा।

राजा—अच्छी बात है। (पट परिवर्तन)

दूसरा दृश्य ।

स्थान—युद्ध भूमि ।

[युद्ध हो रहा है । कोठारी दोनों हाथोंसे तल्वार चला रहा है । उसकी तल्वारसे अनेक कट कट कर गिर रहे है । राजाके पास जब वह लडता लडता पहुँचता है तब यह कहता है]

कोठारी—महाराज

चमकती है ये बनिएकी, असि कुछ ध्यान तो कीजे ।
वजन करती बराबर है, जरासा देख तो लीजे ॥

[उसी समय राजाकी तलवार लडते हुए गिर पडती है । उस पर एक शत्रु आघात करता है । झपटकर कोठारी उस आघातको रोकता है । खुद गहरी चोट लगनेसे गिर पड़ता है । शत्रु भी गिर पडता है । राजा उसके पास बैठ जाता है]

राजा—मैने तुम पर अन्याय किया, इसका मुझे दुःख है ।

कोठारी—अपने राजाका प्राण बचा सका इसका मुझे संतोष है ।

राजा—कोठारी ! मैं तुम्हारा ऋणि हूँ । जो मॉंगोगे वही दूँगा ।

कोठारी—महाराज ! मे यही माँगता हूँ कि, प्रजाको जाति पाँतिके भेद विना वीर वनाइए । प्रजामे एक भी मनुष्य ऐसा न रहे जिसे आप युद्ध भूमिमें न भेज सकें । केवल राजपूतोंके बलपर ही देश न बचेगा । सारी प्रजा ही उसे बचा सकेगी ।

राजा—कोठारी तुम्हारी इच्छा पूरी होगी । इतना ही नहीं, मे तुम्हींको इस कामका भार सौंपता हूँ । जो मदद चाहिए वह राजकी तरफसे तुम्हें मिलेगी । (पट परिवर्तन)

प्रहसन

पात्र

हजामत अली—नई सभ्यता के पीछे दीवाना, बना हुआ बे पढ़ा रईस।

कल्लू—हजामत अलीका नौकर।

(रमजान, हुसेन वगैरा खुशामदी लोग)

स्थान—हजामत अलीकी बैठक

समय—शामका

[खुशामदी बैठे है। हजामत अली इंग्लिश पोशाकमें अकड़ता हुआ आता है। खुशामदी उठते हैं और झुककर सलाम करते है।]

हजा—आ गये साहब बहादुर आ गये! बॉय! बोय बोय! कम्बख्त सुनता ही नहीं है। अबे ओ कल्लू?

कल्लू—जी हुज्जू मियॉ!

हजामतअली—चुप! यहॉ कौन हिज्जू मियॉं है बे? सौ वार तोतेकी तरह पढ़ाया तब भी वही। हमारा नाम है—' मियॉ हजामत अली खॉ साहब बहादुर!' समझा ओयू फूल

खुशामदी—बेशक! वल्लाह! क्या अच्छा ,नाम है। नाम रखनेवालेने कमाल किया है।

हजामत—क्योंजी इंडिअन लोग सिंगिंग करता है या Braying (रेंकना) करता है।

खुशामदी—बिलकुल रेंकना। झटसे आऽऽऽईऽऽऽ करने लगते हैं।

हजा०—ओ यस तुमने रिमार्कके लायक बात कहा है। सुनो–

Twinkle twinkle little star,
How I wonder what you are!

४ खुशामदी—सुभान अल्लाह! सुभान अल्लाह!

५ खुशामदी—क्या बेफायदा बक रहा है। बोलना चाहिए हीअर! हीअर!

हजामत—ओ यस तुम रूल समझता है।

१ खुशामदी—हुजूर नाच भी बहुत बढिया करते हैं।

२ खुशा०—अजी नाच नहीं बॉल कहो।

३ खुशा०—वाह कमाल है!

४ खुशा०—अच्छे अच्छे नाचनेवाले हार मानते हैं।

५ खुशा०—हुजूर बदा अबतक इस नजारेसे महरूम है।

हजामत—आइ सी तुम देखना मँगता है?

६ खुशा०—अगर हुजूरकी नवाजिश हो।

हजाम०—ऑल राइट देन। (all right then)

(नाचनेको खडा होता है)

१ खुशा०—मगर हुजूर बगैर लेडीके?

हजा०—ओह! आइ बिलकुल फॉरगेट (forget)

२ खुशा—बगैर लेडीके रौनक नहीं आती।

३ खुशा०—यही तो इस नाचकी खूबी है।

कल्लू—हुजूर मै बताऊँ तरकीब?

हजा०—अच्छा वॉय बोलो।

कल्लू०—तो आज लेडी नहीं लेडा ही सही हुजूर?

९ खुशामदी—हीअर हीअर, इसे कहते हैं सूझ।

हजा०—बहुत वेरी गुड (very good) कहा। आओ मियाँ रमजान! तुम और हम दोनों।

१ खुशा०—जी बंदा तो इस हुनरको नहीं जानता।

हजा०—वेल हुसेन तुम?

२ खुशा०—ना साहब मेरे बापने यह हुनर नहीं सिखाया।

३ खुशा०—हुजूर हम लोगोंमेसे कोई भी ऐसी किस्मत वाला नहीं है।

कल्लू—अगर साहबका हुक्म हो तो कल्लू आज बॉयसे लेडा बन सकता है।

हजा०—हीअर हीअर डेनियल कमट्ट द (the) जजमेंट! अच्छा तब आओ।

[दोनों नाचते हैं। और नाचकर जाते है।]



महर्षि गौतमका आश्रम

समय—सवेरा।

स्थान—बागीचा।

[कुछ तपस्वियोंके लड़के लड़कियाँ खेल रहे हैं। चिरजी शर्मा-का प्रवेश।]

चिर०—यहाँ कौन कौन है?

तपस्वियोंके लड़के लड़की—अजी हम लोग हैं।

चिर०—हुँ; तुम तो बड़े भारी लोग हो! जाओ।

(लड़के लड़की जाना चाहते हैं)

चिर०—अच्छा ठहरो, तुम्हीं लोगोंसे पूछना होगा।

लड़के लड़की—क्या?

चिर०—तुम बता सकते हो, मै क्या करूँ? एक बड़े भारी सन्देहमे पड गया हूँ।

१ लड़का—क्या सदेह है महाशय?

चिर०—सन्देह यह है कि धमसे गिरता है या गिरनेपर धमाका होता है?

२ लड़का—सचमुच ही यह तो बड़े भारी सदेहकी बात है।

३ लड़का—तो यह आप महर्षिसे क्यों नहीं पूछते?

चिर०—पूछा था।

३ लड़का—महर्षि क्या कहते हैं?

चिर०—महर्षि कुछ भी नहीं कहते।

२ लडका—और आप?

चिर०—मेरी यही राय है।

४ लडका—तो अब निर्णय कैसे होगा?

चिर०—यही तो गड़बड़ है। दर्शनशास्त्रके किसी भी माम-लेका निर्णय नहीं होता। अरे तुम लोग दर्शनशास्त्रकी बातें सुनोगे?

सब लड़के लड़की–कहिए, सुनें।

(चिरजीव गाता है।)

वाह कैसी दुनिया मजेदार रगीन।
बातें सब इसकी कैसी है सगीन॥

दिनके पीछे रात, रातके पीछे दिनका सीन।
एकके ऊपर दो तब बारह, एक और दो तीन॥ वा०॥
गर्मीमें है बेढब गर्मी सर्दीमें है ठडा।
जच्चा देती बच्चा देखो, मुर्गी देती अडा॥ वा०॥
गऊ पुकारे "बॉ बॉ" भैया, 'हुआ हुआ हो' स्यार
'कॉय कॉय कॉ' कौआ करता, रहनाजी हुशियार॥ वाह०॥
हाथीके ऊपर है हौदा, घोडे पर है जीन।
धनियोंके सिर चिन्ता डाकिन, दीन बजाते बीन॥ वा०॥

२ लडका—वाह, यह तो बड़ा भारी दर्शन शास्त्र देख पडता है!

चिर०—क्यों! सब बातें ठीक है कि नहीं?

सब लड़के लड़की०—बिलकुल ठीक हैं, खूब ठीक है।

चिर०—मैंने ही सोच सोचकर इनका आविष्कार किया है।

२ लड़का०—सच ? यह सब आपके ही आविष्कार हैं ?

[विश्वामित्रका प्रवेश ।]

विश्वामि०—(चिरजीवसे) यही क्या महर्षि गौतमका तपोवन है ?

चिर०—(*विश्वामित्रको तलेसे ऊपर तक देखकर*) आपको क्या जान पड़ता है ?

विश्वा०—यही क्या महर्षिका आश्रम है ?

चिर०—नहीं तो क्या यह ताड़ीकी दूकान जान पड़ती है ?

विश्वा०—तनिक सीधी भाषामें उत्तर दो तो क्या कुछ हानि है ?

चिर०—और नहीं देनेसे ही क्या कुछ हानि है ?

विश्वा०—महर्षि कहाँ हैं ?

चिर०—क्यों, उनकी खोज क्यों करते हो बाबा ? क्या कुछ प्रयोजन है ?

विश्वा०—हाँ, प्रयोजन है; क्या वे इस समय आश्रममें हैं ?

चिर०—ना, वे बाघका शिकार करने गये हैं।

विश्वा०—बड़े ढीठ देख पड़ते हो ! तुम कौन हो ?

चिर०—मैं भी पूछता हूँ, तुम कौन हो ?

विश्वामित्र—मैं महर्षि विश्वामित्र हूँ।

चिर—मैं चिरंजीव अर्शी हूँ।

विश्वा०—अर्शी कैसे ?

चिर—मुझे अर्शरोग(ववासीर) हो गया है। इससे अधिक कुछ नहीं हुआ। लेकिन अर्श इतना अधिक हो गया है कि महर्षि होनेमे अव अधिक देर नही है।

विश्वा०—मेरे साथ दिल्लगी करते हो ?

चिर०—ना, दिल्लगी करनेका नाता तो अभीतक नही जुड़ा।

विश्वा०—देखो ! मुझे देखते हो ?

चिर०—देखता नहीं हूँ तो क्या; देख तो रहा ही हूँ।

विश्वा०—क्या देख रहे हो ?

चिर०—एकदम नव कार्तिकेय ! एकदम मदन-मोहन ! शरीर गोलाकार है। मस्तक लंबाईकी अपेक्षा चौडा अधिक है। चेहरेका रंग दाढ़ीके रंगसे टक्कर ले रहा है।

विश्वा०—देखो ! मेरे मनमे धीरे धीरे क्रोध पैदा हो रहा है !

चिर०—सो अपने बारेमें ऐसा बखान सुनकर क्रोध न पैदा होगा तो क्या प्रेम पैदा होगा ?

विश्वा०—शाप देकर तुमको भस्म कर दूँ क्या ?

चिर०—घूँसे मारकर तुमको रूईकी तरह धुनक डालूँ क्या?

विश्वा०—ना, देखता हूँ—भस्म ही कर देना पड़ा। हर हर हर हर। (टहलने लगते है।)

चिरजीव—राम राम राम राम राम (दूसरी ओर टहलने लगता है।)

विश्वा०—राम राम क्यों कर रहा है ?

चिर०—सुना है, रामका नाम लेनेसे भूतका भय नहीं रहता।

विश्वा०—मैं क्या भूत उतार रहा हूँ ?

चिर०—नहीं तो क्या व्याहके मंत्र पढ रहे हो ?

विश्वा०—तू बडा ही मूर्ख है! जा! (गला पकडकर धक्का देते हैं।)

चिर०—अच्छा! तो फिर आजा–देखूँ। (विश्वामित्रको मारने लगता है।)

[गौतमका प्रवेश।]

गौत०—यह क्या चिरंजीव! यह क्या कर रहे हो ?

चिर०—(मकपकाकर) जी कुछ नहीं, इन महर्षिके साथ जरा जोर कर रहा था।

गौतम०—(विश्वामित्रसे) आप कौन हैं ?

विश्वा०—मैं महर्षि विश्वामित्र हूँ।

चिर०—सुन लिया गुरुजी! महर्षिका ऐसा ही चेहरा होता है ? आजकल जिसे देखो वही महर्षि हैं।

विश्वा०—आप ही क्या गौतम ऋषि हे ?

गौतम०—इस दासहीका नाम गौतम है।

चिर०—ऐं! दासके क्या मानें ?

गौतम—चिरजीव! इनके चरणोंकी रज मस्तकमें लगाओ। ये एक अत्यत तेजस्वी महर्षि हैं।

चिर०—क्या ? इसीके लिए तो इनके साथ मेरा झगड़ा हो रहा था।

गौतम—यह अपने तेजके बलसे महर्षि हुए हैं। मैं इनके आगे कीटाणुकीट हूँ। तुमने इनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया है। घुटने टेककर इनसे क्षमाकी भिक्षा माँगो।

चिर०—हाँ! (विश्वामित्रकी पीठपर हाथ रखकर उन्हें सिरसे पैर तक देखता है और फिर स्नेहके भावसे दो तीन बार पीठ ठोकता है।) महाशय, कुछ बुरा न मानियेगा (प्रस्थान)

गौतम—(विश्वामित्रसे) महर्षिजी! यह मेरा शिष्य है। इसकी ढिठाई माफ कीजिएगा। इसका हाल मैं फिर आपसे कहूँगा। इस समय दया करके मेरे आश्रममें पधारिए। नहीं जानता, किस पुण्यके बलसे आज सवेरे ही आप जैसे महात्मा साधु पुरुषके दर्शन प्राप्त हुए।

विश्वा०—(स्वगत) इतनी नम्रता! (प्रकट) चालिए।

(दोनोंका प्रस्थान)



महाराज नंद और चाणक्य

स्थान—महाराज नन्दका प्रमोद उद्यान।

समय—रात्रि।

[महाराज नन्द, और पारिषद गण (दरबारी) बैठे हैं। चाणक्य आता है।]

चाणक्य—महाराज !

१ पारिषद—हैं! कौन है? बला है।

२ पारिषद—ए चान्द ! तुम किस आकाशसे उतरे हो?

३ पारिषद—क्या तुम नाचना जानते हो?

नन्द—तुम कौन हो?

चाणक्य—मैं ब्राह्मण हूँ।

१—पारिषद—जाओ, यहाँ कुछ नहीं मिलेगा।

२—पारिषद—स्त्री, गौ, ब्राह्मण इनसे हम कुछ नहीं कहते। चलो हटो!

३ पारिषद—ब्राम्हणकी भी क्या ही अहदी जाति है।

नन्द—तुम इस समय हमारे पास क्यों आये हो?

चाणक्य—महाराज, मैं आपके मातामहके श्राद्धमें पुरोहिताई करने आया था, कुछ भीख माँगने नहीं आया था।

नन्द—तो तुमसे भी कौन यहाँ आनेकी प्रार्थना करने गया था महाराज?

चाणक्य—तुम्हारा मन्त्री।

नन्द—मन्त्री तुम्हें बुला लाया है तो जाओ, उसीके पास जाओ।

चाणक्य—तुम्हारे सालेने हमारा अपमान किया है।

१ पारिषद—वे तो करेंगे ही।

२ पारिषद—सभी साले अपमान करते हैं।

३ पारिषद—सालेको सात खून माफ है। उनकी बात मत करो।

चाणक्य—(पृथ्वीपर जोर से पैर पटक कर) चुप रहो, कुत्तो।

(पारिषद लोग भयभीत होकर स्तब्ध हो रहते हैं।)

नन्द—उनके द्वारा अपमानित होनेसे क्या हुआ महाराज जानते ही हो वे मगध-सम्राटके साले हैं।

[वाचालका प्रवेश।]

वाचाल—अरे ब्राह्मण, मुझे क्या तूने मामूली आदमी समझ रक्खा है? सुन, मै महाराजका साला हूँ, महाराजके पिता मेरे पिताके समधी हैं, महाराज मेरे भगिनी-पति है, और महाराजके लड़के मेरे भानजे हैं। मुझे तूने मामूली आदमी समझ रक्खा है, ब्राह्मण!

नन्द—जाओ, यहाँसे चले जाओ, यहाँ हम ब्राह्मणकी शिकायत सुनने नही आये है।

चाणक्य—महाराज, सुनोगे ही क्यों? आज ब्राह्मण वह ब्राह्मण नही है। इसीसे आज क्षत्रिय सहजमें ही उसकी सम्पति निःशंक होकर लूटता है और निःशंक होकर उसे लाल

लाल ऑखे दिखाता है। यदि आज ब्राह्मणका वह तेज होता, तो अपने सामने उसका क्रोधसे लाल मुख देखते ही तुम सिंहासन समेत मिट्टीमें मिल जाते; पृथ्वीमें धँस जाते। किन्तु महाराज, निश्चय जानिये अब भी वह प्रताप बिल्कुल लुप्त नहीं हो गया है।

वाचाल---अच्छा ब्राह्मणका प्रताप एक बार देखा और तू भी एक बार देख ले कि महाराजके सालेका प्रताप कैसा होता है!

चाणक्य---देखूँगा, और महाराज तुम भी देखोगे-यदि इसका प्रतिविधान न करोगे।

नन्द---ऐ भिखमगे, तू यहाँ खडा हुआ लाल ऑखें दिखाता है, जा दूर हो यहाँसे।

चाणक्य---हे कलिकालके ब्राह्मण! कान खोलके सुन! क्षत्रिय ब्राह्मणसे कहता है कि, दूर हो यहाँसे, तो भी ऑधी नहीं उठती, अग्निकी वृष्टि नहीं होती और न पृथ्वी ही कॉप उठती है। सब स्थिर है। कैसा आश्चर्य है!

नन्द---गर्दनिया देकर निकाल दो।

चाणक्य---भगवति वसुन्धरे! दो टूक हो जाओ!---ब्राह्मण! जड तुल्य खडा हुआ और क्या देख रहा है। संसार तेरी हँसी करता है। ऐश्वर्य वालोंके द्वारो पर भिक्षा माँगते फिरते हुए तुझे लज्जा नहीं आती? यदि शक्ति हो तो उठ! कपिलके तेजकी अग्निदृष्टि करके नीचका मद चूर करदे! और यदि यह नहीं हो

सकता हो तो ए क्षुद्र ! ओ घृणित ! अरे पददलित ! अरे महत्व-के कंकाल ! अब उजेलेमें मुख न दिखलाना, रसातलको चला जा !

नन्द—क्या हम लोग यहॉ पर एक पागलके उन्मादको सुनने आये है ? वाचाल, इसको वाहर निकाल दो ।

वाचाल—(चाणक्यकी शिखा पकडकर खींचते हुए) निकल जा भिक्षुक ।

चाणक्य—क्या ?—अच्छा ! जाता हूँ ! जाता हूँ ! किन्तु जानेके पूर्व कहे जाता हूँ कि महाराज नन्द ! तुम इसी कलिकाल-में फिर एक बार क्षीण और नष्ट प्रायः ब्राम्हणके प्रतापको देखोगे । यदि नन्दवंशका नाश न करूँ तो मै चणककी सन्तान नही । अव तुम्हारे रक्तमे रँगे हुए हाथोंसे ही इस शिखाको बॉधूँगा । तब तक यह शिखा खुली रहेगी । यही प्रतिज्ञा करके मै जाता हूँ । यह याद रखिएगा महाराज ! और यह मेरी भविष्यद्वाणी है कि एक दिन इसी भिक्षुकके पैरोंपर पडकर तुम्हें अपने प्राणोकी भिक्षा मॉगनी होगी । परन्तु मै वह भिक्षा तुम्हें न दूँगा । उसी दिन तुम इस ब्राम्हणकी शक्ति, ब्राम्हण-के प्रतिभाका प्रभाव, ब्राम्हणकी प्रतिज्ञाका बल, ब्राम्हणके अभिशापका तेज, ब्राम्हणके क्रोधका विक्रम, और ब्राम्हणके दुर्जेय प्रतापको देखोगे । (प्रस्थान)

नन्द—यह कौन था, और वात क्या हुई थी ?

वाचाल—और क्या होता, यह मूर्ख जानवर पुरोहिताई करने आया था और इधर मैं एक दूसरे पुरोहितको ले आया था। मैंने इससे कहा,—तू उठ जा। यह नहीं उठा, तब मैंने गर्दना देकर निकाल दिया। मेरा जो अपराध है वह यही है।

नन्द—तुमने ब्राह्मणको गर्दना देकर क्यों निकाला?

वाचाल—मैं महाराज का साला हूँ—

१ पारिषद—और उसपर तुर्रा यह कि महाराज इनके बहनोई हैं॥

२ पारिषद—और इनके बाप महाराजके ससुर होते हैं—

३ पारिषद—अच्छा किया, खूब किया।

नन्द—सारा मजा किरकिरा कर दिया, रहने दो बस।

१ पारिषद—बुराई क्या हुई, एक नया तमाशा हो गया।

२ पारिषद—भाई इसने गाया खूब।

१ पारिषद—जो हो श्राद्धमें इतना आनन्द कभी नहीं आया। हाँ लड़कीके विवाहमें तो इस प्रकारका नाचना गाना हो जाता है।

२ पारिषद—वह भी एकका श्राद्ध ही है।

१ पारिषद—सो कैसे?

२ पारिषद—श्राद्ध होते है तीन प्रकार के। यथा,—एक बापका श्राद्ध, इसको कहते हैं श्राद्धः, दूसरा लड़कीका श्राद्ध, इसको कहते हैं विवाह, तीसरा रुपयोंका श्राद्ध, इसको कहते हे मुकदमा।

३ पारिषद—और भूतके बापका श्राद्ध, उसको क्या कहते हैं?

४ पारिषद—यही जो यहाँ हो रहा है।

शाहजादा खुर्रमकी उदारता



पात्र

महावतखाँ—राणा प्रतापसिंहके भाई सगरसिंहका मुसलमान बना हुआ लड़का।

सत्यवती—सगरसिंहकी कन्या।

अरुणसिंह—सत्यवतीका पुत्र।

हिदायत अली—मुगल फौजका एक सेनापति।

शाहजादा खुर्रम—अकबर बादशाहका लड़का।

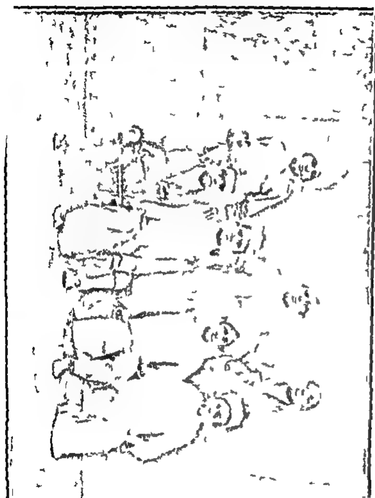
सिपाही चारणियाँ आदि।

[नोट—अगर सत्यवती और चारणियाँ बननेवाली लड़कियाँ न हों तो उनकी जगह पुरुष पात्रोंकी योजना करलेनी चाहिए। भाषणमें संबोधनमें भी यथोचित परिवर्तन कर लेना चाहिए।]

स्थान—मेवाड़का पहाड़ी रास्ता। समय—सन्ध्या।

[सत्यवती, अरुणसिंह और कई चारणियाँ गा रही हैं]

१—टूटा है सुखस्वप्न हमारा, तार बीनके टूटे है।
गावें क्या मेवाड़देशके, भाग देख लो फूटे है॥
इस मेवाड़-शैलकी शोभा, सत्यानाश हुई सारी।
आसमानसे मानों इस पर, आकर वज्र गिरा भारी॥
अब मेवाड़-शिखर पर झंडा, लाल नहीं फहराता है।
दशा देख आँखोंके आगे, अंधकार छा जाता है॥



शाहजादा खुर्रमकी उदारता



पात्र

महावतखाँ---राणा प्रतापसिंहके भाई सगरसिंहका मुसलमान बना हुआ लड़का।

सत्यवती---सगरसिंहकी कन्या।

अरुणसिंह---सत्यवतीका पुत्र।

हिदायत अली---मुगल फौजका एक सेनापति।

शाहजादा खुर्रम---अकबर बादशाहका लड़का।

सिपाही चारणियाँ आदि।

[नोट---अगर सत्यवती और चारणियाँ बननेवाली लडकियाँ न हों तो उनकी जगह पुरुष पात्रोंकी योजना करलेनी चाहिए। भाषणमें सबोधनमें भी यथोचित परिवर्तन कर लेना चाहिए।]

स्थान---मेवाडका पहाड़ी रास्ता। समय---सन्ध्या।

[सत्यवती, अरुणसिंह और कई चारणियाँ गा रही हैं]

१---टूटा है सुखस्वप्न हमारा, तार बीनके टूटे है।
गावें क्या मेवाड़देशके, भाग देख लो फूटे है॥
इस मेवाड-शैलकी शोभा, सत्यानाश हुई सारी।
आसमानसे मानों इस पर, आकर वज्र गिरा भारी॥
अब मेवाड-शिखर पर झडा, लाल नहीं फहराता है।
दशा देख आँखोंके आगे, अधकार छा जाता है॥

—पक्षीगण इसकी कुंजोंमें गीत नहीं अब गाते हैं।
फूलोंका रस पीनेको अब, नहीं भ्रमरगण आते है ॥
शशि भी शोभाहीन हुआ है, मलय वायु नहिं बहती है।
छाई दोनों तीर उदासी, नदी हो शुष्क रहती है ॥ अब० ॥
-जगलमें मगल नाहिं होता, चहल पहल नहिं गाँवोंमें।
नरनारीगण फिरें बिलखते, फँसे हुए विपदाओंमें ॥
राजपूत वीरोंकी अब है, नहीं चमकती तलवारें।
सुन्दरियाँ भी डरके मारे, नहीं वसन भूषण धारें ॥ अब० ।
३—तिमिरावृत्त मेवाड हुआ है, सुख सर्वस्व गँवाया है।
चारण-गणने यश गाकर बस, धीरज उसे धराया है ॥
चला जाय सुख उसका सारा, किन्तु कहानी रह आवे।
गूँज उठे मेवाड शून्य यह, जब चारण इसको गावे ॥अ०॥

[तीन सैनिकोंके साथ हिदायत अलीका प्रवेश]

हिदायत०—तुम कौन हो ?

सत्य०—मैं चारणी हूँ।

हिदा०—तम गलियों और रास्तोंमें यही गाना गाती
ती
... है।
यह ...

आ

(सिपाही आगे बढकर अरुण पर वार करते है अरुण उनसे लडता है ।)

सत्य०—शाबाश बेटा ! अपनी माताकी रक्षा करो ।

(एक मुगल सिपाही घायल होकर गिर पडता है)

सत्य०—शाबाश बेटा ! प्राण रहते अस्त्र न छोडना । ऐसा ही चाहिए ! वाह कैसा आनन्द है !

[हिदायतअली अरुण पर स्वय आक्रमण करता है । अरुणसिंहको दोनों सिपाही और हिदायतअली घेर लेते हैं । अपने पुत्रकी मृत्यु निकट समझकर सत्यवती थोडी देरके लिए आँखें बन्द कर लेती है । इतनेमें महाबतखाँ कई सिपाहियोंके साथ वहाँ आ पहुँचते हैं ।]

महाबत०—हिदायतअली ! ठहर जाओ । (सब लोग लडना छोड देते हैं ।)

महाबत०—हिदायतअली, तुम्हे शर्म नहीं आती ! एक लडके पर दो दो जवान मिल कर वार कर रहे हैं, और ऊपरसे तुम भी उनकी मदद करते हो ! छिः ! (अरुणसे) बेटा ! तुम अपनी जानकी परवा न करके अपनी माँको बचा रहे थे तुम धन्य हो ! प्राणोंके उत्सर्ग करनेका मार्ग यही तो है ! जीते रहो !

[सत्यवती इतनी देर तक चुपचाप बडे गौरव और आनन्दसे अपने पुत्र अरुणकी ओर देख रही थी । अब वह महाबतखाँकी ओर दो कदम आगे बढती है और फिर पीछे हटकर सिर झुका लेती है । महाबतखाँ सत्यवतीकी ओर देखने लगते है ।]

सत्य०—मुगलोंकी जय हो! जितने दिनों तक मेवाड़ स्वाधीन था, उतने दिनों तक हम लोगोंने युद्ध किया। पर जब मेवाड़ने सिर झुका कर मुगलोंका अधिकार मान लिया, तब मुगलोंके साथ हम लोगोंका कोई झगड़ा नहीं है। लेकिन क्या इसी लिए हम लोग रो भी न सकेंगे? सिपाही साहब! दुनियामें सभी लोग अपनी माँको चाहते हैं, तब अभागे मेवाड़वासी ही उस पर प्रेम करना क्यों छोड़ दें?

हिदा०—नहीं, तुम यह गीत न गा सकोगी।

अरुण०—हम लोग गावेंगे, देखें कौन रोकता है; गाओ माँ!

हिदा०—अगर तुम लोग यह गाना गाओगे, तो कैद कर लिये जाओगे।

सत्य०—अच्छी बात है, आप हम लोगोंको कैद कर लीजिए। हम लोग आपके अँधेरे कैदखानेमें ही बैठे बैठे अपने दुःखका यह गीता गावेंगे। गाओ बेटा!

हिदा०—अच्छी बात है! अब तुम लोग कैद हो गये। (आगे बढ़ता है।)

अरुण०—(तलवार खींचकर) अगर जान प्यारी हो तो खबरदार! माँको हाथ न लगाना!

हिदा०—अरे उद्धत छोकरे! तलवार रख दे।

अरुण०—(कड़ककर) रखा लो!

हिदा०—सिपाहियो! इसे मारो।

महा०—यदि मुसलमान होनेको भी पाप मान लिया जाय तो भी यह पाप क्या इतना भयानक है कि मनुष्यके हृदयकी सारी कोमल प्रवृत्तियोंको नष्ट कर दे ! बहन, मैं जानता हूँ कि स्त्रियोंका हृदय पवित्रताका तपोवन, आत्मोत्सर्गका लीलास्थल और प्रीतिका नन्दन कानन है। पर क्या आचारके नियम इतने कठोर हैं कि वे स्त्रीके ऐसे हृदयको भी पत्थर बना दें ! एक बार थोड़ी देरके लिए तुम यह भूल जाओ कि तुम हिन्दू हो और मैं मुसलमान, तुम पीड़ित हो और मैं अत्याचारी। केवल इतना ही समझो कि तुम भी मनुष्य हो और मैं भी मनुष्य हूँ, तुम बहन हो और मैं भाई हूँ। उस बाल्यावस्थाका ध्यान करो जब तुम मुझे गोदमें लेकर घूमती थीं, और मुझे छातीसे लगाकर सोती थीं ! बहन, स्मरण करो, हम तुम वे ही मातृहीन भाई बहन हैं।

सत्य०—हे भगवान् !

महा०—बहन !

सत्य०—अब नहीं सहा जाता ! जो होना था सो हो चुका। छोटे भैया मेरे ! जाओ, मैंने तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दिये। भगवानसे प्रार्थना है कि वे भी तुम्हें क्षमा कर दें। जाओ भैया, मैं अब तुम्हें मुगल-सेनापति महाबतखाँ नहीं समझती। मेरे लिए अब भी तुम मेरे वही छोटे भाई महीपति हो। भैया, जाओ !

महा०—अच्छा बहन, अब मैं जाता हूँ। (सत्यवतीको प्रणाम करते हैं।)

महा०—बहन ! मैं तुमसे क्या कहूँ ? अब तुम्हें 'बहन' कहकर पुकारनेका अधिकार भी मुझे नहीं रह गया, तब मैं क्या कहूँ ? मुझे क्षमा करो बहन !

सत्य०—हे ईश्वर ! यह तुमने क्या किया ? मेरा छोटा भाई मुझे बहन कहकर पुकार रहा है, तो भी मैं उसे खींच कर हृदयसे नहीं लगा सकती हूँ !

अरुण०—माँ, ये कौन है ?

सत्य०—ये मुगल-सेनापति महाबतखाँ है।

महा०—बेटा, मै तुम्हारा मामा हूँ।

सत्य०—चलो बेटा, हम लोग चलें।

महा०—कहाँ जाओगी ? मुझे क्षमा करती जाओ।

सत्य०—महाबतखाँ, तुम जानते हो कि तुमने कौनसा पाप किया है ?

महा०—हाँ, मै जानता हूँ। मैंने अपने हाथसे अपने घरमें आग लगाई है और उसमेंसे उठते हुए धूएँको पैशाचिक आनन्दसे देखा है।

सत्य०—केवल इतना ही ?

महा०—और क्या ? मै मुसलमान हो गया हूँ, पर इसके लिए मै यह स्वीकार नहीं करता कि मैंने कोई पाप किया है। जिसका जैसा विश्वास हो वैसा माननेके लिए वह स्वतंत्र है। तो भी—

सत्य०—बहुत ठीक ! (अरुणसे) आओ बेटा चलें।

महा०—यदि मुसलमान होनेको भी पाप मान लिया जाय तो भी वह पाप क्या इतना भयानक है कि मनुष्यके हृदयकी सारी कोमल प्रवृत्तियोंको नष्ट कर दे! वहन, मैं जानता हूँ कि स्त्रियोंका हृदय पवित्रताका तपोवन, आत्मोत्सर्गका लीलास्थल और प्रीतिका नन्दन कानन है। पर क्या आचारके नियम इतने कठोर हैं कि वे स्त्रीके ऐसे हृदयको भी पत्थर बना दें! एक बार थोडी देरके लिए तुम यह भूल जाओ कि तुम हिन्दू हो और मैं मुसलमान, तुम पीडित हो और मैं अत्याचारी। केवल इतना ही समझो कि तुम भी मनुष्य हो और मैं भी मनुष्य हूँ, तुम बहन हो और मैं भाई हूँ। उस बाल्यावस्थाका ध्यान करो जब तुम मुझे गोदमें लेकर घूमती थी, और मुझे छातीसे लगाकर सोती थीं! बहन, स्मरण करो, हम तुम वे ही मातृहीन भाई बहन हैं।

सत्य०—हे भगवान्!

महा०—बहन!

सत्य०—अब नहीं सहा जाता! जो होना था सो हो चुका। छोटे भैया मेरे! जाओ, मैंने तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दिये। भगवानसे प्रार्थना है कि वे भी तुम्हें क्षमा कर दें। जाओ भैया, मैं अब तुम्हें मुगल-सेनापति महाबतखाँ नहीं समझती। मेरे लिए अब भी तुम मेरे वही छोटे भाई महीपति हो। भैया, जाओ!

महा०—अच्छा बहन, अब मैं जाता हूँ। (सत्यवतीको प्रणाम करते हैं।)

सत्य०—आयुष्यमान् होओ भैया ! (अरुणसे) बेटा, चलें !

हिदा०—तुम लोग कहाँ जाओगे ? मैं तुम्हें कैद करूँ

महा०—किसीकी मजाल नहीं जो मेरे सामने मेरी व बाल भी बाँका कर सके। जाओ बहन !

हिदा०—खाँसाहब ! अब आप सिपहसालार नहीं है लिए मैं आपकी बात नहीं मान सकता। इस वक्त सिपहस है शाहजादा खुर्रम।

[शाहजादाका प्रवेश।]

शाह०—अच्छी बात है ! खैर, मैं खुद हुक्म देत (सत्यवतीसे) जाओ, तुम लोग अपने घर जाओ।

हिदा०—लेकिन शाहजादा साहब ! यह औरत यों ही कर बगावत फैलाती फिरती है।

शाह०—मैं दूरसे उसका गाना सुन रहा था। वह मायूसी और गमसे भरा हुआ है !

हिदा०—शाहजादा साहब, इस तरहके गानोंसे सल्त अमनअमानमें खलल पडेगा।

शाह०—नहीं, सल्तनतके अमन-अमानकी हिफाजत की जायगी। मुगल बादशाह उसकी हिफाजत करना जान हिदायतअली, अगर वतनकी मुहब्बतके इस तरहके गानोंसे मेवाडसे ही नहीं बल्कि सारे हिन्दोस्तानसे मुगलोंकी हु जाड़ेके मौसमके एक बादलके टुकड़ेकी तरह जाती रहे तो

राणा अमरसिंह और महावतखाँ

स्थान—उदयसागरका किनारा।

समय—सन्ध्या।

[बादल घिरे हुए है। राणाअमरसिंह अकेले खडे है।]

राणा—मेवाड़का आकाश क्रोधसे गरज रहा है। मेवाड़के पहाड़ लज्जासे मुँह ढँके हुए है। मेवाड़का सरोवर क्षोभके मारे किनारोंसे टकरा रहा है। मेवाड़के कुलदेवताओंने रोपसे मुँह फेर लिया है। आज हमारे हाथों हमारे मेवाड़का--राणा प्रतापके मेवाड़का--पतन हो गया। हाय! (इधर उधर टहलेने लगते हैं।)

[महाव्रतखाँ आते है।]

राणा०—वन्दगी जनाव!

महा०—मेवाड़के राणाकी जय हो!

राणा—जनाव सिपहसालार साहव! आप खाली लहूकी नदियॉ वहाना ही नहीं जानते, वल्कि व्यंग करना भी खूब जानते है। अच्छी वात है, मेवाड़के राणाकी जय हो!

महा०—नहीं महाराज! मै व्यंग नही करता।

राणा०—तुम्हारे व्यंग करने या न करनेसे कुछ होता जाता नहीं। महावतखाँ, हम तुमसे एक वार मिलना चाहते थे।

महा०—कहिए, क्या आज्ञा है।

राणा०—तुममें विनय तो खूब है। अच्छा सुनो। हमने तुम्हें एक ऐसे कामके लिए बुलाया है जो तुम्हारे सिवा और किसीसे नहीं हो सकता।

महा०—आज्ञा कीजिए, महाराज!

राणा०—महाबतखाँ, जरा एक बार हमारी ओर देखकर बतलाओ तो सही कि तुम हमारे कौन हो?

महा०—महाराज, मैं आपका भाई हूँ।

राणा०—बहुत ठीक; और तुमने काम भी भाईके योग्य ही किया है। तुमने अपने पितामह और प्रपितामहकी भूमि मेवाड़को मुगलों द्वारा पद-दलित कराया है। तुम्हारे दोनों हाथ उसके लहूसे रँगे हुए हैं।

महा०—महाराज, मैंने बादशाहका नमक खाया है।

राणा०—सो कबसे? महाबतखाँ, जाने दो, तुमने तुम्हारा जो काम था उसे किया। उसके लिए तुमसे वादविवाद करना व्यर्थ है। जो विधर्मी हो, मुगलोंकी जूठन खानेवाला हो, उसके लिए यह काम अनुचित नहीं है। जो एक अनियम और उद्दाम स्वेच्छाचारका उद्गमन हो, उसके लिए यह काम अनुचित नहीं है। तुमने मेवाड़का ध्वस किया है। पर वह काम अभी तक पूरा नहीं हुआ। तुम्हें उचित है कि तुम उसके साथ मेवाड़के राणाका भी अन्त कर दो। यह लो, तलवार। (तलवार आगे बढ़ाते हैं)

महा०—राणा—'

राणा०—जो हम कहते हैं उसके विरुद्ध कुछ भी मत कहो। सुनो, तुम हमें मारो। इससे तुम्हारा कलंक कुछ अधिक न बढ़ जायगा। और हम तुम्हें कोई ऐसा काम भी नहीं बतला रहे हैं जो तुम्हें अप्रिय हो। हम जानते हैं कि तुम हमारा रक्त पीनेके लिए छटपटा रहे हो। तुम्हारा दाहिना हाथ हमारे प्राण लेनेके लिए आग्रहसे काँप रहा है। तुम हमारा वध कर डालो।

महा०—महाराज, महावतखाँ इतना हीन नहीं है। मैंने तलवार चलाकर और आग लगाकर मेवाड-भूमिको श्मशान अवश्य बना दिया है, पर तो भी मैंने अन्याय्य युद्ध नहीं किया है, न्याय्य युद्ध किया है।

राणा०—न्याय्य युद्ध! महावत, तुम इसे न्याय्य युद्ध कहते हो? एक छोटेसे राज्यके मुट्ठीभर सैनिकों पर इतने बड़े साम्राज्यकी विपुल सेनाकी चढ़ाई! एक चिनगारीको बुझानेके लिए समुद्रका प्रवाह! एक बालककी आत्मा पर नरकका दुःस्वप्न! और फिर भी उसे न्याय्य युद्ध बतलाते हो? जाने दो, तुम जीत तो गये ही हो, अब उसमें जो कसर है उसे भी पूरी कर डालो। यह तलवार राणा प्रतापसिंहजी मरते समय दे गये थे और कह गये थे—'देखो इसका अपमान न होने पावे।' पर हमने इसका अपमान किया है। अतः वह अपमान हमारे रक्तसे धुल कर साफ हो जायगा।

महा०—महाराज, महावतखाँ योद्धा है, जल्लाद नहीं।

राणा०—अच्छी बात है। तो फिर युद्ध कर लो। लो, हाथमें तलवार। (तलवार सँभालते हैं।)

महा०—महाराज, मैंने मेवाड़के विरुद्ध अस्त्र उठाना छोड़ दिया है।

राणा०—यह कबसे? तलवार लो, तलवार! आज मेवाड़के श्मशानपर मृत माताका शव कन्धे पर रख कर हम तुम्हें द्वंद्व-युद्धके लिए आह्वान करते हैं।

महा०—महाराज, सुनिए—

राणा०—नहीं, हम कुछ भी न सुनेंगे। भीरु! म्लेच्छ! कुलांगार! युद्ध कर। देखें, तेरी किस वीरता-किस बहादुरीके कारण सारा भारत काँपता है। मैं छोड़ूँगा नहीं। अधम! नरकके कीड़े! शैतान!

महा०—अच्छी बात है महाराज, तब लड़ ही लीजिए। (तलवार निकाल कर) सावधान! भारतमें यदि महाव्रतखाँका कोई प्रतिद्वन्द्वी है तो एक राणा ही हैं, तो भी सावधान!

(दोनों तलवारोंको सँभालते हैं।)

राणा—आज भाई भाईमें युद्ध होता है; ऐसा युद्ध संसारमें किसीने न देखा होगा। बस अब पृथ्वी पर प्रलय हो जाय!

[इतनेमें एक चारण दोनोंके बीचमें आकर खड़ा हो जाता है]

चारण—यह क्या महाराज! यह क्या—(महाव्रतखाँसे) शान्त होओ!

महा०—राणा—

राणा०—जो हम कहते हैं उसके विरुद्ध कुछ भी मत कहो। सुनो, तुम हमें मारो। इससे तुम्हारा कलंक कुछ अधिक न बढ़ जायगा। और हम तुम्हें कोई ऐसा काम भी नहीं बतला रहे हैं जो तुम्हें अप्रिय हो। हम जानते हैं कि तुम हमारा रक्त पीनेके लिए छटपटा रहे हो। तुम्हारा दाहिना हाथ हमारे प्राण लेनेके लिए आग्रहसे काँप रहा है। तुम हमारा वध कर डालो।

महा०—महाराज, महावतखाँ इतना हीन नहीं है। मैंने तलवार चलाकर और आग लगाकर मेवाड़-भूमिको श्मशान अवश्य बना दिया है, पर तो भी मैंने अन्याय्य युद्ध नहीं किया है, न्याय्य युद्ध किया है।

राणा०—न्याय्य युद्ध! महावत, तुम इसे न्याय्य युद्ध कहते हो? एक छोटेसे राज्यके मुट्ठीभर सैनिकों पर इतने बड़े साम्राज्यकी विपुल सेनाकी चढ़ाई! एक चिनगारीको बुझानेके लिए समुद्रका प्रवाह! एक बालककी आत्मा पर नरकका दुःस्वप्न! और फिर भी उसे न्याय्य युद्ध बतलाते हो? जाने दो, तुम जीत तो गये ही हो, अब उसमें जो कसर है उसे भी पूरी कर डालो। यह तलवार राणा प्रतापसिंहजी मरते समय दे गये थे और कह गये थे—'देखो इसका अपमान न होने पावे।' पर हमने इसका अपमान किया है। अतः वह अपमान हमारे रक्तसे धुल कर साफ हो जायगा।

महा०—महाराज, महावतखाँ योद्धा है, जल्लाद नहीं।

राणा०—अच्छी बात है। तो फिर युद्ध कर लो। लो, हाथमें तलवार। (तलवार सँभालते हैं।)

महा०—महाराज, मैंने मेवाडके विरुद्ध अस्त्र उठाना छोड दिया है।

राणा०—वह कबसे ? तलवार लो, तलवार ! आज मेवाडके श्मशानपर मृत माताका शव कन्धे पर रख कर हम तुम्हें द्वंद्व-युद्धके लिए आह्वान करते हैं।

महा०—महाराज, सुनिए—

राणा०—नहीं, हम कुछ भी न सुनेंगे। भीरु ! म्लेच्छ ! कुलांगार ! युद्ध कर। देखें, तेरी किस वीरता–किस बहादुरीके कारण सारा भारत काँपता है। मैं छोड़ूँगा नहीं। अधम ! नरकके कीडे ! शैतान !

महा०—अच्छी बात है महाराज, तब लड ही लीजिए। (तलवार निकाल कर) सावधान ! भारतमें यदि महाबतखाँका कोई प्रतिद्वन्द्वी है तो एक राणा ही है, तो भी सावधान !

(दोनों तलवारोंको सँभालते हैं।)

राणा—आज भाई भाईमें युद्ध होता है, ऐसा युद्ध संसारमें किसीने न देखा होगा। बस अब पृथ्वी पर प्रलय हो जाय !

[इतनेमें एक चारण दोनोंके बीचमें आकर खड़ा हो जाता है]

चारण—यह क्या महाराज ! यह क्या—(महाबतखाँसे) शान्त होओ !

राणा—हट जाओ, तुम इसमें बाधा मत डालो !

चारण—महाराज ! शान्त होइए। जो कुछ सर्वनाश होना था सो हो चुका। अब उस सर्वनाशको अपने भाईके रक्तसे रंजित न करिए। इस शोककी सान्त्वना हत्या नहीं है। इसकी सान्त्वना है फिरसे मनुष्य होना।

राणा—मनुष्य होना ! सो कैसे ?

चारण—शत्रु-मित्रका ज्ञान भूल कर, विद्वेष का त्यागकर, अपनी कालिमा और देशकी कालिमाको विश्व-प्रेमके जलसे धोकर !—गाओ बालको, वही गीत गाओ जो मैंने तुम लोगोंको सिखलाया है।

[कई बालक गाते हुए आते है। चारण भी उनके साथ गाने लगता है]

सोहनी—गजलकी धुन।

तुम सोक काहेको करो, फिरसे मनुष्य सबै बनो।
जो देस छूट्यो दुख न तौ, फिरसे मनुष्य सबै बनो।
है कोप औरनपे वृथा, जो आप अपने शत्रु हो,
है दोष अपनो मन धरो, फिरसे मनुष्य सबै बनो ॥
' वर्तमान ' आशा-रहित, जो चाहो मिटि जाय।
तो भाई भाई मिलो, करो सप्रेम सहाय ॥
' यह आपनो, ' ' यह गैर, ' तजि यह, गैरको अपनो करो।
यह जग-भवन अपनो गनो, फिरसे मनुष्य सबै बनो ॥

होय शत्रु उन्नत हृदय, जो उदार तो ताहि ।
प्रेमसहित दीजे हृदय, सबसों सदा सराहि ॥
अरु मित्र जो है धूर्त कपटी, शत्रु वह सबसे बडो ।
तुम दूर ही वासों रहो, फिरसे मनुष्य सबै बनो ॥
जग महँ द्वै सेना खड़ी, करिबेको नित जंग ।
पाप सैन्य तजि पुण्यके, दलको कीजे संग ॥
जगदीसको नित ही नवौ, दूबे स्वदेस समाज हू ।
है धर्म जित तित ही रहो, फिरसे मनुष्य सबै बनो ॥

राणा—महावत !

महा०—महाराज !

राणा—तुम्हारा कोई दोष नहीं है । हमारा ही दोष है । भाई, क्षमा करो ।

महा०—भैया, आप मुझे क्षमा करें । (दोनों गले मिलते हैं)
(पटपरिवर्तन)



राणा अमरसिंह और सत्यसिंह



स्थान—उदयपुरके महलका एक भाग।

समय—प्रातःकाल।

[राणा अमरसिंह अकेले टहल रहे हैं।]

राणा—(स्वगत, आकाशकी तरफ देखकर) यह जीवन भी एक स्वप्न है। यह आकाश कैसा नीला, स्वच्छ और गहरा है! उसके नीचे अलस, उदार और मन्थर मेघ उमड़ रहे हैं। प्रकृतिके जीवनमें समुद्रकी तरह लहरें उठती है और फिर बैठ जाती हैं। यह अलस सौन्दर्य कभी कभी बहुत ही भीम आकार धारण कर लेता है। आकाशमें बादल गरजते है। पृथ्वी पर जल बरसकर वह जाता है। और इसके बाद पहलेकी तरह सब शान्त और स्थिर हो जाते है। [गोविन्दसिंह आते है।]

राणा—कौन, गोविन्दसिंहजी! कहिए, इस समय अचानक कैसे आये?

गोविन्द०—महाराज! मेवाड़ पर फिरसे आक्रमण करनेके लिए मुगलोंकी नई सेना आई है।

राणा—आ गई? यह तो हम पहलेसे ही जानते थे कि देवल देवारीके युद्धसे इस युद्धकी समाप्ति नहीं होगी। मुगल सारा-राजपूताना जब तक उजाड़ न देंगे तब तक न मानेंगे।

गोविन्द०—महाराज! क्या कारण है कि अभी तक हम लोगों-की ओरसे कुछ तैयारी नहीं हुई?

राणा—क्यो? तैयारीकी आवश्यकता ही क्या है?

गोविन्द०—क्या अब महाराज युद्ध न करेंगे?

राणा—क्यों? युद्ध करनेसे क्या होगा?

गोविन्द०—महाराज, तब तो मुगल आकर मेवाड पर तुरंत ही अधिकार कर लेंगे।

राणा—जब उनका इतना आग्रह है तब फिर इसमें हर्ज ही क्या है?

गोविन्द०—क्या सचमुच महाराज युद्ध न करेंगे?

राणा०—नहीं; एक बार हुआ, हो गया।

गोविन्द०—किसी प्रकारका उद्यम, प्रयत्न या प्रतिवाद किये बिना ही—

राणा०—लेकिन इन सब बातोंकी आवश्यकता ही क्या है। हमारी समझमे तो यह सब व्यर्थ होगा। देवारीके युद्धमें हमारे प्रायः आधेसे अधिक सैनिक नष्ट हो चुके है। अब मुगलोंके साथ लडनेके लिए हमारे पास सेना ही कहाँ है?

[सत्यसिंह आता है।]

सत्य०—महाराज, जमीन फोडकर सेना निकल आयगी। सेनाकी आप चिन्ता न करे।

राणा—कौन? चारण?

सत्य०—हाँ महाराज ! मै चारण हूँ। मैंने सुना है कि मुगल फिर मेवाड पर आक्रमण करने आये है । पर मैं देखता हूँ कि मेवाड़ अभी तक निश्चिन्त और उदासीन है। मैंने समझा कि कदाचित् अभीतक महाराजकी निद्रा भंग नहीं हुई। इसीसे मै महाराजकी निद्रा भंग करनेके लिए आया हूँ।

राणा०—चारण ! अब हमारी युद्ध करनेकी इच्छा नहीं है। अबकी बार हम सन्धि करेंगे।

सत्य०—यह क्यों महाराज ? देवारीके युद्धकी विजयके उपरान्त सन्धि क्यों ? क्या महाराज उस गौरवके शिखरपरसे फिसल कर अपमानके गहरे गढेमें गिर जायँगे ?

राणा०—चारण ! देवारीकी विजयकी बात छोड़ दो। देवारीमें हमारी जीत अवश्य हुई है; पर जानते हो, वह जीत किस प्रकार हुई है ? उसमें हमारे लगभग आधे सैनिक मारे गये हैं। इतने वीरोंका रक्त बहा कर हमने वह विजय प्राप्त की है।

सत्य—महाराज ! यह कोई चिन्ता या दुःखकी बात नहीं है। वीरोंका रक्त ही जातिको उर्वर करता है। जिस देशमे वीर मरते है, उस देशके लिए दुःख नहीं करना चाहिए; किन्तु दुःखी उन देशोंके लिए होना चाहिए जहाँ वीर नहीं मरते।

राणा०—लेकिन हम तो देखते है कि यदि एक बार हमने और भी युद्ध किया, तो भी उसका कोई फल नहीं होगा।

इस समरका कभी अन्त न होगा। इन मुट्ठीभर सैनिकोंको लेकर विश्व-विजयी दिल्लीसम्राट्की सेनाके विरुद्ध खड़े होना पूरा पूरा पागलपन है।

सत्य०—महाराज! यदि इसको पागलपन कहते हैं तो भी इसका स्थान सारी विवेचनाओं और सारे विचारोंसे बहुत ऊँचा है। सारा विश्व इसी पागलपनके पैरों पर आकर लोटता है। स्वर्गसे एक गरिमा आकर इस पागलपनके माथे पर मुकुट पहनाती है। जिसे महाराज पागलपन कहते हैं, क्या उस पागलपनके बिना आजतक किसीने कोई बड़ा काम किया है?

राणा०—लेकिन इस युद्धका अन्तिम परिणाम निश्चित मृत्यु है!

सत्य०—महाराज! राणा प्रतापसिंहके पुत्रके लिए यह समझना कठिन नहीं होगा कि आधीनता श्रेष्ठ है या मृत्यु! क्या मरनेके भयसे हम अपना रत्न डाकुओंके हाथमें सौंप दें? रत्नसे भी कहीं बढ़कर अपने इस सर्वस्व, पूर्व-पुरुषोंके सचित और अनेक शताब्दियोंके स्मारकको क्या केवल प्राणभयसे बिना युद्ध किये ही सौंप दें? अगर वह लेना ही चाहता हो तो मर कट कर ले। और निश्चित मृत्युकी तो बात ही क्या? वह क्या सभीको एक दिन न आयगी? महाराज! उठिए! मुगल हमारे बिल्कुल पास आ पहुँचे हैं। अब स्वप्न देखनेका समय नहीं है।

राणा०—चारण! तुम कौन हो? तुम्हारे वाक्योंमें गर्जन, तुम्हारे नेत्रोंमें बिजली और तुम्हारी अग-भगीमें आँधी है।

सूर्य्यके समान प्रकाशमान्, जल-प्रपातके समान प्रबल, वज्रके समान भीषण, तुम कौन हो? तुम केवल चारण ही तो नही हो!

सत्य०—महाराज! यदि आप पूछते ही हैं तो मैं बतलाये देता हूँ। अब मुझे अपने आपको छिपानेकी अधिक आवश्यकता नहीं है। मै राणा प्रतापसिंहके भाई सगरसिंहका छोटा लड़का सत्यसिंह हूँ।

राणा—हैं! तुम राजा समरसिंहके पुत्र हो?

सत्य०—महाराज! यह परिचय देते हुए मेरा सिर लज्जासे झुका जाता है। तो भी पिताके पापोंका प्रायश्चित्त इस पुत्रसे जहाँतक हो सकता है, वह करता है। मेरे पिता अपने भतीजेको सिंहासनसे उतारनेके लिए चित्तौड़के दुर्गमें कल्पित राणा बनकर बैठे हुए है और मै उन्हींका लडका होकर उन्हींके विरुद्ध मेवाड़-वासियोंको उत्तेजित करता फिरता हूँ। मै लोगोंको यह बतलाता फिरता हूँ कि सगरसिंह मेवाडके कोई नहीं हैं, वे केवल मुगलोंके खरीदे हुए दास है। महाराज! यह तो आप जानते ही होंगे कि, आज तक मेवाड़के किसी प्राणीने पिताको कर नहीं दिया।

राणा—हाँ भाई! हमें मालूम है।

सत्य०—महाराज! मेवाड़के लिए मै अपना सुख, सम्भोग, पिता और पुत्र आदि सब कुछ छोड़कर उसके जंगलों और तराइयोंमें चारण बनकर उसकी महिमा गाता फिरता हूँ। क्या

योग्य है! इस किशोर कोमल शरीर पर शस्त्रपात! शिव शिव! यह तुम्हारा मुख चूमनेके योग्य है भैया! महाराजका घोडा फेर दो और बेखटके अपनी माताकी गोदमें जाकर क्रीडा करो! तुम अभी सुकुमार हो!

लव—युद्धके विना मैं घोडा नहीं दूँगा। समझे? शत्रुघ्न, तुम क्या जाग नहीं रहे हो? या बहरे हो? तो सुनो–(ऊँचे स्वरसे,) यह निश्चय समझो कि मैं विना युद्धके घोडा नहीं दूँगा! नहीं दूँगा! अब सुन लिया?

शत्रुघ्न—(हँसकर) अगर तुम बिल्कुल इसी पर उतारू हो तो फिर मैं लाचार हूं। अच्छा, तरवार खींचो।

(दोनों तरवार लेकर युद्ध करते हैं। शत्रुघ्न केवल अपनेको बचाते हैं।)

शत्रुघ्न—धन्य हो बालक! तुम्हारी अस्त्र शिक्षा, कौशल और फुर्ती सराहने योग्य हैं। लव, ठहरो!

लव—(ठहरकर) तो तुम हारना स्वीकार करते हो, क्यों?

शत्रुघ्न—अच्छी बात है। मैं अपनी हार मजूर करता हूँ।

·· हूँ, और घोडा फेर दो।

लव और शत्रुघ्न



स्थान—वन ।

समय—दो पहर ।

[समर-वेषमें लव और शत्रुघ्न खड़े हैं । शत्रुघ्नके पास बहुतसे सिपाही हैं ।]

शत्रुघ्न—बालक ! उद्धत शिशु ! शस्त्र रख दो । बच्चे ! तुमको शायद अभी तक यह बोध नहीं हुआ कि युद्ध खेल नहीं है !

लव—युद्ध खेल नहीं है ? सेनापतिजी, मै तो युद्धको—कमसे कम अपने लिए—खेल ही समझता हूँ ।

शत्रुघ्न—तुम जानते हो, शस्त्रके लगनेसे देहमें घाव होता है और घाव होने पर उससे रुधिर बहता है ? तुमने कभी खून देखा है ? कभी तरवारकी चोटसे धड़से सिर अलग होते देखा है ?

लव—हे वीर ! अगर सच पूछो तो मैंने अपना सिर कभी धड़से अलग होते नहीं देखा । और, कभी अपने शरीरमें घावकी व्यथाका भी अनुभव नहीं किया !

शत्रुघ्न—तो फिर युद्धसे निवृत्त होओ । तुम अभी निरे बच्चे हो । तुम्हारा यह कोमल शरीर शस्त्रकी चोटके योग्य नहीं है; गोदमें लेकर दुलरानेके योग्य है, स्नेहपूर्वक हृदयसे लगानेके

योग्य है ! इस किशोर कोमल शरीर पर शस्त्रपात ! शिव शिव ! यह तुम्हारा मुख चूमनेके योग्य है भैया ! महाराजका घोडा फेर दो और वेखटके अपनी माताकी गोदमें जाकर क्रीडा करो ! तुम अभी सुकुमार हो !

लव—युद्धके विना मैं घोडा नहीं दूँगा । समझे ? शत्रुघ्न, तुम क्या जाग नहीं रहे हो ? या वहरे हो ? तो सुनो-(ऊँचे स्वरसे;) यह निश्चय समझो कि मैं विना युद्धके घोडा नही दूँगा ! नहीं दूँगा ! अव सुन लिया ?

शत्रुघ्न—(हँसकर) अगर तुम विल्कुल इसी पर उतारू हो तो फिर मै लाचार हूं । अच्छा, तरवार खींचो ।

(दोनों तरवार लेकर युद्ध करते हैं । शत्रुघ्न केवल अपनेको बचाते हैं ।)

शत्रुघ्न—धन्य हो वालक ! तुम्हारी अस्त्र शिक्षा, कौशल और फुर्ती सराहने योग्य है । लव, ठहरो !

लव—(ठहरकर) तो तुम हारना स्वीकार करते हो, क्यों ?

शत्रुघ्न—अच्छी वात है । मैं अपनी हार मंजूर करता हूँ । युद्ध छोड दो वीर, और घोडा फेर दो ।

लव—ना, तुम हँस रहे हो । अगर शक्ति हो तो घोड़ेको ले जाओ । युद्धमें मुझे हराये विना तुम उस घोडेको नहीं पा सकते । आओ, युद्ध करो ।

शत्रुघ्न—अच्छा तो वही हो । तुम वालक अवश्य हो, मगर अपने शरीरमें सिंहका ऐसा पराक्रम रखते हो, तुमने विधिपूर्वक-

लव और शत्रुघ्न



स्थान—वन।

समय—दो पहर।

[समर-वेषमें लव और शत्रुघ्न खड़े हैं। शत्रुघ्नके पास बहुतसे सिपाही हैं।]

शत्रुघ्न—बालक! उद्धत शिशु! शस्त्र रख दो। बच्चे! तुमको शायद अभी तक यह बोध नहीं हुआ कि युद्ध खेल नहीं है!

लव—युद्ध खेल नहीं है? सेनापतिजी, मैं तो युद्धको—कमसे कम अपने लिए—खेल ही समझता हूँ।

शत्रुघ्न—तुम जानते हो, शस्त्रके लगनेसे देहमें घाव होता है और घाव होने पर उससे रुधिर बहता है? तुमने कभी खून देखा है? कभी तरवारकी चोटसे धड़से सिर अलग होते देखा है?

लव—हे वीर! अगर सच पूछो तो मैंने अपना सिर कभी धड़से अलग होते नहीं देखा! और, कभी अपने शरीरमें घावकी व्यथाका भी अनुभव नहीं किया!

शत्रुघ्न—तो फिर युद्धसे निवृत्त होओ। तुम अभी निरे बच्चे हो। तुम्हारा यह कोमल शरीर शस्त्रकी चोटके योग्य नहीं है; गोदमें लेकर दुलरानेके योग्य है; स्नेहपूर्वक हृदयसे लगानेके

बालक लवने आज भेड़ोंकी तरह रामकी सारी क्षत्रिय सेनाको भगा दिया ! हा धिक्कार है !

१ सैनिक—सेनापतिको डेरेमें ले चलो ! इनके बहुत गहरी चोट लगी है !

(शत्रुघ्नको लेकर सब सैनिकोंका प्रस्थान ।)

२ सैनिक—(जाते जाते) इस बालककी शस्त्रशिक्षा धन्य है ! बाहुबल धन्य है ! यह क्षत्रिय-तापस बहुत ही श्रेष्ठ वीर है !

(लवका प्रवेश ।)

लव—सब भाग गये ! राजाकी सेनाका पता नहीं है ! असंभव सम्भव हो गया ! इसीको युद्ध कहते है ? यह तो लडकोंका खेल ही है । आश्रमको चलूँ । दिन समाप्त हो आया है । (प्रस्थान ।)



अस्त्रशिक्षा भी प्राप्त की है। लव, तुम्हारे साथ कौशलकी परीक्षामें कोई लज्जाकी बात नहीं है। लो, हथियार हाथमें लो, वार करो।

लव—तुम वीर हो। तुम्हीं आगे बढ़कर वार करो।

[फिर युद्ध होता है। शत्रुघ्न मूर्च्छित और घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। तब सब सैनिक लव पर आक्रमण करते हैं। लव उनके साथ युद्ध करते करते बाहर निकल जाते हैं। कुछ सैनिकोंका फिर प्रवेश।]

१ सैनिक—यह क्या! क्या सेनापतिके सिरमें चोट आई है?

शत्रुघ्न—चोट?—साधारण नहीं, गहरी चोट है!

२ सैनिक—तो फिर शिविरमें ले चलो। यह क्या, यह कैसा शोर गुल सुन पड़ता है?

[बहुतसे सैनिकोंका प्रवेश।]

३ सैनिक—सर्वनाश हो गया स्वामी! भयसे विह्वल सारी सेना 'शत्रुघ्न मारे गये' सुनकर अयोध्याकी ओर भागी जा रही है। वीरकुलश्रेष्ठ निर्भय लव अकेले कार्तिकेयकी तरह उस सेनाका पीछा कर रहे हैं!

और सैनिक—धन्य हैं लव, धन्य हैं!

शत्रुघ्न—तो यह भयसे विह्वल होकर अयोध्याकी ओर भाग रही हमारी सेनाका कोलाहल है? धिक्कार है! धिक्कार है! अयोध्याके सब क्षत्रिय वीर कायर हैं! शेरकी तरह अकेले

बालक लवने आज भेड़ोंकी तरह रामकी सारी क्षत्रिय सेनाको भाग दिया! हा धिक्कार है!

१ सैनिक—सेनापतिको डेरेमें ले चलो! इनके बहुत गहरी चोट लगी है!

(शत्रुघ्नको लेकर सब सैनिकोंका प्रस्थान।)

२ सैनिक—(जाते जाते) इस बालककी शस्त्रशिक्षा धन्य है! बाहुबल धन्य है! यह क्षत्रिय-तापस बहुत ही श्रेष्ठ वीर है!

(लवका प्रवेश।)

लव—सब भाग गये! राजाकी सेनाका पता नहीं है! असंभव सभव हो गया! इसीको युद्ध कहते है? यह तो लडकोंका खेल ही है। आश्रमको चलूँ। दिन समाप्त हो आया है। (प्रस्थान।)



अस्त्रशिक्षा भी प्राप्त की है। लव, तुम्हारे साथ कौशलकी परीक्षामें कोई लज्जाकी बात नहीं है। लो, हथियार हाथमें लो, वार करो!

लव—तुम वीर हो। तुम्हीं आगे बढ़कर वार करो।

[फिर युद्ध होता है। शत्रुघ्न मूर्च्छित और घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते है। तब सब सैनिक लव पर आक्रमण करते हैं। लव उनके साथ युद्ध करते करते बाहर निकल जाते हैं। कुछ सैनिकोंका फिर प्रवेश।]

१ सैनिक—यह क्या! क्या सेनापतिके सिरमें चोट आई है?

शत्रुघ्न—चोट?—साधारण नहीं, गहरी चोट है!

२ सैनिक—तो फिर शिविरमें ले चलो। यह क्या, यह कैसा शोर गुल सुन पड़ता है?

[बहुतसे सैनिकोंका प्रवेश।]

३ सैनिक—सर्वनाश हो गया स्वामी! भयसे विह्वल सारी सेना 'शत्रुघ्न मारे गये' सुनकर अयोध्याकी ओर भागी जा रही है। वीरकुलश्रेष्ठ निर्भय लव अकेले कार्तिकेयकी तरह उस सेनाका पीछा कर रहे हैं!

और सैनिक—धन्य है लव, धन्य है!

शत्रुघ्न—तो यह भयसे विह्वल होकर अयोध्याकी ओर भाग रही हमारी सेनाका कोलाहल है? धिक्कार है! धिक्कार है! अयोध्याके सब क्षत्रिय वीर कायर हैं! शेरकी तरह अकेले

बालक लवने आज भेड़ोंकी तरह रामकी सारी क्षत्रिय सेनाको भगा दिया! हा धिक्कार है!

१ सैनिक—सेनापतिको डेरेमें ले चलो! इनके बहुत गहरी चोट लगी है!

(शत्रुघ्नको लेकर सब सैनिकोंका प्रस्थान।)

२ सैनिक—(जाते जाते) इस बालककी शस्त्रशिक्षा धन्य है! बाहुबल धन्य है! यह क्षत्रिय-तापस बहुत ही श्रेष्ठ वीर है!

(लवका प्रवेश।)

लव—सब भाग गये! राजाकी सेनाका पता नहीं है! असंभव संभव हो गया! इसीको युद्ध कहते हैं? यह तो लड़कोंका खेल ही है। आश्रमको चलूँ। दिन समाप्त हो आया है। (प्रस्थान।)



सरदारबा



पात्र

सरदारबा—रानीपुरकी राजकन्या।

रूपादे—सरदारबाकी भोजाई।

साध्वी, सरदारबाकी माता, सखियाँ, पहरेदार स्त्रियाँ आदि।

दृश्य पहला

समय—तीन पहर।

स्थान—रानीपुरका महल।

[सरदारबा और रूपादे बैठी बातें कर रही हैं। एक सखि पत्र लेकर आती है।]

सरदारबा—कमला! यह क्या है?

रूपा—युवराजके नामका पत्र है। पाटनसे आया है।

रूपादे—यहाँ ला देखूँ (कमला पत्रदेकर जाती है और रूपादे उसे पढती है)

" युवराज!

तुम खुश होगे। बहुत दिनोंसे तुम्हारा खत नहीं सो देना। और तुमने वादा किया था उसके माफिक अब जल्दी ही तुम्हारी बहिनका व्याह मेरे साथ कर दो। मैं तुम्हारी बहिनको अपनी

खास बेगम बनाऊँगा और तुमको छोटीसी जागीरसे बहुत बड़े सूबेका मालिक बना दूँगा। अगर इन्कार करोगे तो रानीपुरकी ईंटसे ईंट बजा दूँगा। और तुमको धूलमें मिलाकर जबर्दस्ती तुम्हारी बहनसे ब्याह करूँगा। मुझे उम्मीद है कि तुम कोई ऐसा काम न करोगे जिससे हमारी दोस्ती टूट जाय।

तुम्हारा दोस्त—

रहमतखाँ"

रूपादे—क्या युवराजने वादा किया था? नहीं, नहीं, झूठ बिलकुल झूठ!

चंपा—(प्रवेश करके) नहीं, सच! बिलकुल सच!

रूपादे—(चंपाका हाथ पकड़ कर) चंपा! तुम यह क्या बक रही हो? रानीपुरका राजकुमार अपनी बहिनको शत्रुसे ब्याहनेका वचन दे? सर्वथा असंभव है।

चंपा—बाई साहिबा! दुःखसे कहना पड़ता है कि यह बात सर्वथा सच है। कुमार साहिबने रहमतखाँको वचन दिया उसके शब्द इन कानोंने सुने हैं और उसके लिए सैकड़ो बार मेरी इन आँखोंने आँसू बहाये हैं।

रूपादे—ओ भगवान! मैं यह क्या सुन रही हूँ? रानी-पुरका राजकुमार, क्षत्रियका पुत्र, रूपादेका स्वामी इस तरहका अधर्म आचरण करे, यह सर्वथा असह्य है। (कुछ ठहरकर) दयामय! यह बात झूठी हो!

कमला—(फिर प्रवेशकर) बाई साहबा ! पाटनका राजदूत पत्रका जवाब चाहता है।

रूपादे—(पत्रको फाड़कर) कमला दूतको ये टुकड़े देकर कह दो यही हमारा जवाब है। राजहंसिनी कौवेके लिए नहीं है।

सरदारबा—भोजाईजी ! जरा शान्तिसे विचार कीजिए। भाईजीको और पिताजीको इसका जवाब देने दीजिए।

रूपादे—ससुरजी रोगशैयापर सोते हैं। वे क्या जवाब देंगे ? और तुम्हारे भाई तुम्हें ब्याहनेका वचन दे आये हैं। (सरदारबाका हाथ पकड़कर) बोलो, तुम पाटनकी बेगम बनना चाहती हो ?

सर्दारबा—मैं चाहती हूँ कि प्रजा सुखसे रहे, पिताजीको इस बुढ़ापेमें तकलीफ न हो, रानीपुरके धनवैभव सदा बढ़ते रहे और राजकुमार बेखटके राज करते रहें।

रूपादे—और ये बातें तभी हो सकती हैं, जब तुम रहमतखाँसे शादी कर लो। मगर यह बात असंभव है। श्वसुरजीने अब तक जो बात न होने दी वही बात अब उनकी लाचार दशामें क्या तुम भाई बहिन मिलकर करोगे ?

सरदारबाकी माता—(प्रवेशकर) नहीं, कभी नहीं ! बहू ! जब तक तुम जीवित हो, जब तक मेरे दममें दम है, यह बात न होगी। रानीपुरकी प्रजाकी आबरूकी धजा नीचे न गिरने पायगी।

सरदारबा—माता ! मुझपर अन्याय न करो । मेरे कहनेका अर्थ उल्टा न निकालो ।

स० माता—(सरदारबासे) छोकरी चुप रह ! (रूपादेसे) बहू ! यह मेरी कटार लो, अगर सरदारबा पाटनकी बेगम बननेकी इच्छा करे तो इसके पेटमें भोंक देना (रूपादे कटार लेती है और दोनों वहाँसे जाती है ।)

सरदारबा—(एक नि श्वास डालकर) दयामय ! दया करो ! (पट परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

[गाँवका किनारा, पाँच सात स्त्रियाँ घायल रूपादेको उठाकर लाती है । सरदारबा रूपादेके पास बैठती है ।]

सरदारबा—भाभी ! भाभी ! मुझे छोड़कर कहाँ चलीं ? भाई गये, माता पिता कैद हुए, रानीपुर ध्वंस हुआ । तुम भी चलीं । ठहरो मैं भी तुम्हारे साथ चलूगी । (कटार निकाल कर आत्महत्या करनेको तैयार होती है)

रूपादे—(उत्तेजनाके साथ बैठकर) खबरदार ! ऐसा काम न करना । जीवित रहकर माता पिताको कैदसे छुड़ाना, मेरी मौतका बदला लेना और सारे गुजरातमें इस अन्यायके विरुद्ध आग जलाना । पाटनकी सत्ता उसमें जलकर खाक होगी । आह ! आह ! (वापिस गिर पड़ती है)

सरदारबा—(खडी होती हुई) गई! गई!! गई मुझे छोड़कर हमेशाके लिए चली गई । भाभी! तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य है । प्रतिज्ञा करती हूँ कि जब तक इस अन्यायका बदला न लूँगी तब तक जमीन पर सोऊँगी और सिरके बाल न बाँधूँगी। देवताओ! मेरी मदद करो, स्वर्गस्थ सतियो! तुम्हारे सतकी शक्ति मेरे रोम रोममें भर दो जिससे मैं अन्यायका बदला ले सकूँ। बदला! बदला!! बदला!!! (नेपथ्यमें)

(नेपथ्यसे—" पकडो पकड़ो भागने न पावे " की आवाज सुनाई देती है।)

सरदारबा—अरे! दुश्मन आ रहे हैं। चलो इधरसे निकल जायँ। (रूपाडेको लेकर सब जाती हैं।)

दृश्य तीसरा

स्थान—पाटनके अन्तःपुरका एक भाग।

समय—सध्या काल।

[सरदारबा कैदीकी दशामें खडी है। एक पहरेदार स्त्री पहरा दे रही है।]

सरदारबा—(प्रार्थना कर रही है)

किन तेरो गोविंद नाम धर्यो?
लेन देनके तुम हितकारी, मोसे कछु न सर्यो ॥ कि० ॥
विप्र सुदामा कियो अजाची, तदुल भेट धर्यो ॥ कि० ॥

द्रुपद सुताकी तें पत राखी, अवर दान कयों ॥ कि० ॥
सदींपनके तुम सुत लाये, विद्या पाठ पर्यो ॥ कि० ॥
सूरकी बिरियाँ निठुर ह्वै बेठो, कानहिं मूँदि पर्यो ॥ कि० ॥

(स्वगत) कैदमें पड़े हुए प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी ! भगवान कोई रस्ता बताओ । [सीखचेके सहारे हाथपर सिर रखकर कुछ सोचती है । उसी समय भोजन लेके एक स्त्री आती है । वह जेल-खानेका दर्वाजा खोलकर भोजन रखनेको नीचे झुकती है । सरदारबा झपटकर उसको गिरा देती है और उसके मुँहमें कपड़ा ठूँस उसके हाथ पैर बाध उसे एक तरफ डाल देती है । उसी समय पहरेदार स्त्री आजाती है । उसके साथ सरदारबाका झगड़ा होना है सरदारबा उसे गिरा जख्मी कर भाग आती है ।]

(पट परिवर्तन)

दृश्य चौथा

स्थान—वन

समय—सन्ध्याकाल

सरदारबा—(स्वगत) दौड़ते दौड़ते थक गई । रस्ता भूल-कर वनमें आ पहुँची । चारो तरफसे जगली जानवरोंकी डरा-वनी आवाजे आ रही हैं । (कटार निकाल कर) अबलाओंकी रक्षिका मेरी रक्षा करना (एक सिंहकी गर्जना । सुनाई देती है ।) अब क्या करूँ ? कैसे अपने प्राण बचाऊँ ? (अपनी साड़ी

निकाल कर बाएँ हाथ पर लपेट लेती है और दाहिने हाथमें कटार लेकर खडी हो जाती है। उसी समय सिंह आक्रमण करता है। सरदारवा सिंहके मुँहमें हाथ डाल कटार उसके कलेजेमें भोंक देती है। सिंह गिर पडता है। सरदारवा भी पजोंकी चोटके कारण घायल होकर गिर पडती है। एक साध्वी और उसके साथ कुछ अन्य स्त्रियोंका प्रवेश)

एक स्त्री—(सिंहको देखकर भयसे) ओ मॉ, बाघरे! मारारे! खायारे!

साध्वी—(हाथ पकडकर) चुप! चुप! चलो एक तरफ छिपकर देखें। (छिप जाती हैं कुछ देर के बाद)

साध्वी—देखो दोनों स्थिर पड़े हैं। जान पडता है, मर गये हैं। आओ देखें।

स्त्री—ना मैं नहीं आऊँगी। मुझे क्या सिंहका शिकार बनना है?

साध्वी—अच्छा मैं ही जाकर देखती हूँ।

(साध्वी डरते डरते सिंहके पास जाती है। सिंहको मरा हुआ समझकर अपने साथकी औरतोंको बुलाती है। "आओ आओ सिंह मरा पडा है।" औरतें आती है। साध्वी लहू लूहान सरदारवाको पहचानती है।

साध्वी—(आश्चर्यसे) अरे यह तो सरदारवा है। यह कैद-से छूटकर कैसे आई? (सरदारवाकी जाँचकर) अभी श्वास-बाकी है। हे भगवान! जैसे तुमने इनको कैदसे छुड़या,

वैसे ही इन्हें प्राणदान भी दो । बहनो ! चलो हम इन्हें अपनी झोंपड़ीमें ले चलें । (स्त्रियाँ सरदारबाको उठाकर अपनी झोंपड़ीमें ले जाती हैं ।)

दृश्य पाँचवाँ

स्थान—जंगलमें झोंपड़ी ।

समय—सवेरा ।

[सरदारबा और साध्वी खड़ी बातें कर रही हैं]

सरदारबा—बहिन ! तुम कौन हो और जंगलमें क्यों रहती हो ?

साध्वी—(एक निःश्वास डालकर) बहिन, मैं भी तुम्हारी ही जैसी सताई हुई एक स्त्री हूँ । मेरा सब कुछ जुल्मी रहमतखाँने नष्ट कर दिया है । उसीका बदला लेनेके लिए मैं साध्वी होकर जंगलमें रहती हूँ ।

सरदारबा—इस जंगलमें रहकर बदला कैसे ले सकोगी ?

साध्वी—(अपनी कमरमें छिपी हुई कटार निकाल कर उत्तेजनाके स्वरमें) यह कटार जुल्मीके कलेजेमें चुभाकर; उसको यमधाम पहुँचा कर ।

सरदारबा—यह कैसे बनेगा ?

साध्वी—रहमतखाँ अक्सर शिकार खेलने इस जंगलमें आया करता है । मैंने ऐसी व्यवस्था कर रक्खी है कि अबकी

वार वह जब आयगा तब उसको इस झोंपड़ीमें बुलाऊँगी और यमधाम पहुँचाऊँगी।

सरदारबा—मुझे यह काम इस तरह होना कठिन जान पड़ता है। अगर हो गया तो भी उससे क्या फायदा होगा? उसकी जगह दूसरा गद्दीपर बैठेगा और वह जुल्म शुरू करेगा।

साध्वी—मैं केवल बदला चाहती हूँ। मुझे रुलाकर जो हँस रहा है उसे मैं ठंडा कर देना चाहती हूँ।

सरदारबा—एकको ठंडा करोगी दूसरा उसकी जगह बैठकर हँसेगा। इस लिए आओ हम ऐसा उपाय करें जिससे गुजरात जागे, गुजराती जागें, मानवजात जागे और अन्यायकी हँसी हमेशाके लिए बंद हो जाय।

साध्वी—(कुछ सोचकर) बहिन, तुम ठीक कहती हो। हम आँधी और जलप्रपात बनें, गुजरातमें तूफान उठेगा और पाटनकी सत्ता उसमे नष्ट हो जायगी; हम भूकम्प बने, गुजरात चौचीर होकर फटेगा और अन्याय उसमें सदाके लिए विलीन हो जायगा; हम चिन्गारियाँ बने, गुजराती भयकर आगका रूप धारण करेंगे और जुल्म उसमें जलकर राखकी ढेरी होजायगा।

सरदारबा—तब चलो! हम काममें लगें।

दृश्य छठा

स्थान—पाटनका राजमहल,

समय—सन्ध्याकाल

[सरदारबा और एक शहरकी प्रमुख स्त्री बातें कर रही हैं। साध्वी एक तरफ बैठी हैं।]

शहरकी एक प्रमुख स्त्री—सरदारबा ! आज गुजरातियोंका स्वर्ण दिन है। आज गुजरातके भाग्याकाशमें स्वाधीनताका सूर्योदय हुआ है। गुर्जर वीर और वीरांगनाएँ कंधेसे कंधा भिडाकर अन्यायके विरुद्ध लडे हैं, स्वतन्त्रताके युद्धमें उन्होंने आज पहली बार विजय पाई है। भगवान करे उनकी यह जय-पताका हमेशा आकाशमें उडती रहे।

और यह जय सरदारबा आपकीही वीरताके कारण मिली है। इस लिए गुर्जर प्रजाकी तरफसे मैं आपको जयमाल पहनाती हूँ। गुजरातके नरनारी उल्लासके साथ आज उत्सव मना रहे हैं। आइए आप भी इस आनंदमें भाग लेकर हमें आभारी कीजिए।

सरदारबा—गुजरातको यह सौभाग्यका दिन, परम स्नेहमयी साध्वीजीके यत्नोंसे मिला है। इसलिए आओ यह जयमाल उन्हींके गलेमें डालें (दोनों साध्वीजीके पास जाती हैं।)

साध्वी—सरदारबा ! यह माला तुम्हारे ही गलेमें सोहती है। गुर्जर प्रजाकी यह स्नेह और भक्ति परिपूर्ण भेट स्वीकार करो।

(साध्वी गलेमें माला पहनाती है) आओ ! अब प्रजाके उत्सवमें सम्मिलित होने चलें। (जाती है।)

दृश्य सातवाँ

स्थान—एक भव्यमंडप

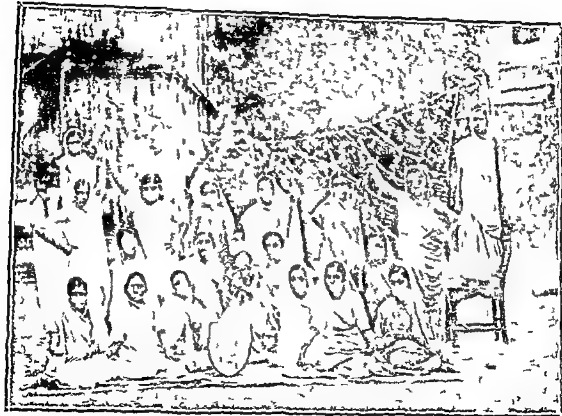
भैरवी—तीन ताल

कहाँ मिलेगा कृष्णमुरार ?
प्राणाधार, स्नेहागार !

१ मंदिरके नीरव पत्थरमें, भक्तोंके शुचि सुमधुर स्वरमें,
पृथ्वीमें, नभमें, सागरमें, अनल, अनिलमें, तिल-तिल-भरमें,
सुना तुम्हारा है आगार,
क्या यह सच है कृष्णमुरार ? ॥ १ ॥

२ स्नेहमयी जसुमतिके करमें, विरह-विधुर राधा-अंतरमें,
कृष्णाके अनंत अंबरमें, या काली कुब्जाके घरमें
या इस वसुधाके उस पार,
कहाँ मिलेगा कृष्णमुरार ? ॥ २ ॥

३ कल कदंब, कालिंदी तटमें, गिरि-गह्वर वसुधाके पटमें,
ब्रज—वीथी, वन, वंशीवटमें, जन, जनपद, पथमें, पनघटमें,
खोजा, खोज हुई लाचार,
यहाँ मिला है कृष्णमुरार ॥ ३ ॥



" कहाँ मिलेगा कृष्ण मुरार " का गरवा करनेवाली लड़किया (पृ० १२८)

स्वरलिपि

[संकेत]

मद्र या पहले सप्तकके स्वर—सा रे ग म प ध नि

मध्य या दूसरे सप्तकके स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि

तार या तीसरे सप्तकके स्वर—सा, रें, ग, म, प, ध, नि

जिनस्वरों के नीचे लकीरें हैं वे स्वर कोमल हैं जैसे रे, ग,

× यह चिन्ह पहली तालका है।

० यह चिन्ह खाली तालका है।

‿ इस चिन्हमें आये हुए स्वर सभी एक मात्राके अंदर बोले या बजाये जाते हे। जैसे सारेग

गायन.

राग–भीमपलासी, ताल त्रिताल, मात्रा १६

चरन कमल वंदौ हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे,
अंधेको सब कुछ दरसाई॥
बहिरो सुने मूक पुनि बोले,
रंक चले शिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय,
बार बार वंदौ तेहि पाई॥

०				३				×				२			
ग	म	नि	प	ग	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा	म	ग	म	–
च	र	न	क	म	ल	वं	ऽ	दौं	ऽ	ह	रि	रा	ऽ	ई	ऽ
ब	हि	रो	ऽ	सु	[illegible]	ऽ	मू	[illegible]	क	पु	नि	बो	ऽ	ले	[illegible]

०				३				×				२			
म	–	प	प	म	प	ग	म	प	–	नी	नी	पनी	मरें	नीसां	–
जा	ऽ	की	रू	पा	ऽ	प	ऽ	गू	ऽ	गि	रि	लऽ	ऽऽ	घेऽ	ऽ
र	ऽ	फ	च	ले	ऽ	शि	र	छ	ऽ	ग्र	व	राऽ	ऽऽ	ईऽ	ऽ

०				३				×				२			
नी	नी	सा	ग	रें	–	सां	सा	नी	नी	ध	प	ग	म	नीप	सां
अ	ऽ	धे	ऽ	को	ऽ	स	व	कु	छ	द	र	सा	ऽ	ईऽ	ऽ
सू	ऽ	र	दा	ऽ	स	स्या	ऽ	भी	ऽ	क	ह	णा	ऽ	ऽऽ	मय

०				३				×				२			
ग	म	नी	प	ग	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा	म	ग	म	–
या	ऽ	र	वा	ऽ	र	व	ऽ	दौं	ऽ	ते	हि	पा	ऽ	ई	ऽ

राग-बिलावल, ताल-एकताल, मात्रा १२

दीननके प्रति पालक, श्याम बिरुद तुम्हारो।
विभुवर तव क्रीडास्थल, भारत काहे बिसार्यो॥
गजकी पुकार सुनकर, दौड़े गरुडको तजी।
द्रुपदाकी पत राखी, अजामीलको तार्यो॥
भारत जन हैं अनाथ, तुम बिन कौन हमारो।
गिरिधर कंस विदारी, त्राहि नाथ अब हार्यो॥

स्थाई

१		०		२		०		३		४	
सा	नि	ध	नि	सा	–	सां	रें	सां	नि	ध	प
दी	ऽ	न	न	के	ऽ	प्र	ति	पा	ऽ	ल	क

१		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
त्या	ऽ	न	वि	रु	द	तु	ऽ	म्हा	ऽ	रो	ऽ

१		०		२		०		३		४	
नि	सा	ग	रे	सा	नी	ध	ध	सा	–	रे	सा
विभु	व	र	त	प	श्री	ऽ	हा	ऽ	ऽ	स्थ	ल

१		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
भा	ऽ	र	त	का	ऽ	है	वि	सा	ऽ	यों	ऽ

अंतरा १

१		०		२		०		३		४	
प	प	ध	नि	सां	–	सां	रें	ग	रें	सां	–
ग	ज	की	ऽ	पु	का	ऽ	र	सु	न	क	र

१		०		२		०		३		४	
सा	रें	ग	म	प	ग	म	रें	सा	ग	रें	सा
दौ	ऽ	डे	ऽ	ग	रु	ड	को	ऽ	त	जि	ऽ

१		०		२		०		३		४	
सा	रे	सा	नी	ध	प	ध	नी	सां	नि	ध	प
हु	प	दा	ऽ	की	ऽ	प	त	रा	ऽ	खी	[illegible]

१		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
व	सा	ऽ	मी	ऽ	ल	को	ऽ	ता	ऽ	यों	ऽ

पहले अंतरेकी तरह दूसरा धजाना

अंतरा २

भा	ऽ	र	त	ज	न	हैं	ऽ	अ	ना	ऽ	ध
तु	म	बि	न	की	ऽ	न	ह	मा	ऽ	री	ऽ
गि	रि	ध	र	क	ऽ	स	बि	दा	ऽ	री	ऽ
आ	ऽ	हि	ना	ऽ	थ	अ	व	हा	ऽ	यों	ऽ

राग-मालकौंस, ताल-त्रिताल (मात्रा १६)

कृष्णा माधो राम निरंजन।
हे गोविंद गोपाल॥
इतनी विनति मोरी सुन लीजे तूही।
तूही करेगो तेरो काम॥

स्थायी

ग

०				३				×				२			
म	–	म	–	ग	सा	–	धनी	सा	म	–	मम	म	ग	ध	मग
कृ	ऽ	ष्णा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	धोऽ	रा	ऽ	ऽ	मनि	र	ऽ	ज	नऽ

०				३				×				२			
गमधनी	सा	ध	म	नी	–	ध	म	नी	ध	म	–म	म	(म)	ग	सा
हेऽऽऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	ऽ	वि	ऽ	द	गो	पा	ऽल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

०				३				×				२			
ग	म	ध	–नी	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	नी	ध	नी	ध	म
इ	त	नी	ऽवि	न	ति	मो	री	सु	न	ली	जे	तू	ऽ	ही	ऽ

०				३				×				२			
ध	नी	सा	म	ग	~	सा	–	सा	–	ध	–	नी	ध	–	म
तू	ऽ	ही	क	रे	▪	गो	ऽ	ते	ऽ	रो	ऽ	ऽ	का	ऽ	म

राग—देस, अक्षर छन्द

ब्रह्मानन्दम् परमसुखदम् केवलम् ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतम् गगनसदृशम् तत्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एक नित्यम् विमलमचलम् सर्वधी साक्षीभूतम् ।
भावातीतम् निर्गुणरहितम् सद्गुरु त नमामि ॥

सा	नी	सा	रें	सा	नी	ध	प–	रे	म	प	नी	ध	प	–	–
ब्र	ऽ	ह्मा	ऽ	न	ऽ	द	ऽम्	प	र	म	सु	ख	द	ऽ	म्
रे	–	ग	रेग	मप	ध	–		म	गरे	ग	नी	–	सा	–	–
के	ऽ	व	लऽ	ऽ	म्	ऽ		ज्ञा	ऽऽ	न	मू	ऽ	तिं	म्	–
नी	–	सा	–	रेग	म	ग	रे–	रे	म	प	नी	ध	प	–	–
द्व	▪	द्वा	ऽ	तीऽ	ऽ	त	ऽम्	ग	ग	न	स	द	श	ऽ	म्
रे	–	ग	रेग	मप	▪	म	गरे	ग	नि	–सा		–	–	–	–
त	–	त्व	मऽ	ऽऽ	ऽ	स्या	ऽऽ	दि	ल	ऽक्ष्य		ऽ	म	ऽ	ऽ
म	–	प	–	नी	–	सा	–	नि	सा	सा	–	रें	नी	सा	–
ए	ऽ	क	ऽ	नि	▪	त्य	म्	वि	म	ल	–	म	च	ल	म्

नी	–	सां	–	नि सां	रें गं	मं	रें	ग	रें	नि	–
स	ऽ	वै	ऽ	धी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	क्षि	भू	ऽ

प	–	रें	–	नी	–	सा	–	नी	सां	रें	–	नी	ध
भा	ऽ	वा	ऽ	ती	ऽ	त	म्	नि	गु	ण	–	र	हि

रे	–	ग	रेग	मप	ध	न	गरे	ग	नि	–	–	–	–
स	ऽ	हु	हऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	न	मा	ऽ	मि	ऽ	ऽ

राग-छाया नट झपताल, मात्रा १०

नमो मात भारत, नमो देश-माता
नमो ज्ञान विज्ञान, तन प्रान-दाता
तुम्हीं मात भक्ति, तुम्ही मात-शक्ति
तुम्हीं मात मुक्ति व, भक्ति प्रदाता
तुम्हीं कल्पवृक्ष, ओ तुम्हीं कामधेनु
तुम्हीं सर्व-दाता, तुम्हीं ज्ञान-गाथा
जो नर गा बजा कर, रिझाता है तुमको
वह जीवनका अपने, है आनंद पाता

स्थाई

स
न

१		२			०		३	
ध	—	प	—	प	प	—	प	प

१	०	१	०
प नी नी नी	नी – नी सा	रें गं सा रें	नी सा – –
गौ ऽ त म	की ऽ ना ऽ	री ऽ ता ऽ	री ऽ ऽ ऽ
१	०	१	०
प सा – सा	– नी ध प	प ध प म	ग म प –
लि यो ऽ आ	ऽ इ से ऽ	ग ज को उ	वा ऽ री ऽ
१	०	१	०
प ध प म	प म ग रे	रे म ग रे	सा – – –
आ ऽ र त	पे ऽ स ऽ	क द भा ऽ	री ऽ ऽ ऽ
१	०	१	०
प म प नी	– नी – नी	नी – प नी	प नी – –
प्र भु नि जो	ऽ द्वा ऽ र	की ऽ शि ऽ	क्षा ऽ ऽ ऽ
१	०	१	०
प – नी –	नी – नी सा	रें ग सा रें	सा – – –
आ ऽ यो ऽ	दो ऽ ये ऽ	ही ऽ मि ऽ	क्षा ऽ ऽ ऽ
१	०	१	०
सा नी सा रें	सा – ध सा	नी ध प ध	प – – –
आ ऽ यो ऽ	ओ ऽ आ ऽ	यो ऽ आ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ
१	०	१	०
प ध प म	ग – – –	ग म प –	प – – प
हाँ ऽ आ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	अ व दा ऽ	[illegible] ऽ ऽ त

१				०				१				०			
प	ध	प	म	ग	–	ग	म	प	म	ग	रें	सा	–	–	–
य	ऽ	ध	न	से	ऽ	ह	म	को	छु	डा	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ

राग–कालगडा, ताल त्रिताल, मात्रा १६

व्याकुल मैं होगई कन्हैया।
कैसे करूँ मैं सुध न रही अब तनमनकी
दीना होगई ॥ क० ॥
लाज रखो हरि मीरपरी है, करुणा क्यों छुप गई ॥ क० ॥

२			
–	–	गम	पब
ऽ	ऽ	व्याऽ	ऽऽ

०				३				१			
ग	म	–	रे	सा	नी	–	सारे	म	–	–	–
कु	ल	ऽ	मैं	ऽ	हो	ऽ	गऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ

प	धप	ग	म	प	ध	म	प
का	ऽऽ	से	क	रू	ऽ	मैं	ऽ

रे	ध	प	ध	म	प	ग	म	रे	ध	प	ध	म	प	ग	म
सु	ध	न	र	ही	ऽ	अ	व	त	न	म	न	की	ऽ	स	ब

गम	पध	पग	म	रेसा	नि	सा	रे	म	–	–	म	म	धप	मग	ग
दीऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ	क	न्है	ऽऽ	याऽ	

०				३				×				२			
नी	नी	सा	सा	ग	सा	नी	ध	म	ध	नी	ध	म	–	ग	म
म	धु	र	रू	ऽ	प	द	र	सा	ऽ	घ	त	है	ऽ	सो	ई
दू	ऽ	र	म	ये	ऽ	त	म	छा	ऽ	य	त	है	ऽ	सो	ई
फू	ऽ	ल	न	से	ऽ	जो	ऽ	आ	ऽ	व	त	है	ऽ	सो	ई
को	ऽ	य	ल	कू	ऽ	क	सु	ना	ऽ	व	त	है	ऽ	सो	ई
म	न	र	हि	र	हि	घ	घ	रा	ऽ	घ	त	है	ऽ	सो	ई

राग–भैरवी, ताल त्रिताल, मात्रा १६

आरोह—नी सा ग म प ध नी सां

अवरोह—सा नी ध प म ग रे सा

कहाँ मिलेगा कृष्ण मुरार ?
प्राणाधार, स्नेहागार ?
मंदिरके नीरव पत्थरमें, भक्तोंके शुचि सुमधुरस्वरमें
पृथ्वीमें नभमें सागरमें, अनल अनिलमें तिल तिल भरमें
सुना तुम्हारा है आगार,
क्या यह सच है प्राणाधार ? ॥ १ ॥
स्नेहमयी जसुमतिके करमें, विरह-विधुर राधा-अंतरमें
कृष्णाके अनंत अंबरमें, या काली कुब्जाके घरमें
या इस वसुधाके उस पार
कहाँ मिलेगा प्राणाधार ? ॥ २ ॥
कल-कदंब कालिंदी-तटमें, गिरि-गह्वर, वसुधाके पटमें,
व्रज-वीथी, वन, वंशीवटमें, जन, जनपद, पथमें पनघटमें,
खोजा, खोज हुई लाचार
यहाँ मिला है कृष्णमुरार ! ॥ ३ ॥

×				२				०				३			
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	नी	सा	ग	म	प	ध	नी	सां

×				
म	-	प	-	
रो	ऽ	इ	म	०

राग-काफी, ताल त्रिताल, मात्रा १६

सुन सखी मोहन बंसी बजावे,
साँझ समय गोधनके पीछे,
अच्छे बनी ठनी आ वे ॥ सुन० ॥
कहुँ पुष्प कहुँ कुसुम मँजरी
कहुँ तुलसी दल ला वे ॥ सुन० ॥
गुँजमाल बन माल लाल-उर
अंग अंग छबि छा वे ॥ सुन० ॥

स्थाई

२				०				३				×			
म	ग	म	प	म	ग	रे	सा	रे	ग	म	म	प	-	प	-
सु	न	स	खी	मो	ऽ	ह	न	बं	ऽ	सी	ब	जा	ऽ	वे	ऽ

२				०				३				×			
ध	-	ध	ध	नी	ध	प	म	ग	ग	म	प	ग	-	रे	-
साँ	ऽ	झ	स	म	य	गो	ऽ	ध	न	के	ऽ	पी	ऽ	छे	ऽ

२				०				३				×			
सा	-	रे	-	ग	ग	म	म	प	ध	नी	सा	नी	ध	प	-
आ	ऽ	छे	ऽ	ब	नी	ठ	नी	आ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	०	

× २ ० ३
| रे म – म | पध नीसा नी ध | प – ग – | रे – सा – |
| सु ना ऽ तु | म्हाऽ ऽऽ रा ऽ | है – आ – | गा ऽ र ऽ |

× २ ० ३
| नी – सा रे | ग – म – | गम पध प म | ग रे सा – |
| क्या ऽ य ह | स च है ऽ | कृऽ ऽऽ ण मु | रा ऽ र ऽ |

तानके साथ

× २ ० ३
| म – प – | नी – सा – | सा रें सा रें | नी सा नी ध |
| ले ऽ ह म | यी ऽ ज सु | म ति के ऽ | क र में ऽ |

× २ ० ३
| पम धप | नीध सांनी | रें सा नीध | पम गम

×
| म – प – | ०
| ले ऽ ह म |

× २ ० ३
| म – प – | नी – सा – | सा रें सां रें | नी सा नी ध |
| वि र ह वि | धु र रा ऽ | धा ऽ क ऽ | त र में ऽ |

× २ ० ३
| ग रें ग – | रें सा रे – | सा नी सा – | नी ध मी – |

पुन' करेंगी गढ–अवरोध,
लेंगी हम लेंगी प्रतिशोध,
सुन तूरान ! सुन ईरान !
रमणी गण,
करता है दृढ प्रण,
उडे निशान ! बजे विषाण ! मान–रहित जीवनको धिक है,
भूल–न जाना इसे कभी ।
हम ईरानी वीर नारियाँ, चलो, चले हम वहीं सभी ॥

×		२		०		३		×		२		०		३	
–	नि	–	सा	नि	ध	प	म	ग	–	म	ग	–	रे	सा	नि
ऽ	हम	ऽ	ई	रा	ऽ	नी	ऽ	वी	ऽ	र	ना	ऽ	रि	याँ	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	म	ग	म	ग	म	प	ध	नि	सा	नि	ध	प	–	–	–
च	लो	ऽ	च	लें	ऽ	ह	म	व	हीं	ऽ	स	भी	ऽ	ऽ	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	नि	–	नि	–	नि	ध	नि	ध	नि	सा	रें	सा	नि	सा	–
उ	ठें	ऽ	स्व	ऽ	व	र	ण	र	ऽ	ग	त	र	ऽ	गें	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	नि	–	नि	–	नि	ध	नि	धनि	सा	नि	ध	प	म	ग	रे
न	हा	ऽ	यु	ऽ	द्ध	ति	ऽ	शाऽ	ऽ	प	अ	भी	ऽ	ऽ	ऽ

गायन शिक्षक—



दाहिनी तरफसे, सीताराम नारायण भुडले, विनायक केशव चौघले, नरहरि विनायक गोखले, विष्णु दत्तात्रय पागनीस

पुन करेंगी गढ़-अवरोध,
लेंगी हम लेंगी प्रतिशोध;
सुन तूरान ! सुन ईरान !
रमणी गण,
करता है दृढ़ प्रण;
उड़े निशान ! बजे विषाण ! मान-रहित जीवनको धिक है,
भूल-न जाना इसे कभी ।
हम ईरानी वीर नारियाँ, चलो, चलें हम वहीं सभी ॥

×		२		०		३		×		२		०		३	
–	नि	–	सां	नि	ध	प	म	ग	–	म	ग	–	रे	सा	नि
ऽ	हम	ऽ	ई	रा	ऽ	नी	ऽ	वी	ऽ	र	ना	ऽ	रि	याँ	[illegible]

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	म	ग	म	ग	म	प	ध	नि	सा	नि	ध	प	–	–	–
[illegible]	लो	ऽ	च	ले	ऽ	ह	म	व	हीं	ऽ	[illegible]	भी	ऽ	ऽ	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	नि	–	नि	–	नि	ध	नि	ध	नि	सा	रें	सा	नि	सा	–
उ	ठे	ऽ	खू	ऽ	व	र	ण	र	ऽ	ग	त	र	ऽ	गें	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
प	नि	–	नि	–	नि	ध	नि	धनि	सा	नि	ध	प	म	ग	रे
न	हीं	ऽ	[illegible]	ऽ	द्व	नि	ऽ	शेऽ	ऽ	प	अ	भी	ऽ	ऽ	ऽ

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि	-	नि	-	नि	नि	नि	-	ध	नि	सा	रें	सा	-	-	सा
लें	S	गी	S	ह	म	लें	S	गी	S	प्र	ति	शो	S	S	ध

×		२		०		३		×		२		०		३	
सां	ग	रें	सा	रें	-	-	रें	नि	सा	नि	ध	नि	-	-	नि
सु	न	तू	S	रा	S	S	न	सु	न	ई	S	रा	S	S	न

×		२		०		३		×		२		०		३	
ग	प	ध	नि	प	ध	नि	सा	सां	रें	सा	नि	ध	नि	सा	सा
र	म	णी	S	ग	ण	फ	र	ता	S	है	S	ह	ड	प्र	ण

×		२		०		३		×		२		०		३	
सां	ग	-	रें	ग	-	-	ग	सा	रें	-	सा	रें	-	-	रें
उ	दे	S	नि	शा	S	S	ण	ब	जे	S	वि	पा	S	S	ण

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	-	सा	सा	सा	सा	सां	-	नि	सा	नि	ध	प	ध	सा	-
मा	S	न	र	हि	त	जी	S	ध	न	को	S	धि	क	है	S

×		२		०		३		×		२		०		३	
ग	म	ग	म	प	-	प	ध	नि	सा	नि	ध	प	-	-	-
भू	S	ष	न	जा	S	ना	S	इ	से	S	क	ओं	S	S	S

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	म	ग	म	ग	म	प	ध	नि	सां	नि	ध	प	–	–	–
च	लो	ऽ	च	लें	ऽ	ह	म	व	हीं	ऽ	स	भी	–	–	–

नहीं समाप्तः—से ' नव प्रयोजनका उद्देशतक स्थाई की तरह

अन्तरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
म	–	म	म	–	म	म	–	ग	म	प	–	ग	म	प	ध
सा	ऽ	ज	व	ऽ	मैं	गे	ऽ	य	ह	उ	ऽ	स	म	त	तु

×		२		०		३		×		२		०		३	
म	–	प	प	ध	ध	नि	–	प	–	ध	–	प	ध	नि	सां
को	ऽ	म	ल	क	र	में	ऽ	लें	ऽ	गी	ऽ	श	र	ध	नु

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	ग	रें	–	नि	–	नि	नि	ध	प	म	ग	ग	म	प	ध
च	प	ला	ऽ	तु	ऽ	ल्य	च	म	क	क	र	ज	ल	ध	र

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	नि	–	ध	–	प	म	–	ग	म	ग	रे	सा	रे	सा	सा
च	का	ऽ	चौं	ऽ	ध	ऑ	ऽ	खो	ऽ	में	ऽ	भ	र	भ	र

×		२		०		३		×		२		०		३	
ग	म	–	ग	प	–	प	–	ग	प	ध	नि	ध	–	–	ध
पु	न	ऽ	क	रें	ऽ	गी	ऽ	ग	ट	अ	व	रो	ऽ	ऽ	ध

×			२		३		×			२		३		
नि	रिं	ग	मं	ग	रिं	सां	सा	सा	रिं	सा	रिं	सां	सां	
हो	ऽ	प	अ	प	नो	ऽ	म	न	ध	रो	ऽ	फि	र	

×			२		३		×			२		३	
नि	—	नि	ध	—	मं	ध	नि	रिं	सां	नि	ध	म	ध
से	ऽ	म	उ	ऽ	व्य	स	वे	ऽ	य	नो	ऽ	[illegible]	म

(साखी)

ग	—	ग	—	मं	—	मं	ध	—	सा	रिं	नि	सा	—
ध	ऽ	तें	ऽ	मा	ऽ	न	आ	ऽ	था	ऽ	र	हि	ऽ
—	—	—	—	नी	—	नी	—	ध	—	ध	—	ध	म
त	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	चा	ऽ	हो	ऽ	मि	ऽ	ट	जा
ध	नि	सा	नि	नि	ध	—	ध	नि	सा	ग	म	—	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	तो	ऽ	मा	ऽ	ईं	ऽ	मा
—	रिं	—	सा	सा	—	—	नि	नि	—	ध	मं	ध	नि
ऽ	ईं	ऽ	मि	लो	ऽ	ऽ	क	रो	ऽ	प्र	प्रे	ऽ	म

रिं	—	सां	—	—	—
स	ऽ	[illegible]	[illegible]	ऽ	य

नोट—शेष सब अन्तरे और साखियाँ ऊपरकी तरहसे बजते हैं।

पेज १०६ पर देखो।

राग-सोहनी, गजलकी धुन, तालरूपक

स्थायी

सा	सा
तु	म

×			२		३		×			२		३	
ग	–	ग	मे	मे	मे	ध	सां	–	सां	सा	सां	सा	रिं
शो	ऽ	क	फा	ऽ	है	ऽ	को	ऽ	क	रो	ऽ	फि	र

×			२		३		×			२		३	
नी	–	नी	ध	–	मे	ध	नि	रिं	सां	नि	ध	मे	ग
सै	ऽ	म	नु	ऽ	प्य	स	वै	ऽ	ब	जो	ऽ	तु	म

अन्तरा

ग	ग
है	–

×			२		३		×			२		३	
ग	–	ग	मे	–	मे	ध	सा	–	सां	सां	रिं	सां	सां
को	ऽ	प	औ	ऽ	र	न	पे	ऽ	यू	था	–	जो	ऽ

×			२		३		×			२		३	
सां	–	सा	सा	रीं	नी	सा	नि	–	ध	नि	–	मे	ग
आ	ऽ	प	अ	प	ने	ऽ	[illegible]	ऽ	त्रु	हो	ऽ	है	[illegible]

१		०		२		०		३		४	
सा	सां	रीं	–	ग	रीं	सा	सां	नि	नि	ध	प
क	र	ता	ऽ	है	ऽ	त	व	वि	धा	ऽ	न

[illegible]		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	प	प	प	नि	नि	ध	प	ध	प
गा	[illegible]	व	त	त	व	गु	ण	सु	जा	ऽ	न

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	नि	नि	म	प	प	ग	प	री	–	सा
पा	ऽ	व	त	सु	ख	स,	ब	ज	हा	–	न

राग-पीलु समाज, त्रिताल, मात्रा १६

बन बंसी बजावत बनमाली ॥
देह गेहको नेह न राखत,
नीर छीरकी सुधि बिसरावत,
बंसी सुनि बनको ही धावत,
है व्याकुल सब ब्रजनारी ॥ ब० ॥

चहक उठी कुंजनमें चिरियाँ,
लागी चलन वायु यहि बिरियाँ,
चटक उठीं फूलनकी कलियाँ,
खूब बनी है मतवारी ॥ ब० ॥

चन्द्रकिरन जमनामें गेरत,
राधा राधा बंसी टेरत,
राधा मोचक इत उत हेरत,
कोयल कूक रही डारी ॥ ब० ॥

राग-यमन, एकताल (मध्यलय)

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सा	सा	नि	नि	मं	प	प	प	मं	ग	–	ग
तू	ऽ	है	–	क	रु	णा	ऽ	नि	धा	ऽ	न

×		०		२		०		३		४	
ग	–	ग	री	ग	प	री	ग	री	नि	रि	सा
ते	–	री	–	म	हि	मा	–	म	हा	ऽ	न

×		०		२		०		३		४	
सा	सा	रें	रें	ग	ग	मं	मं	प	प	ध	ध
मु	नि	ग	ण	त	व	क	र	त	ध्या	ऽ	न

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	रें	रें	गं	रें	सा	रें	सां	नि	ध	प
भ	ऽ	कों	ऽ	का	ऽ	प्रा	ऽ	ण	क्षा	ऽ	न

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	–	ध	प	सां	–	सा	सां	–	सा
दी	ऽ	न	न	को	ऽ	त्रा	ऽ	ण	दा	ऽ	न

०				३				×				२			
नी	सा	रे	नी़	सा	सा	ग	ग	ग	म	प	म	ग	रे	नी	सा
च	ऽ	द्र	कि	र	ण	ज	मु	ना	ऽ	में	ऽ	ने	ऽ	र	त
ग	–	ग	–	म	–	म	–	ग	म	प	म	ग	–	नी	सा
रा	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	धा	ऽ	ब	ऽ	सी	ऽ	टे	ऽ	र	त
सारे	ग	रेग	म	गम	प	मप	धप	ग	म	ध	प	ग	–	नी	सा
राऽ	ऽ	धाऽ	ऽ	राऽ	ऽ	धाऽ	ऽऽ	ब	ऽ	सी	ऽ	टे	ऽ	र	त
नी	–	नी	–	ध	प	ग	सा	ग	म	ध	प	ग	–	नी	सा
रा	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	धा	ऽ	ब	ऽ	सी	ऽ	टे	ऽ	र	त
नी	–	नी	–	सा	नी	ध	प	ग	म	ध	प	ग	–	नी	सा
रा	ऽ	धा	ऽ	रा	ऽ	धा	ऽ	ब	ऽ	सी	ऽ	टे	ऽ	र	त
प	–	प	–	प	ध	प	ध	म	प	ग	म	गम	प	प	प
रा	ऽ	धा	ऽ	आँ	ऽ	च	क	इ	त	उ	त	हेऽ	ऽ	र	त
नी	ध	नी	ध	प	म	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	–	नी	सा
है	ऽ	के	ऽ	सो	ऽ	ब	ऽ	सी	ऽ	धा	ऽ	री	ऽ	ब	

दे व्याकुल निकसीं सब वामा,
तजि तजिके निज घरको कामा,
देखन चलीं चतुर घनश्यामा,
है कैसो बसीधारी ॥

स्थाई

नी	सा
ब	न

०				३				×				२			
प	–	प	प	मप	ध	प	म	ग	रे	म	ग	रे	–	–	–
ब	ऽ	सी	ब	जाऽ	ऽ	ब	त	ब	न	सा	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

नी	सा	रे	नी	सा	नी	सा	–	ग	म	प	म	ग	रे	नी	सा
दे	ऽ	ह	गे	ऽ	ह	थो	ऽ	नै	ऽ	ह	न	रा	ऽ	ख	त

०				३				×				२			
ग	–	–	ग	म	ग	म	–	ग	म	प	म	ग	–	नी	सा
नी	ऽ	ऽ	र	छी	र	की	ऽ	सु	धि	बि	स	रा	ऽ	ब	त

०				३				×				२			
प	–	प	प	प	ध	प	ध	म	प	ग	म	गम	प	प	प
ब	ऽ	सी	सु	नी	ऽ	ब	न	को	ऽ	ही	ऽ	धाऽ	ऽ	ब	त

०				३				×				२			
नी	ध	नी	ध	प	म	नी	ध	प	म	ग	रे	सा	–	नी	सा
है	ऽ	व्या	ऽ	कु	ल	स	ब	गृ	ज	ना	ऽ	री	ऽ	ब	न

राग-भैरवी, ताल त्रिताल, मात्रा १६

फिर पावन करिये इस घरको
जब आवेंगे आप यहाँ पर
मन प्रमुदित होवेंगे फिरसे

अंतरा

जब आवेंगे आप अतिथी
तन मन धनसे सेवा करिहैं
सदा उदार आप सजन हैं

आरोह—सा रे ग म प ध नी सा
अवरोह—सा नी ध प म ग रे सा

स्थाई

०				३				×				२			
ग	म	प	-	ध	प	म	प	ग	-	सा	री	सा	नि	सा	-
फि	र	पा	ऽ	ब	न	क	रि	ये	ऽ	इ	स	घ	र	को	ऽ

०				३				×				२			
री	सा	ध	-	नी	-	सा	-	ग	-	प	म	री	सा	सा	-
ज	ब	आ	ऽ	वें	ऽ	गे	ऽ	आ	-	प	य	हाँ	ऽ	प	र

०				३				×				२			
नी	सा	ग	म	प	प	प	-	प	धनी	सा	नीरा	ध	प	ग	म
म	न	प्र	मु	दि	त	हो	ऽ	वें	ऽऽ	ऽ	गेऽ	फि	र	से	ऽ

स्थाई

ग	रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	नि	सा	—	सा
मे	ऽ	रे	तो	गि	रि	ध	र	गो	पा	ऽ	ल
१			०			१			०		

ग	—	ग	ग	म	ग	सा	ग	सा	ग	म	प
दू	ऽ	स	रा	ऽ	न	को	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
१			०			१			०		

अंतरा

सा	—	सा	—	ग	म	प	—	प	प	प	प
जा	ऽ	के	ऽ	सि	र	मो	ऽ	र	मु	कु	ट
१			०			१			०		

ग	—	ग	म	पध	पम	रे	ग	रे	नि	सा	—
मे	ऽ	रो	ऽ	पऽ	तिऽ	सो	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ
१			०			१			०		

प	—	प	मप	ध	प	म	ग	—	म	ग	ग
मा	ऽ	स	चऽ	ऽ	क	ग	दा	ऽ	प	ऽ	म
१			०			१			०		

सा	ग	ग	म	ग	ग	सा	ग	सा	ग	म	प
कं	ऽ	ठ	मा	ऽ	ल	सो	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
१			०			१			०		

बाकी लाईनें अंतरेकी तरह

ग – ग ग | ग – मं मं | ग रिं रिं रिं | रिं रिं सा सा
आ ऽ र त | नौ ऽ का ऽ | मैं व र प | ही ऽ है ऽ

नि ध मं ग | मं ध नि सा | रिं – – सा | नि सा नि ध
उ स पा ऽ | ध्या ऽ न प | रो ऽ ऽ ऽ | है ऽ ह रि

ग – ग ग | मं ध नि सा | रिं रिं सां रिं | नि नि सा सां
झू ऽ र यु | टि ल के ऽ | व ट म त | वा ऽ रे ऽ

नि नि नि – | नि नि ध ध | मं ध नि सां | ध नि ध –
ल ग ने ऽ | दे ऽ ते ऽ | न हीं ऽ कि | ना ऽ रे ऽ

मं मं ग ग | म मं ध ध | म ग मं ग | रि – सा –
क ऽ र्णे धा | ऽ र ब न | श्री ऽ प्र ह | मा ऽ रे ऽ

ग – ग – | मं ध नि सां | रिं – – सा | नि सा नि ध
सा ऽ रे ऽ | दु ऽ ख ह | रो ऽ ऽ ऽ | है ऽ ह रि

राग-भैरवी ताल त्रिताल

स्थाई

२ | ° | ३ | ×
| नि सा ग म | प ध प म | रि ग सा रि | सा – –
| कि न ते रो | गो ऽ वि द | ना ऽ म ध | यों ऽ °

अंतरा

०				३				×				२			
ध	ध	ध	–	ध	म	ध	नी	सा	–	सा	सां	रीं	–	सा	–
ज	ब	आ	ऽ	वें	ऽ	बे	ऽ	आ	ऽ	प	स	ति	ऽ	थी	ऽ
०				३				×				२			
नी	नी	नी	नी	सा	सा	सांरीं	ग	सा	री	सा	–	प	ध	प	–
स	न	म	न	ध	न	सेऽ	ऽ	से	ऽ	वा	ऽ	क	रि	हैं	ऽ
०				३				×				२			
ग	प	–	प	प	–	प	–	पध	–	नी	सां	ध	प	ग	–
स	दा	ऽ	उ	दा	ऽ	र	ऽ	आ	ऽ	प	स	ज	न	हैं	ऽ
०				३				×				२			

राग-सोहनी, ताल तिताल

हे हरि अब न विलब करो ।
भारत नौका भॅवर पडी है
उसकी ध्यान धरो ॥ हेहरि ॥
क्रूर कुटिल केवट मतवारे,
लगने देते नहीं किनारे
कर्णधवर बन शीघ्र हमारें
सारे दुख हरो । हे हरि० ॥

स्थायी

नि	सा	नि	ध	म	ग	ग	ग	मं	ध	नि	सा	रिं	–	–	सां
हे	ऽ	ह	रि	अ	ब	न	वि	ल	ऽ	ब	क	रो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

२				०				३				×			
प	प	ध	म	प	ध	प	प	प	प	ध	ध	ध	प	ग	म
ले	ऽ	न	दे	ऽ	न	के	ऽ	तु	म	हि	त	का	ऽ	री	ऽ

२				०											
नि	सा	प	प	ध	प	ग	म	गम	धनि	सांग	रिंसां	नीध	पम	गरि	साऽ
मों	ऽ	से	ऽ	क	छु	न	स	यों	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

नोट—दूसरे अन्तरे ऊपरकी तरह से बजते हैं। पूरा गायन पेज १२२ में देखो

राग-भैरवी ताल त्रिताल

०				३				×				२			
नी	नी	सा	सा	ग	–	म	म	प	प	ध	म	प	–	ध	प
दू	ऽ	द्य	ऽ	है	ऽ	तु	या	स्व	ऽ	प्र	ह	मा	ऽ	रा	ऽ

०				३				×				२			
ग	–	प	प	प	–	नी	–	प	ध	प	म	ग	रि	सा	–
ता	ऽ	र	थी	ऽ	न	के	ऽ	दृ	ऽ	टे	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ

०				३				×				२			
ग	–	प	–	प	ध	नी	सा	प	ध	प	म	प	म	प	म
गा	ऽ	वें	ऽ	क्या	ऽ	मे	ऽ	वा	ऽ	ह	दे	ऽ	श	के	ऽ

०				३				×				२			
ग	–	रि	सा	सा	रि	ग	म	ग	म	ग	रि	सा	नि	सा	–
सा	ऽ	ग	दे	ऽ	ख	लो	ऽ	फू	ऽ	टे	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ

नोट—दूसरी लाइनें इसी तरह बजेंगी। पूरागायन पेज ९४ में देखो।

...ई भी और उसके हाथों कैद हो जाने पर भी उससे लग्न नहीं करती है और उसको अपने पिताके साथ युद्ध करनेके लिए अपनी मौन भाषाद्वारा, अपनी उदासीनता द्वारा विवश करती है। यही ही अद्भुत कथा है।

(७) त्याग—इसमें बताया गया है कि, स्त्री अपने पतिको प्रसन्न करनेके लिए कर्तव्य समझकर—अपने प्राण तक दे सकती है।

अनेक बहुरंगी और एक रंगी चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य सादीका १॥) सुनहरी अक्षरोंवाली बाइंडिंगके २) रु.

सुप्रसिद्ध विद्वान हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालयके मालिक श्रीयुत नाथूरामजी प्रेमी लिखते हैं—

"गृहिणी-गौरवकी सातों गल्प बड़ी ही सुंदर और शिक्षाप्रद है। स्त्रीहृदयकी कोमलता, कमनीयता और त्यागशीलताके मनोमुग्धकर चित्र चित्रित किये गये हैं। इन्हें देखकर आँखें जुड़ा जाती हैं और हृदय पवित्र प्रेमकी भावनासे भर जाता है। प्रायः प्रत्येक कहानीमें ऐसे प्रसंग आये हैं जिन्हें पढ़कर आँसुओंका रोकना असंभव हो जाता है। पढ़ी लिखी बहिन-बेटियोंको देनेके लिए इससे अच्छी भेट और क्या होगी? जो स्त्रियां पढ नहीं सकती हैं उन्हें पढकर ये कहानियाँ सुनानी चाहिए। इससे उनके हृदय पवित्र और उन्नत बनेंगे। पवित्र कहानियोंका ऐसा सुंदर संग्रह प्रकाशित करके आपने स्त्रियोपयोगी साहित्यके मनोरंजक अंशकी बहुत अच्छी पूर्ति की है।"

गृहिणीगौरव।

(ले०-श्रीयुत कृष्णलाल वर्मा।)

इसमें नारी जीवनको गौरवान्वित करने वाली सात गल्पें हैं

(१) गृहिणीगौरव—इसमें बताया गया है कि, पतिकी वीरता, पतिकी मान्यता और पतिके सौंदर्य ही स्त्रीका गौरव है। स्त्रीका गौरव इसमें नहीं है कि वह साहूकारकी या राजाकी पुत्री होनेसे अपने आपको बड़ी माने और पतिको तुच्छ दृष्टिसे देखे।

(२) प्राणविनिमय—इसमें बताया गया है कि, गरीबीमें भी पतिपत्नी कैसे सुखसे रह सकते हैं। गरीब स्त्री अपने पातिप्रेमके प्रभावसे राजपुत्र तकको मजा दिखा सकती है और एक नारीको विधवा होनेसे बचानेमें अपने प्राण दे सकती है। इसका कारण क्या है कि, पढ़ते पढ़ते आँसू रोके नहीं रुकते।

(३) सेवाका अधिकार—इसमें बताया गया है कि, पुरुष किस तरह एक नारी मन पालन कर सकता है। स्त्री किस तरह विमुख स्वामीको भी सेवा करके अपनी ओर आकर्षित कर सकती है। पतिकी अमानीती होनेपर भी किस तरह पतिकी निंदा करनेवालोंका मीठा तिरस्कार करती है और अपने आचरण द्वारा यह बताती है कि,

एकै धर्म एक व्रत नेमा, मन वचकाय पतिपद प्रेमा।

(४) वीणा—इसमें बताया गया है कि, आज कलके पढ़े लिखे पुरुष भी कैसे धनलोलुप होते हैं। एक सुशिक्षिता कन्या किस भांति अपने पिताको कर्जकी बदनामीसे बचानेके लिए अपना सब कुछ देकर आप दाने- दानेकी मोहताज हो जाती है। किसतरह अपने गुणोंसे फिरसे घरको सुव्यवस्थित करके सुखी होती है।

(५) सतीतीर्थ—इसमें बताया गया है कि एक सरल कृषक बालिका किस भांति एक डाकूकोभी सन्मार्ग पर ला सकती है।

(६) अरुणा—इसमें बताया गया है कि एक स्त्री अपने कर्तव्यके लिए अपने पिताकी मान मर्यादाको बचानेके लिए, एक पुरुषसे प्रेम करती

सर्वोदय।

लेखक—म० गाँधी।

कानपुरकी 'प्रभा' लिखती है —"अर्थशास्त्र और सार्वजनिक सुखके सबधमें सुविख्यात अग्रजी लेखक स्वर्गीय जॉन रस्किनके विचार अत्यत सुदर और दिव्य हैं। इस पुस्तकमें वे ही विचार महात्मा गाँधीकी लेखनी द्वारा व्यक्त किये गये है। ×××××रोटीवाद और भौतिक सुखवादकी अति रोकनेके लिए, उनके कृष्णपक्षको जाननेके लिए व उनके मादक और पतनकारी फदमे बचनेके लिए सर्वोदयके विचार विशेष महत्त्वके हैं।" मू० चार आने।

गाँधीजीका बयान या सत्याग्रह मीमांसा।

आवरण पृष्ठपर महात्माजीका फोटो। मू० ॥) छपाई सफाई सुदर।

प्रभाने लिखा है —"पाठकोंको मालूम होगा कि, पजाब-हत्याकाड सबधी जॉच करनेके लिए हटर कमेटी नामकी एक कमेटी बैठी थी। उस कमेटीमें महात्माजीने लिखित इकरार दिया था, वही इस पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित किया गया है। गाँधीजीका यह बयान एक अत्यत महत्वपूर्ण वक्तव्य है। इसीमें महात्माजीने अपने सिद्धान्तोंका मडन और सत्याग्रहपर किये जानेवाले आक्षेपोंका खडन अपनी स्वाभाविक योग्यता और असाधारण उत्तमतासे किया है। प्रकाशकोंने इस बयानको हिन्दीमें प्रकाशितकर हिन्दीकी अच्छी सेवा की है।"

तीन रत्न।

ले०—महात्मा गाँधी।

इसमें तीन कथाएँ है। (१) मूर्खराज (२) मनुष्य कितनी जमीनका मालिक हो सकता है? (३) जीवनडोर। ससारके प्रसिद्ध ... थाएँ लिखी हैं। उन्हींमेंसे जो कथाएँ सर्वोत्कृष्ट

मूल पुस्तकके कठिन उर्दू और अप्रचलित हिन्दी शब्दोंके अर्थ पादटीकामें दिये हैं।

मौलाना साहबने इस कवितामें विशेषकर हिन्दु विधवाओंके दुखोंका वर्णन किया है। मनाजातका विषय करुणा प्रधान है। आरंभके १४ पृष्ठोंमें विधवा शोकभरे शब्दोंमें ईश्वरकी लीलाका वर्णन करती है, फिर शेष अंशमें वह अपनी रामकहानी सुनाती है।

'भाव और रसकी प्रधानताके सिवा, इस कवितामें अलकार, प्रकृति वर्णन, मनोहर पदयोजना आदि अनेक चमत्कार हैं, । जिनका आनद पुस्तकको आद्योपान्त पढ़नेहीसे प्राप्त हो सकता है। भाव और भाषा दोनोंके विचारसे 'विधवाप्रार्थना' एक आदर्श-रचनाका आदर्श है। मू० पॉच आने।

"कविता बडी ही सरस, स्वाभाविक और हृदयद्राविणी है। पुस्तकको पढ़कर कठोर हृदय भी विधवाओंकी दीन दशाओंपर बिना दो ऑसू बहाये नहीं रह सकता। पुस्तक आदिसे अत तक प्रसाद गुणसे परिप्लावित है। प्रत्येक सहृदय पाठकको एक बार यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।"

—प्रभा (कानपुर)

जैनरामायण।

(अ०—श्रीयुत कृष्णलाल वर्मा।)

इसमें राम, लक्ष्मण, सीता और रावणके मुख्यतासे और हनुमान, अजना-सुन्दरी, पवनजय तथा बालीके गौणरूपसे चरित्र हैं। प्रसगवश और भी कई कथाएँ इसमें आगई हैं। वर्णन करनेका ढग बडा ही सुन्दर है। हिन्दु रामायणसे यह बिलकुल भिन्न है। इसके पढ़नेसे पाठकोंको यह भी ज्ञात हो जाता है, कि [illegible]द्रजीकी ओरसे युद्ध करनेवाले 'वानर' पशु नहीं थे बल्कि वे विद्याधर थे। 'वानर' एक वशका नाम था। इसी तरह रावण आदि 'राक्षस—दैत्य नहीं थे बल्कि 'राक्षस' एक वशका नाम था। जैनाचार्य, श्रीहेमचद्राचार्य रचित त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्रके सातवें पर्वका यह अनुवाद है। छपाई सफाई बढ़िया। पक्की बाइडिंग। ऊपर सुनहरी अक्षर मू० ४) रु